

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषतः जयपुर प्रान्त में दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात प्रवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किम किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या में कौन कौन से शास्त्र वेराजमान हैं, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य खेहरा पड़ा है वह अपने उद्धार की बात देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं प्रवन्ध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रवन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रवन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय में काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की रोज में कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त प० अखयराज कृत 'चतुर्वेश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरु होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी आरंभ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रवन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरु कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी वाचू जुगलकिशोरजी साहव मुख्तार देववद वालो से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी में लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा—ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दूरजा

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषतः जयपुर प्रान्त में दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञान अवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किम किम मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी सख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान हैं, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की वाट देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरम्भ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति सग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी है जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय में काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की रोज में कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त ५० अक्षयराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी आरम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एम० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व संपादक अग्रजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवा वाचू जुगलकिशोरजी साहव मुख्तार देववंद वालो से उनका श्री धीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी में लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा-ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानने वाले भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का परामर्श ही नहीं

प्रस्तावना

प्राचीन काल में मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पत्रों (ताम्रपत्र व ताडपत्र) तथा कागजों पर हाथ से लिख लिख कर ही अपने साहित्य एवं ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत में सैकड़ों एवं हजारों विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगों को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के उस युग में शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एवं गाँव में मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन-पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यों ने दान के चार भेदों में शास्त्रदान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन में उतारा। जिस तरह मन्दिरों को बनवाने एवं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाने में पुण्यलाभ घतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारों को भेट करने में भी कम पुण्यलाभ नहीं घतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं में रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यों के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमें प्रत्येक मन्दिर में शास्त्रभण्डार के दर्शन होते हैं अन्यथा हजारों वर्षों से राज्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा में नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यों के इस उपदेश को अजरश पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुत भाग इस पुण्य कार्य में भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने में साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रों की प्रतिलिपियाँ करवाकर उसका अत्याधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीने साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकांश अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एवं भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तियाँ इस समय में दी गई हैं। एक तो वे जो स्वयं कवि अथवा ग्रन्थकर्ता द्वारा लिखी गयी हैं तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी हैं। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहाँ के शासक का परिचय आदि लिखे हुये होते हैं। लेखक प्रशस्ति में सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहाँ के शासक का नाम, उसके पञ्चान भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, उसके पश्चात् लिपि करवाने वाले का विम्वृत वंश परिचय, लिपि किस निमित्त से करायी गयी और अन्त में लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति में निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्ता जैव साधु अथवा भट्टारक होते हैं तो वे अपना वंश परिचय नहीं लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते हैं उनका ही परिचय लिखते हैं। संस्कृत ग्रन्थों की अधिकांश ग्रन्थ प्रशस्तियाँ इसी

सकता है। अब तीनों भागों का मंदिप्र परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड़ कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सरुलकीर्ति, शुभचन्द्र, सरुलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोनकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आवार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने माधु अवस्था धारण करने के पश्चात् ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी माधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एवं कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

प्राकृत अपभ्रंश- विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्रायः सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदत्त, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द्र, हरिपेण, अमरकीर्ति, यश कीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रङ्ग, माणिक्यकराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इसके पश्चात् भी रङ्ग, यश कीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्यकराज ने १६वीं शताब्दी तक इस भाषा में कुछ साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्रायः सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उन समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तियां प्रायः सभी विपद एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विगद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे इसलिये उन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी ग्रन्थ पर परिचय लिखा है। आमेरशाह भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे प्यारे हैं। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य

है। संग्रह में अधिकांश प्रशस्तियां एवं लेखक-प्रशस्तियां आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय में होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती हैं। यद्यपि इनमें भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है, उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्ति के सभी पट्टधर जिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अनिरीक्त सेनगण, पुंकरगण एवं विद्यागण में होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

जैन समाज की प्रमुख जातियां—

उत्तर भारत में खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रचा एवं वृद्धि में विशेष हाथ रहा है। राजस्थान में प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहां के साहित्य निर्माण एवं प्रचार का अधिकांश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों में व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल में अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीवर ने १२वीं शताब्दी की रचना में जिस नट्टल साह की प्रशंसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पञ्चाल, सिंधु, गौड़ आदि सभी देशों में व्याप्त था। महापंडित रडधू ने अपनी अधिकांश रचनायें इसी जाति में उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनों जातियों के अनिरीक्त बचेरवाल, श्रीवाल, पुरवाल, लमेचू, जैमवाल आदि जातियों में उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेंट दिया हुआ साहित्य भी काफी सरया में मिलता है। इसी प्रकार इक्वाकू, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वर्ग के पद्म कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-संग्रह में आये हुये आचार्य-लेखकों एवं कवियों का अति सक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जा रहा है—

संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सुधिरयात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यों में प्रायः अग्रगण्य हैं। आरके जीवन के सम्बन्ध में अनेक कहानियां प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल में आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे स्पष्ट एवं उत्कर्षमय बना दिया। आपने समूह में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी राजमार्गिक, अष्टजती, न्यायधिनन्धन्यालकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम मुवोधिक टीका है।

९. चन्द्रकीर्ति—काष्ठास्य मे होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा मे ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पाप रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१०. चारित्रसुन्दरगणि—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र मूरि को स्मरण किया है उनके परचान होने वाले शिष्यों का उल्लेख करत हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. जिनसेनाचार्य—हरिवंश पुराण के कर्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट म्ब के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम कीर्त्तिपेण एव दादा गुरु का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर मे गके संवत् ७-५ मे समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों मे सर्वोपरि है। इसका प्रन्थ परिमाण चारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गों मे समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वें सर्ग मे भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्पर का उल्लेख किया है।

१२. ज्ञानकीर्ति—यशोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्ति यति वाडिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नानू के आप्रह से की थी। नानू उम समय चगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्भेद शिवर की यात्रा पर गये तो वहा इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि म्ब चगाल प्रान्त के अकच्छरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने प्रन्थ को सवत् १६५६ मे समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेट किया था।

१३. ज्ञानभूषण—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रशिष्य एव मुवनकीर्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण मम्कत, हिन्दी और गुजराती के अन्धे विद्वान थे। इनका मूल निवास म्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक घने के पश्चात् अहीर, वागड, तौलय, तैलग द्राविड, एव महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तों और गांयों मे ही विहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत मे भी घूम कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञान-तरंगिनी सुन्दर एव सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एव कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा मे भी आपकी कई रचनायें मिलती हैं इनमे आदीश्वरभाष्य उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल सवत् १५६० है।

१४. धर्मकीर्ति—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) मे की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेकप्रशस्तियों मे हुआ है। इन्होंने उक्त प्रन्थ को संवत् १६६९ मे समाप्त किया था। सवत् १६७० की प्रति मे लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक घने थे।

१५. आचार्य नरेन्द्रसेन—इन्होंने सिद्धान्तसारमंथ की रचना की है। आप श्रीमन्ने के प्रशिष्य एव गुणसेन के शिष्य थे।

काव्य भी है जिसकी पद्य-सख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. विवेकनन्दि— इनका जन्म घघेरवाल जाति में हुआ था । इनके नाना श्री नारायण तथा माना निजोणी थीं । त्रिभंगीसार की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा में लिखी उसके पश्चात् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत में टीका का निर्माण किया था ।

२४. ब्रह्म कामराज— इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की । कवि ने सकलकीर्ति की भट्टारक परम्परा में होने वाले भट्टारकों की अन्ध्री नामावली दी है । प्रशान्ति में इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है । पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर में स्थापित किया ।

२५. ब्रह्मजिनदास— भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे । अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनाये लिखी हैं । संस्कृत में इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की हैं जिनमें हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जम्भूदामी चरित्र, हनुमन्चरित्र, वनकथा कोष आदि उल्लेखनीय हैं । हिन्दी में आदिनाथपुराण, श्रेणिक चरित्र, सम्प्रवृत्तराम, यशोवरास, धनपालरास, वनकथाकोष आदि रचनाये उल्लेखनीय हैं । इन पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव झलकता है ।

२६. ब्रह्मनेमिदत्त— ये अग्रवाल जाति के थे । गोयल उनका गोत्र था । मालव देश में आशानगर के रहने वाले थे । भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे । सवत् १५८५ में इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शान्तिनाम के अनुरोध से रचना की थी । इसके अतिरिक्त मुद्गर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है । मुद्गर्शनचरित्र में इन्होंने ग्रंथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री मिहानन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मालूम पड़ता है कि मुद्गर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी ।

२७. ब्रह्मरायमल्ल— ब्रह्म जाति में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम मतीय एवं माता का नाम चपा था । समुद्र तट पर स्थित प्रीवापुर में इन्होंने भक्तार स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था । सवत् १६६७ में रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है ।

२८. ब्रह्मजित— सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे । आपका जन्म गोलशगर जाति में हुआ था । इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था । हनुमन्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है ।

२९. भट्टारक सोमसेन— ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे । इन्होंने पद्मपुराण की रचना चराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी । उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक सवत् १६५६ में निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है । लेकिन इसी की एक लेखक प्रशान्ति में शक सवत् १६९६ दे रखा है ।

३०. सकलकीर्ति— १५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं माहित्य सेवी थे । इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया था । इन्होंने अपने 'नामको भट्टारक

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयम्भु था। स्वयम्भु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयम्भु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की - पद्मचरित, रिट्टोमिचरिउ या हरिवगपुराण, पंचमिचरिउ। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयम्भु की रचनायें सबसे प्राचीन हैं। रचनायें साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि हरिषेणार्थ के पीछे हुए हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति -- माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। सन् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। इसमें १८ सधिया हैं। संवत् १४६६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत -- अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के प्याश्रयदाता महामात्य भरत और नल्ल थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (द्वितीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविमुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पद्यियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनायें मिलती हैं। महापुराण के दो खंड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खण्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण -- इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले सन् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड़ देश में श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एवं माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मंगलाचरण में चतुर्मुख, स्वयम्भु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा में कुल ११ सधियाँ हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१. महाकवि वीर -- कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड बागड था। यह काण्डा संव की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कवियर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और श्रम की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जगन्नाथी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको सन् १०७६ मान शुक्रा दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेवाड़ में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ मित्रों जिनवती, श्रीमावती, लीलावती, और जयादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२. श्रीचन्द -- ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नरत्न की संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनि थे और उसी अवस्था में इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीगल्प के नामक ग्रन्थ

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश में उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगावपुर में लिखाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र में इन्होंने 'महाकवि' विशेषण से अपने आपको अलंकृत किया है।

४८—पं० लखू — इन्होंने संवत् १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लखण भी था। आपका सन्मान करने वालों में श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय है और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणितेवसेन — अपभ्रंश भाषा में इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश में वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि वृद्धनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा में इनके द्वारा रचित उरदेशमाला श्वेताम्बर और त्रिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती हैं इसमें ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या उससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कवि और श्रीपालचरित्र उन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं में नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थाश्रम में ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि समूह में १४१२ में लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध — उनके पिता का नाम रत्न था। कवि गुज्जर कुल के नर्य थे। प्रवृत्त चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अमृतचन्द्र) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल — ये १५ वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुबलिचरित्र तथा भविष्यदत्तचरित्र १५ वीं शताब्दी की रचनायें हैं। महाकवि ने बाहुबलिचरित्र काव्य के प्राग्भूत तथा अन्त में बहुत सुन्दर प्रशस्ति लिखी हैं। ये गुज्जर देश के रहने वाले थे। विजयपुर इनका निवास स्थान था। उस समय यहाँ बीमलदेव राजा राज्य करने थे। इनके पिता का नाम सुदेव तथा माता का नाम सुकदा था। ये पोतर जाति में उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली में बंगालपुर लिखा है -

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० में समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम कान्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनाये मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य के कवि एवं लेखक

६०—**किशनमिह** — कवि रामपुर के निवासी सगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये एण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड़ कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहाँ पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत् १७८४ में समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रवाहुचरित्र एवं रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई हैं।

६१—**कुमुदचन्द्र** — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाचिन्ती, ऋषभविवाहलो, भरतवाहुवल्लिखन्द आदि रचनाये लिखी हैं। भरतवाहुवल्लिखन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ में समाप्त किया था।

६२—**कुसुललाभगणि** — संवत् १६१६ में जैसलमेर में इन्होंने 'माधवानलचौषाई' को पूर्ण किया था। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—**खडगसेन**— ये लाहपुर (लाहोर) के निवासी थे। लाहोर में उस समय अच्छे विद्वान् रहते थे। इन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम लखण्ड था। उनके पूर्वज पहले नारनोल में रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल में लखण्ड के पास निज प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् १७१८ में पूर्ण किया था।

६४—**सुशालचन्द काला**— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने शिक्षा ग्रहण किया था। इनका निवास स्थान देहली था। लेकिन सांगानेर भी कभी आकर रहा करते थे। इनके पिता का नाम लखण्ड था। इनका पिता का नाम लखण्ड था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७००), पद्मपुराण, अनेक अन्य पुस्तकें लिखीं। अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

६५—**चतुर्भुज**— ये ग्वालियर के निवासी थे। इन्होंने 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके नाम के अन्तर्गत के इतने ग्रन्थों नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. **छीतर ठोलिया**— ये मोहम्मदगढ़ के निवासी थे। इन्होंने 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। उस समय जयपुर के राजा जयसिंग के दरबार में रहते थे।

६७. **जयसागर**— ये जयपुर के निवासी थे। इन्होंने 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था।

रचनायें लिखी हैं ।

७६—**देवेन्द्रकीर्ति**— ये भट्टारक सकलकीर्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक पद्मनन्दि के शिष्य थे । इन्होंने सूरत निवासी सद्यपति श्री जेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर में प्रद्युम्नप्रबन्ध को सन्वत् १७२२ में समाप्त किया था । प्रबन्ध की भाषा साधारण है ।

७७—**दिलाराम**— इनके पूर्वज खड्डेले के रहने वाले थे । वहाँ से वृद्धी नरेश के अनुरोध से वृद्धी आकर रहने लगे थे । इनका गोत्र पटणी था । कवि ने वृद्धी नगर तथा वहाँ के राजवंश की खूब प्रशंसा लिखी है । इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है । इन्होंने दिलारामविलास और आत्म-द्वादशी ये दो रचनायें लिखी हैं । कवि ने दिलारामविलास को सन्वत् १७६८ में समाप्त किया था । इनकी वर्णन शैली अच्छी है ।

७८—**धर्मदास**— कवि वारहसेनी (द्वादशश्रेणी) जाति में उत्पन्न हुये थे । इनके पूर्वज अपने प्रान्त में बहुत ही प्रतिष्ठित थे । इनके पिता का नाम राम और माता का नाम गिरी था । कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ में समाप्त किया था । रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है । इसमें जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है ।

७९. **नथमल विलाला**— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद में भरतपुर में और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे । इनके पिता के नाम गोभाचन्द्र था । इनने सिद्धान्तसारटीपक की रचना भरतपुर में सुय्यराम की सहायता से की थी और भक्तार की भाषा हीरापुर में १० लालचन्द्र जी की सहायता से की थी । इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवधरचरित्र, जन्मस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियाँ हैं ।

७९. **नरेन्द्रकीर्ति**— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे । इन्होंने नेनीद्वार चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है ।

८०. **नेमिचन्द्र**— ये भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य थे । आमेर इनका निवास स्थान था । सन्वत् १७९३ में इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी । कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है । कवि के पिता भाई का नाम भगदू था । इनका गोत्र खेड़ी था । कवि के स्वप्नचन्द्र, दू गरसी, लक्ष्मीदास, नौदराज आदि शिष्य थे ।

८१. **प्रभाचन्द्र मुनि**— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है । प्रभाचन्द्र ने तन्मार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है । इनके समय के मन्वन्व में विशेष ज्ञान नहीं हो सता है । तन्मार्थसूत्र भाग की एक प्रति सन्वत् १८०३ की लिखी हुई आज भी भट्टार में है ।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. राजमल्ल— उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत् १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. रूपचंद्र— कविवर रूपचंद्र पाडे रूपचन्द्रजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास ने गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एवं नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. लब्धरुचि— ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्द्रनृपरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ में समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति में भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरु परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. लोहट— इनका जन्म वधेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा थागे ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बड़े थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा में श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने संवत् १७२१ में समाप्त किया था।

९४. लक्ष्मीदास— पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पहिले ही ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र संवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. ब्रह्म रामल— ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखा था। इनमें हरसोर गढ़, राणधम्मोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध हैं। रामल्ल प्रान्त में आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीधर रास, हनुमंतकथा, प्रह्लादचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीबालराम भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय हैं। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान देने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. ब्रह्म सुलाल— ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगन्नाथ के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता में रह कर कविता किया करते थे। ध्रुपदकिया को इन्होंने संवत् १६५४ में समाप्त की थी। ग्वालियर पर पृथु समर्थ सलीम (जहागीर) का राज्य था।

शुद्धाशुद्धिपत्र

शुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ तथा पंक्ति
संसारभीमुखे	संसारभीमुखे	१ × ७
भयेंदु	भयेंदु	२ × ८
अपभ्रंश	अपभ्रंश	२ × १३
प्रार्थनाते	प्रार्थनाते	३ × ३०
प्रीणित	प्रीणित	३ × ४
चचद्रवः	चचद्रूच.	५ × १५
षष्ठ्यधिकाः	षष्ठ्यधिकाः	५ × ७
बह्न्यग्निः	बह्न्यग्नि	५ × २५
रास्त्रस्यो तत्पुराण	रास्त्रस्यै तत्पुराण	१३ × ६
मेघ	मेघ	१३ × ६
त्रिभगीसार	त्रिभगीसार	१५ × ३
सपौरजनः	सपौरजनः	२१ × २
वर्णना	वर्णना	२६ × २
सर्वकर्मारिसंतान	सर्वकर्मारिसंतान	४१ × २
प्रख्यातमनीषा	प्रख्यातमनीषा	४२ × २०
वीरनाथ	वीरनाथ	५६ × २१
अकञ्चरपुर	अकञ्चरपुर	५६ × २१
भव्यौघनिस्तारकः	भव्यौघनिस्तारकः	६० × २
घातद्रामा	घातद्रामा	६१ × २
जैसवालान्वये	जैसवालान्वये	६५ × १७
अभपद	अभपद	६७ × १
वृक्षजित	वृक्ष अजित	६९ × २०
तटीय	तटीय	७० × ४
भामिणि	भामिणि	८१ × ३
चवते	चवते	८१ × २
मुण द्राण इष्ट	मुणिद्राणइष्ट	१०७ × ५
गरयण	गरयण	१०७ × २०
पावसु	पावसु	११२ × १०

विषय—अनुक्रम

नाम	पृष्ठ संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
प्रकाशकीय वक्तव्य		प्रवचनम्भार प्राभृत वृत्ति (नम्ररत्नदेव)	३६
प्रस्तावना		पाण्डवपुराण (शुभचन्द्र)	३७
शुद्धाशुद्धिपत्र		पुण्याश्रवकथाकोश (रामचन्द्र)	३६
संस्कृत		पुराणसारसंग्रह (सकलकीर्ति)	४१
आदिपुराण (जिनसेनाचार्य)	१	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति (गुणसुन्दर)	४२
आदिनाथपुराण (सकलकीर्ति)	२	" (रायमल्ल)	४३
उत्तरपुराण सटीक (प्रभाचन्द्राचार्य)	३	" (अमरगभमूरि)	४३
उपदेशरत्नमाला (सकलभूषण)	४	भोजप्रबन्ध (रत्नमन्दिगणि)	४४
करकण्डु चरित्र (शुभचन्द्र)	५	महावीर पुराण (आशाधर)	४४
कर्मकाण्ड सटीक (ज्ञानभूषण)	६	महीपाल चरित्र (चारित्रमुन्दरगणि)	४५
चन्द्रप्रभचरित्र (शुभचन्द्र)	७	मुनिसुव्रत पुराण (कृष्णदाम)	४७
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रह (सुरेन्द्रकीर्ति)	८	मेघदूतावचूरि (सुमतिविजय)	४८
जम्बूस्वामीचरित्र (जिनदास)	९	मेघदूत टीका (मेघराज)	४९
जयकुमारपुराण (कामराज)	१०	शशोधर चरित्र (ज्ञानकीर्ति)	४९
जिनसहस्रनामसटीक (श्रुतसागर)	१३	" पद्मनाभ	४९
जीवंधर चरित्र (शुभचन्द्र)	१४	शशोधर चरित्र (सकलकीर्ति)	५३
ज्ञानसूर्योदय नाटक (वादिचन्द्रमूरि)	१६	योगचिंतामणि (हर्षकीर्ति)	५३
तत्त्वज्ञानतरंगिणी (ज्ञानभूषण)	१६	राजवास्तिक (अकलंकदेव)	५४
त्रिभङ्गीसार टीका (विवेकनन्दि)	१७	वरांगचरित्र (वर्द्धमान देव)	५४
दुर्गपदप्रबोध (बल्लभगणि)	१८	वर्द्धमानपुराण (सकलकीर्ति)	५६
धन्यकुमारचरित्र (सकलकीर्ति)	१९	धावकाचारसार (पद्मनन्दि मुनि)	५७
धर्मपरीक्षा (अमितिगति)	१९	श्रीपालचरित्र (नेमिदत्त)	५९
धर्मसंग्रह धावकाचार (मेधावी)	२१	श्रेणिकचरित्र (शुभचन्द्र)	६१
नेमिनाथपुराण (नेमिदत्त)	२६	सम्यक्त्व कौमुदी	६३
पद्मपुराण (सोमसेन)	२७	" गुणाकरमूरि	६४
" (चन्द्रकीर्ति)	३०	सारस्वत चन्द्रिका सटीक (चन्द्रकीर्ति)	६४
" (धर्मकीर्ति)	३१	सिद्धान्तम्भार संग्रह (नरेन्द्रमेन)	६६
प्रतिष्ठापाठ (आशाधर)	३३	सिन्दूर प्रकरण (सोमप्रभमूरि)	६६
प्रशुम्भचरित्र (सोमकीर्ति)	३४	मुदर्शन चरित्र (नेमिदत्त)	६६
		व्यामीगतिरशनुपेक्षा सटीक (शुभचन्द्र)	६८

नाम —	पृष्ठ सख्या	नाम	पृष्ठ सख्या
आदिनाथस्तुति	(कमलकीर्ति) २०३	धर्मगसो	(अचलकीर्ति) २२७
आदिपुराण	(ब्रजजिनदास) २०३	धर्मोपदेशश्रावकाचार	(धर्मदास) २२८
आदिस्यवारकथा	२०५	नयचक्रभाषा	(हेमराज) २३०
आदीश्वरफाग	(ज्ञानभूषण) २०५	नेमीश्वर गीत	(चतुर्दश) २३१
आराधना प्रतिबोध	(सकलकीर्ति) २०६	नेमीश्वरचंद्रायण	(नरेन्द्रकीर्ति) २३२
ऋषभविवाहलो	(कुमुदचन्द्र) २०६	पद्मनन्दिपंचविंशिका	(जगतराय) २३३
कर्णवृतपुराण	(विजयकीर्ति) २०७	पंचेन्द्रियबोल	(ठक्कुरसी) २३४
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	(बनारसीदास) २०७	पंचास्तिकायभाषा	(हेमराज) २३५
कथाकोश संग्रह	(ब्र० जिनदास) २०८	परमार्थदोहा	(हरचन्द्र) २३५
चतुर्दशी चौपई	(टीकम) २०८	प्रगुम्नप्रबंध	(देवेन्द्रकीर्ति) २३६
चरचासमाधान	(भूधरदास) २०९	प्रगुम्नसार	२३८
चन्द्रनृपरास	(लक्ष्मणरुचि) २०९	प्रगुम्नरासो	(रायमल्ल) २३९
चिद्विलास	(दीपचंद काशलीवाल) २११	पार्श्वनाथ चौपई	(महेंद्रकीर्ति) २३९
चेतन कर्म चरित्र	(भगवतीदास) २१२	पार्श्वनाथपुराण	(भूधरदास) २४०
चौदह गुणस्थानचर्चा	(अखयराज) २१२	पोसहरास	(ज्ञान भूषण) २४०
छदशिरोमणि	(शोभानाथ) २१२	बनारसी विलास	(बनारसीदास) २४१
जम्बूस्वामी चरित्र	(जिनदास) २१३	वाशिष्ठिया बोलरो मनन	(कान्तिसागर) २४२
जैन शतक	(भूधरदास) २१४	भरतवाहुगलि छद	(कुमुदचन्द्र) २४३
तत्त्वार्थसूत्रभाषा	(प्रभाचन्द्र) २१५	भविष्यदत्तकथा	(रायमल्ल) २४३
त्रिभुवननी वीनती	(गंगादास) २१६	भक्तमरस्तोत्रभाषा	(नयमलप्रिलाला) २४४
त्रिलोकदर्पण	(खडगसेन) २१६	सुनावती चरित्र	(समयमुन्दरगणेश) २४७
त्रेपनक्रिया	(प्रमद गुलाल) २१६	साधवानल चौपई	(कुमललालगणेश) २४७
त्रेपनक्रियाकोश	(किशनसिंह) २२०	मिथ्यादुःख	(जिनदास) २४८
त्रेपनक्रिया विनती	(कुमुदचन्द्र) २२१	यगोधर चरित्र	२४८
दशलक्षणव्रत कथा	(ज्ञानसागर) २२२	यशोधर चरित्र	(लक्ष्मीदास) २४९
दिलाराम विलास और		यशोधर चौपई	(लोट्ट) २५०
आत्मज्ञानदशी	(दिलाराम) २२२	योगीरामो	(बाटे जिनदास) २५०
धनपालरास	(ब्रज जिनदास) २२४	रत्नपानरामो	(नृपचंद) २५३
धर्मपरीक्षा	(मनोहरदास) २२३	राजुल पन्तीमी	(लालचंद जिनोनीवाल) २५५
धर्मस्वरूप	(ब्रज गुलाल) २२७	राष्ट्रभोजनकथा	(कान्तिसागर) २५५

आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के

ग्रन्थों का

प्रशस्ति-संग्रह

१. आदिपुराण ।

रचयिता श्री जिनसेनाचाय तथा गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । साठज १२×११। उल्ल ।
पत्र संख्या ३६६. लिपि संवत् १८०३ साध सुदी १५. प्रति मे ५२वें सगे तक आचार्ये जिनसेन का नाम दे
रखा है तथा अन्तिम पांच सगे मे आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है । प्रति गुन्दर तथा गपट्ट है ।

संगलाचरण—

श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीशुपे ।

धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुने ॥१॥

अन्तिम पाठ—

यो नाभैस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयभूरति,

व्यक्तशैवपरिग्रहोपि सुधिया स्वामीति यः शक्यते ।

मन्त्रोऽपि विनेयसस्वसमितेरेवोपमागीमतो,

निर्दानोपिदुर्घैरुपास्यचरणो यः सोऽनुवः शान्ते ॥

१९यापे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिपट्टिलक्षणमहापुराणसमष्टे प्रथमतीर्थेकरषष्ठ्यस्यपुराण-
प्रशिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपट्टर्वे समाप्तः ।

संवत् १८०३ वर्षे मास सुदी १५ सुदी श्री मूलसर्वे वल ध्यागणो मरुवतीगच्छं पृथुकाचाया-
स्वये भट्टारकश्रीपिशुभूपण तन्दिष्य अन्नमीविनयमारजी तन्दिष्य त्वा श्रीदर्पमागरी तन्मुकुधाना
पहित हरिकृष्णजी तन्दिष्य पं० जीवनरामजी तन्नुवर ९० हेमराजस्येवं पुनर्तं पटनर्ष पटिन
हरिकृष्णेन वत ।

प्रति न० ६. पत्र संख्या ५३७. साठज ११।१५ उल्ल ।

संवत् १८०७ वर्षे मास सुदि २ सोमनामरे श्रीमूलसर्वे वलान्कारगणे मरुवतीगच्छं पृथुकाचाया-
तुशान्चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्ददेवास्तद्वै भट्टारक पृथुकाचायास्तद्वै भट्टारक श्री पद्मानन्ददेवा

पक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पक्ति ३६-४२, अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रन्थ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७, लिपि मयन् १८२६,

मगलाचरण—

वंदे श्रीवृषभ देव दिव्यलक्षणलक्षितं ।
प्रणितप्राणिसद्वर्ग युगादिपुरुषोत्तमं ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंधतिलके चरनन्दिगच्छे
गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्ध ।

श्रीकुण्डकु दगुरुपट्टपर या

श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूजिताक्षः ॥१॥

तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रहारी ।

भट्टारकः श्रीसत्तादिकीर्तिः प्रसिद्धनामा जनिपुण्यमृत्तिः ॥२॥

भुवनकीर्त्तिगुरुतत उर्जितो, भुवनभासनशासनमदनः ।

अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो, विविधधर्मसमृद्धिसुदेशकः ॥३॥

श्रीज्ञानभूपापरिभूषिनागः, प्रसिद्धांडित्यकलानिधान ।

श्रीज्ञानभूपाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्गाविव भानुगसीन् ॥४॥

भट्टारकश्रीविजयादिभीर्त्तिस्तदीयपट्टे वरलब्धरीर्त्तिः ।

महामना मोक्षमुखाभिलाषी बभूव जैनावनिचान्यपादः ॥५॥

भट्टारकश्रीशुभचद्रसूरिस्तत्पट्टकेरुहांतम्परिम ।

त्रैविद्यप्रद्यः सफलप्रसिद्धो वादीभसिद्धो जयनाद्धरिष्या ॥६॥

पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः

गातोदांतः शीलगालीमुधीमान ।

जीवाल्लूरिः षो मुमत्यादिनीर्त्तिः

गच्छाधीशः यत्रज्ञांतिकलावान ॥७॥

सन्ध्याभूच्च गुरुधाता नाम्ना मरुत्भूपण ।

सूरिर्जिनमने लीनमनाः संतोषयोपर ॥ ८ ॥

तेनोपदेशमद्रत्नमालानंदो मनोहरः ।

कृतः कृत्तिजनानंदनिमित्तं ग्रंथ एषः ॥ ९ ॥

श्रीनेमिचन्द्राचार्यादियतीनासप्रदानहृत् ।

मन्तरानाना येनादि प्रार्थना ते सत्येपकः ॥ १० ॥

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जंमा. अजमेरा गोत्रे साह श्री पृग एते सर्वा. भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूराम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी भगवत्सहाय एताभ्यामित् पुस्तक नमपट्कर्मोपदेशरत्नमालाप्रथं सर्वे श्रावकाः लिखाप्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं ।

५. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द तथा मुनि श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र मख्या १०६ । माऽज १०।:x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३६ अक्षर । रचना सवत १६११. लिपि सवन् १८६१ प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसधे जनि पद्मनदी तत्पट्टधारी सकलादिकीर्ति-
कीर्ति कृता येन च समर्थलोके शास्त्रार्थवकी संकला पवित्र ॥ १ ॥
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाधिपो भवनभासनभूरिमतिस्त्रुतः ।
दरतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाहि खगेट् क्षितिभूजमः ॥ २ ॥
x x x x x x x x

पट्टे तस्य गुणानुधिन्न तर्धरो धीमान् गरीयान्वरः
श्रीमल्ली शुभचन्द्ररूप विदितो वादीभसिद्धो महान् ।
तेनेदं चरितं विचारुर्चिरं चाकारि चंचद्रूः
श्रीमल्ली करकंडुनामनृपतिः नीत्यानरस्तंक्षिपं ॥ ३ ॥

चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं प्रज्ञानाभ चरितं शुभचन्द्रः ।
रन्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकार ॥ ४ ॥
वंदनायाः कथा येन दृष्ट्वा नादीश्वरी तथा ।
आशाधरकृतार्चोया धृतिः सद्वृत्तशालिनी ॥ ५ ॥
त्रिशन्चतुविंशतिपूजनयः पृद्धं च सिद्धार्चन माधिषत्तं ।
सारस्वतीयार्चनमत्रनिर्घ्रं चिंतामणीयार्चनशुचिचरिभ्युं ॥ ६ ॥
धीवर्मदाह त्रिधिवंधुरसिद्धसेवां

नानागुणोद्यगणनाथसगर्वनेन च ।
श्रीपार्थनाथव काव्यमुपजिगा च
य. सचकार शुभचन्द्रयतीचंद्रः ॥ ७ ॥
उत्तापनमरीपिष्टा पत्न्योपमार्थिभिन्न च ।
चारित्र्यशुद्ध तपमश्च जुस्त्रिह्वारशात्मनः ॥ ८ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमनामाधुर्लक्ष्मीचंद्रोयतीश्वर ।
तस्य पट्टे च वीरैर्दुर्विबुधो विश्ववन्दितः ॥ १ ॥
तदन्वये दयाभोधिर्ज्ञानभूषोगुणाकरः ।
टीकां हि कर्मकाण्डस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामाकिता सूरी श्रीसुमतिकृति त्रिचिता कर्मकाण्डस्य टीका समाप्तः ।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अषाढ सुदी ६ भीमदिने श्रीमद्भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकृति तच्छिष्य
पंडितकिशनरामस्य वाचनार्थे लिखितं महात्मा घनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये ।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा
प्रति पक्ति मे, ३८-४२ अक्षर । विषय-प्राठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र । प्रति पूर्ण तथा
नवीन है ।

मंगलाचरण—

श्रीवृषं वपभ वंदे पुरंदं वृषभाकितं ।
वपभादिसभाश्लिष्ट पादद्वितयपकजं ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभ निनं स्तौमि चन्द्रकांत सुचंद्रक ।
चंद्रांकं चेद्वितं चद्रैश्चन्द्रिहाहततामस ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यमाशादिसुलोकप्रधानं, सद्गोष्मटादीनं वरदीवहेतुनं ।
सत्कर्तृशास्त्राप्सहस्यधीशान्तो वेद्ययुहं मोहवशी कृतांतः ॥ १ ॥
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवन्व सद्भिर् मरुतैः परैश्च ।
ज्ञान्यः सदा कोपगणं विहाय, चात्ये जने को हि शुभं न दधान ॥ २ ॥
श्रीमूलसधे जनि पद्मानन्दी. तत्पट्टधारी सरुलाद्वीर्त्तिः ।
सत्पट्टधारी भुवनविशीर्त्ति, जीयाच्चिरं धर्मधुरीणदत्तः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनिप्रोषवृत्तनिम्बलन्यायादिशास्त्रार्थ—

कश्चिद्रूपामृतपानलालनमतिः श्रीज्ञानभूषोजयी ।

श्रीयान् पंचमशालकल्पशिररी तत्पट्टधारी चिरं,

भामन्द्री विजयादिवीर्त्तिमुनिचो भूयाश्नास्त्रार्थविन ॥ ४ ॥

श्रीमद्वलात्कारगणे सुरभ्ये सरस्वतीगच्छमुनीद्रंपूज्ये ।
 श्लोकुदकुन्दान्वयके सरोजे देवद्रकीर्तिः प्रवभूवभानुः ॥ ३ ॥
 भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके मृत्यमहीद्रकीर्तिः ।
 देमद्रकीर्तिम्ममवे गुरुयां भूम्यां ततोऽभूत्तान्मा सुगीरः ॥ ४ ॥

x x x x x x x x x x

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रहे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदो नाम त्रयोदशपरिच्छेद-
 समाप्तः ।

६. जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदीस । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०५. साइज १०।।x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ
 पर १० पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में २८-३१ अक्षर । विषय-अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र ।
 लिपि सवत् १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानतीर्थेश वंदे मुक्तिवध्वरं ।
 कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृत ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिविदितः पृथिव्या ।
 सरस्वतीगच्छविभूषणं च, वभूव भव्यांसिसरोजहसे ॥ १ ॥
 ततोऽभवत्तस्य जगत्पसिद्धेः, पट्टे मनोहि संज्ञादिर्कीर्ति ।
 महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निप्रथरोत्तमं जगति प्रतापी ॥ २ ॥
 जयति सफलकीर्तिः पट्टेकेजभानुः,
 जयति भुवनकीर्तिः धिर्भविख्यातकीर्तिः ।
 बहुयतिजनयुक्तो मुक्तिमार्गप्रयोता,
 कुसुमशविजेता भव्यमन्त्रगनेता ॥ ३ ॥
 विबुधजननिषेव्यः सत्कृतानेकभाव्यः,
 परमगुणनिनाम. सद्गुणतालीविलाम ।
 विजितररुणारः भ्रष्टसंसारवारः,
 स भक्तु गतदोषः शम्भो वः सतोप ॥ ४ ॥
 पद्मप्रभादेस्तपसो विधाता,
 क्षमाभिधः क्षीनित्वं धरिण्या ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभ नृसुरार्चितं ।
 भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥
 नमः श्री शातिनाथाय शांतिर्म्मरये निशं ।
 पचभ्यस्सद्गुरुभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः ॥ २ ॥

अन्विम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराण योगिनो वरं ।
 पठनपाठनंभोवृशीलानां जयपुण्यद ॥ १ ॥
 प्राप्नोषिष्वो जयीदेयाजयोस्माभिः स्तुतः श्रुतः ।
 युस्माभिर्नः पुराणस्य व्याभाद्रत्नत्रयं वचः ॥ २ ॥
 प्रकथयतेऽन्वयोऽथात्र प्रथकृद्मंत्रयमक्तजः ।
 मूलसंधे वरे वीरपारंपर्याच्चतुंगणे ॥ ३ ॥
 अभूद्रणो बलात्कारः पद्मनंद दि पंचसु ।
 नामास्मिन्ध्व मुनिप्रीव शारदा बलवाचकः ॥ ४ ॥
 आचार्या कुदकुदाव्यात्तस्मादनुक्रमादभूत् ।
 सकलकीर्तियोगीशो ज्ञानी भट्टारकेश्वरः ॥ ५ ॥
 येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वाग्वरादिके ।
 निम्रंथे न क्वित्वादिगुणे न वाहता पुरा ॥ ६ ॥
 तस्माद् भुवनकीर्ति श्रीज्ञानभूषणयोगीशट् ।
 विजयकीर्त्तयोऽभवन् भट्टारकपदेशिनः ॥ ७ ॥
 तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिर्कीर्त्ति संयमि ।
 गुणकीर्त्याह्वया आसन् बलात्कारगणेश्वरः ॥ ८ ॥
 ततः धी गुणकीर्त्तीयपदव्योमदिवाकरः ।
 वादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् वादिभूषणः ॥ ९ ॥
 तत्रदाभीश्वरो विरवव्यापिनो श्वेतकीर्त्तिभूत् ।
 रामकीर्तिरभूदस्य रामो वा सुखदो शुखीः ॥ १० ॥
 तस्मात् स्वगन्धर्भतिरस्ति न पद्मनन्दी ।
 निष्णातकोकमुसवारकपद्मनन्दी ।
 भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी
 धीयमकीर्त्तिपदभूषणपद्मनन्दी ॥ ११ ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,

मम्यक्पदेन सहितो भवसौख्यवर्गात् ।

अन्योत्थकर्मजनकाह्निमुत्स्य काचि-

चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोऽप्य ॥ २१ ॥

अमृतवाद्धि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमद्विरचपलरुद्र ।

समृद्धोः साहित्यः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये ॥ २२ ॥

शिल्पिकृत्नादयत्येव निनविं तथा कविः ।

शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानित जनोः ॥ २३ ॥

राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमंठपाटस्यमुरचे ।

पश्चात् सवत्सरस्य प्ररचितमदतः पच पचाशतोहि ।

अभ्राभ्राक्षोरु संवत्सरनिकरयुजः फागुणे मासि पूर्णे ।

द्रपेवोचोदयारये सुकावाचनयिनो लालजिष्टोश्च चाक्यात् ॥ २४ ॥

मकलकीत्तिकृत पुरुषेवजं समवलोक्य पुराणमियकृति ।

जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च बृहदल जिनसेनकृतकृता ॥ २५ ॥

इति श्री जयाके जयनान्निपुणो भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरूपदेश ब्रह्मकामरा नविरचिते प० जीवराज-

महाख्यात त्रयोदशमः सर्गः ॥

प्रति न० २ पत्र संख्या ८५, साइज ११×४॥ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पक्तिया तथा प्रति पांक्त

में ३७-४२ अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

संवत् १९६१ वर्षे भाद्रवा सुदी ३ शुके श्रीगुरुसधे सरस्वतिगच्छे घलात्प्राग्गणे श्री कुंभकुंभ-
चायान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तद्वन्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवा

स्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनदीस्तशम्नाचे श्री गुर्जरदेशे श्री सूरतविदार श्री घामपूयचैत्यान्ये हंवरजात न

साह श्री संतोपी भ्राता माह जीवराज तयोः जननी आर्यिका वार्द्ध करमा तथा स्थविराचार्य श्री नन्दगीर्नि

स्तच्छिष्य दत्त श्री लाट्यरा तन्निष्पद्यमन्न श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाय दत्त ॥

संवत् १७३० वर्षे द्र० कामराजेन ग्वाभिष्ट शिष्य द्र० चाधजीष्टये जयपुराणमिदं दत्त ॥

११. जिनमहमूनाम सटीक ।

मूलकर्ता आचार्य जिनसेन । टीकाकार आचार्य श्री शतमागर । माया मरुत । पत्र संख्या १, १

साइज १२×४॥ इत्य । प्रति पूर्ण तथा मुद्रण है ।

ये च विक्रमातीताः शतपचदशाधियाः ।
 पष्टिसत्रत्सराः जातास्नदेय निर्मिताकृतिः ॥ ३ ॥
 ग्रन्थसख्यात्रविज्ञेया. लेखकै. पाठकै किल ।
 पट्टत्रिंशदविका पंचशती श्रोतृजनैरपि ॥ ४ ॥

इति मुमुक्षुभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचिताया रत्नज्ञानतर्गिन्या शुद्धचिद्रूपप्राप्तिक्रमप्रतिपादकोऽष्टा
 दशोऽध्यायः ।

संवत् १८२५ लिखत माणिक्यचदमहात्मना सवाईजि पुरमध्ये ।

१५. त्रिभंगीसार टीका ।

टीकाकार श्री विवेकानन्दि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ३७. साङ्ग ११×४॥ इष्ट ।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञ करुण सर्वं त्रिभुवनाधीशान्तर्यामिणं विभु ।
 य जीवादिपदार्थमाश्रयलने लब्धप्रशंसं सदा ॥ १ ॥
 धर्मद्रुमोन्मूलनदिकररींद्र सिद्धांतपाथो नघिच्छेष्टपारं ।
 पट्टत्रिंशत्राचयेगुरौ. प्रयुक्तं नमान्यह श्रीगुणभद्रसूरिं ॥
 या पूर्वै श्रुतमुनिना टीका कर्णाटभाषया विहृता ।
 लाटीयभाषया सा विरच्यते सोमदेवेन ।
 × × × × ×
 एषापत्ये नोमचद्र धृपभाषान् विपश्चिमान् जिनान् मयान ।
 एषे स्त्रभाषयाहं वशना टीका त्रिभंग्याया ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेंद्रस्य पुनोमपुत्रा प्रियानारायणस्याऽध्वसुता वभूव ।
 तथा तदेवस्य विजोणिनाम्नी प्रिया सुधर्मा सुगुणा सुशीला ॥१॥
 तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कौमुदश्रुद्धिगारी ।
 व्याप्रेस्वालावृनिधि. सुरत्नं जीयान्तिपरं सर्वजन.नर्पात् ॥ २ ॥
 भीमजिनोक्तानि समजमानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मतत्त्वैः ।
 भीमूलसंपाद्वि विवर्द्धनेत्रो. भीपूयप द प्रमुदरन्मजन् । ३ ।
 × × × × ×
 भीपद्माद्रियगे जिनस्य निवरां कीन शिवराजः
 सोम. सद्गुणभजन नवित्तः क्त वदने रत्न ।

१७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साडज ११४४ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३६-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नम श्री वद्ध मानाय पंचन्याणभागिने ।
जिनाय विश्व मायाय मुक्तिभर्त्रे गुणाग्रये ॥ १ ॥

श्रन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थंकरा जगन्नगहिताः सिद्धाः श्रनंताविदः
पचाचारपरायणाश्चगणि न. सत्पाठकाः साधवः ।
स्वगुणस्त्यादिसु साधकावरत्तपो युक्ताश्च वंशा मुता
भव्यैश्चैश्च मया दिशतु शिवत्र मन्मगल मेभत्रः ॥ १ ॥
भवेयुः श्रीमतोधन्यकुमारख्यसुयोगिनः ।
चरित्रस्यापिलताः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्ति विरचिते धन्यकुमारस्तपः सप्तोर्ध्वनिद्धि गमनो नाम सप्तमो सर्गः ।

सवत् १५३३ वर्षे पौष सुदी ३ शुभे श्रवण नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरश्राण गयामुद्देन राज्ये प्र-र्त्तमाने श्रीमूलसंघे चलात्कारगणे सरस्वतिगच्छे श्री वृद्धकुंदाचार्यान्वये भट्टारक भद्रानन्दिदेवास्तस्य भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तस्य भट्टारक श्री सिद्धकीर्तिदेवा तच्छिष्य मुनि स्तनभूषण तत्रिमिते चट्टेलाजालान्वये माह नायू तद्भार्या नैणसिरी तयोः पुत्राः पचायण भार्यापुसगी । माह तेजा भार्या तेजसिरी । तस्युत्र नाट ह ग । साह गोल्हा भार्या गोल्हसिरी तयोः पुत्रौ माह दासा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मजया प्रमिदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रवृत्त ।

१८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमिनगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६० । साडज १०४५ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना सवत् १७७० तिदि सवत् १७३३ प्रति न-ध-ग-गु अवस्था मे है । ग्रंथ प्रशस्ति हो चुका है ।

मंगलाचरण—

धीमन्नमस्तत्रयतुगदानं जगद्गुरुं प्रोधनयः प्रदीपः ।
नमंततो शान्तये वदीयो भवतु ते तीर्थंकराः श्रिने नः ॥ १ ॥

तपो पुत्र साह जगलाम तस्य भार्या हमीरदे तयो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र साह तृतीय पुत्र कल्याण तस्य भार्या करुणादे एतेषां मध्ये साह हरपा तस्य भार्या हरपमदे लिखितं शास्त्रवरांगचरित्रं जेठजिणवरव्रत प्रद्योतनार्थं भार्या श्री शुभचन्द्राय दत्तं ।

प्रति न० ३. पत्र सख्या ७३. साइज १३×५ इञ्च । लिपि सवत् १८७३.

सवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् ग्वालोरमुत्सलसकर महाराजि दौलतरावसिध्या राज्यप्रवर्त्तमाने आ आदिनाथचैत्यालये धर्मोत्सन्मानसचतुस्रय युते वाद्यगीत मण्डल प्रवर्द्धित नित्योत्सवे श्रीमूलसवे नद्याम्नाये वलात्कारणणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकाचार्यान्वये अर्वावती सुसकलभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सहस्ररश्मिसन्निभ भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजित्सावभौमानां पट्टलकारललापमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति तदम्नाये खडेलवालान्नाटोग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदासजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्रास्त्रयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचन्द्र मध्यपुत्रः फतेचदजी तस्य पुत्रौ द्वौ ज्येष्ठ पुत्र रामलालजी लघु पुत्र केवलरामजी तस्य पितृत्व वशात् सहस्ररश्मि सदृश धर्मभारधुरधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पति कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचन्द्र रतेषाम् ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं वरांगचरित्र ग्रथ घटापत ।

४५. वर्द्धमानपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ८० साइज ११×५ इञ्च । प्रति पृष्ठ पर १३ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ५२-५६ अक्षर । प्रति नवीन तथा सुन्दर है । लिपि सवत् १८०४.

मगलाचारण—

जिनेशे विश्वनाथाय ह्यनतगुणसिद्धये ।

धर्मचक्रवृते मूर्द्धना श्री वीरस्वामिने नमः ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य—

जल्पितेन बहुना किमाश्रयेद्वीरनार्थं इह यो मया स्तुतः ।

मे ददातु कृपया श्रिसोद्भुतान्, मुक्तये निजगुणान् स्वशर्मणे ॥ १ ॥

त्रिसहस्राधिकापञ्चत्रिंशत्श्लोकाः भवन्ति वै ।

प्रशस्ति—

यस्य तीर्थंकरस्यैव महिमाभुवनातिगः ।

रत्नकीर्तिर्यतिस्तुत्यः स नेरुषामशेषवित् ॥ १ ॥

अहकारस्फारी भवर्दामतवेदांतविबुधो,

ह्रसद्भ्वातश्रेणी क्षपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।

अधीती जैनेन्द्रे जनि रजनिनाथप्रतिनिधिः,

प्रभाचद्र सांद्रोदयशमिततापव्यतिकरः ॥ २ ॥

महाव्रतिपुरंदरः प्रशमदग्धरागांकुलः स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशास्त्रार्थवित् ।

यशोभरमनोहारी कृतसमस्तविश्वंभरः परोपकृतितत्परो जयति पद्मनन्दीश्वरः ॥

श्रीमत्प्रमेदु प्रभुपादसेवा हे वाकिचेताऽप्रसरत्प्रभावः ।

सच्छ्रावकाचारमुदारमेन श्रीपद्मनन्दी रचयांचकार ॥

श्रालंबकचुककुले विततातरिचे, कुवन्स्वांधवसरो जविकाशलक्ष्मीः ॥

लुपन् विपक्षकुमुदत्रजभूरिकांति, गोकर्णहैलिरुदियापलसत्प्रभावः ॥ ४ ॥

भुवि सूफकारसारं पुण्यवता येन निर्म्ममे कर्म ।

भीम इव सोमदेवो गोकर्णत्सोभवत् पुत्र ।

सती मतल्लिका तस्य यशकुसुमवल्लिका पत्नो,

श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥

विशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलक्ष्मीजिनेन्द्रयोः ।

नया इवा भवन् सप्तगभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥

वासाधरहरिगजौ प्रह्लादः शुद्धधीश्चमहागजः ।

भवराजो रत्न ख्यः स तनयाख्यश्चेत्प्रमीसप्त ॥ ७ ॥

वासाधरस्याद्भुतभाग्यराशेमित्तयोर्वैरमान् कल्पवृक्षः ।

अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो वितीर्णचेतोऽभिमतार्थसाथः ॥ ८ ॥

वासाधरेण सुधिया गाभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाविधः ।

कथमन्यथा स वडवावृत्तनसूत्रस्थितोवृत्तति ॥ १० ॥

× × × × ×

द्वितीयोप्यद्वितीयो भूद्धै वींदायोदिभिर्गुणैः ।

पुत्र श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिध. सुधाः ॥ १० ॥

गुणैः सदास्मप्रतिपक्षभूतैः सगीकरोत्येप विवेकवक्षु ।

इतीव शिष्ये. हरिराजसाधु दोंपैरवालोकि न शीलसिधुः ॥ ११ ॥

तत् शिष्यो गुणरत्नराजितमतिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
 सद्गुरत्नत्रयमडितोतिनितरां भव्यौघनिस्तारकः ।
 तेषां पादपयो न मुग्धमधुपः श्री नेमिदत्तायते,
 चक्रो चारुचरित्रमेतदुचित श्रीपालज संक्रियात् ॥ २ ॥
 श्रमोत्तोत्तमवशण्डनमणिः स ब्रह्मचारीशुभः
 श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरोः पादाब्जसेवारतः ।
 जीय दत्र महेंद्रदत्त सुयती, सज्ञानवान्निर्मलः
 सूरि श्री श्रुतसागरादियतिन सेवा परः सन्मतिः ॥ ३ ॥
 ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे वरे
 श्री मदादिजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदं शुभं ॥ ४ ॥
 सवत् सार्द्ध सहस्रे च पचाशीति समुत्तरे ।
 आषाढशुक्ला पचम्यां संपूर्णं रविवासरे ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्य श्री
 सिंहनन्दि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्म नेमिदत्तविरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्र निर्वाणगमनोनाम नवमोधिकारः
 समाप्तः ।

श्रीमदप्रोतान्वये यो गोत्रेगोयलमंडितः ॥
 स श्री रामादासाख्यो तत्तनूजो गुणाग्रणी ॥ १ ॥
 सुरापगादितार्थेषु स्नानेषु यः सदारतः ।
 सः श्रीमान् क्षेमदासोभूत क्षमादिगुणसागरः ॥ २ ॥
 हरेरर्चा गुरोर्भक्तिः दान्तत्परमानसः ।
 नृमाना हृदयिद्राप्ती सौधीयया सुखावहः ॥ ३ ॥
 महागुणवतीरम्या सुचरित्रापतिव्रता ।
 क्षेमश्री नाम तस्यासीद्भार्या लावन्यसुन्दरी ॥ ४ ॥
 तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमाः ।
 निजवृत्तेषु ये लीनाः भूपैः सन्मानिताः सदा ॥ ५ ॥
 ज्येष्ठोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
 निजाचारेषु यो लीनो नः श्रीकेशवनामभाक् ॥ ६ ॥
 मृदागी कोमल प्रीमानसे करुणान्विता ।

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

जयतु जित विपक्षो मूलसघः सुप्रज्ञो
हरतु तिमिर भारभारती गच्छ वारः
नयतु सुगतिमार्गां शासनं शुद्धवर्गं
जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दोमुनीन्द्रः ॥ १ ॥

पुराणकाव्यार्थं विदांवरत्व विकासयन् मुक्तिविदावरत्व ।
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्तिः कृताय केनोतो सकलाद्यकीर्तिः ॥ २ ॥
भुवन कीर्त्तियति जयताद्यमी, भुवनपूरित कीर्त्तिचयः सदा ।
भवनविव जिनागम फारणो, भवन वा पुदवातभरः परः ॥ ३ ॥
तत्पट्टोदय पर्वते रविरभूद् भव्यांबुज भासयन्,
सन्नेत्रास्रहर तमो विघटयन्नानाकरैर् भासुरः ।
भव्यांनंतगतश्च विग्रहमतः श्री ज्ञानभूषः सदा,
चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वद्धमानोदयः ॥ ४ ॥
जयति विजयकीर्त्तिः पुण्यमूर्त्तिः सुकीर्त्तिः—
जयतु च यतिराजो भूमिपैः षष्ट्यपादः ।
नयनलिनहिमांशु ज्ञानभूषस्यपट्टे,
विविध पर विवादिदमाघरे वज्रपात्तः ॥ ५ ॥
तत्तच्छिष्येण शुभेदुना शुभमनः श्री ज्ञान भावेन वै,
पूतं पुण्यपुराण मानुषभवं ससारविध्वंसक ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशातो जैनैमते केवल,
नाहंकारवशात्कवित्वमदतः श्री पद्मनाभेहितं ॥ ६ ॥
इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्चपद्मेश्वरवत्पवित्र ।
भविष्युससारसुख नृ देवं सभुज्य सम्यक्त्वफलप्रदीपं ॥ ७ ॥
चद्राकहेमगिरिसागरभूषिमान,
गगानदीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यसेवा,
तिष्ठंतु कोविद मनोबुजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

संवत् १७६६ वर्षे कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा शशिवासरे लिपिकृतं विंदरावति नगरे प० विहादारीसेन
प्रति नं० २. पत्र सख्या ६६. साइज १०×४। इञ्ज । लिपि संवत् १७३०.

प्रति न० ३. पत्र सख्या ३३ साइज १३×४। इच्च । प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है । लिपि सवत् १६२५. सवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दाक्षिणायेन मार्गशीर्षशुक्लपक्षे अष्टम्या दिवसे श्री कुभमेरुदुर्गे श्री उदयसिंहराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्री गुणलाभमहोपाध्यायैः स्ववाचार्थं लिखापितासौ वाच्यमाना चिर नदतात् ।

५०: सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकर सूरि भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ३५. साइज ११।।×४।। इच्च । रचना संवत् १५०४. लिपि सवत् १६११.

मगलाचरण—

तस्मै नित्य चिदानन्द स्वरूपायार्हिते नमः ।

यदागमरसास्वद तत्त्व विज्ञायते नरः ॥ १ ॥

युगादौ जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करानृणा ।

स भूयाद्भविना भूत्यैनाभिजन्मा जिनेश्वरः ॥ २ ॥

अन्तिम—

पूर्वर्षिभि र्या रचिता कथेयमग्रेऽपि काव्ये सुभाषितेश्च ।

श्लोकै र्मया सा ग्रथिता प्रमोदाद्बोदाभ्रवाणेदुमितेत्रवर्षे ॥ १ ॥

इति चैत्रगच्छोयैः श्री गुणाकरसूरभिः ।

चक्रे श्लोकै नवारम्या कथा सम्यक्त्वकौमुदी ॥ २ ॥

पुष्पदंतौ स्थिरौ यावर्थावच्छ ध्रुवमडल ।

वाच्यमाना बुधै स्तावज्जोयात् सम्यक्त्व कौमुदी ॥ ३ ॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता ।

सवत् १६११ वर्षे भाद्रवा सुदी ४ दिने मेडता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तत् शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिखावत् सम्यक्त्व कौमुदी आत्मर्थे ।

५१. सारस्वत चन्द्रिका सटीक ।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या १६६ साइज ६।।×४ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४०-४२ अक्षर । लिपि सवत् १७४६.

मगलाचर—

नमोस्तु सर्वकल्याणपद्मकाननभास्वते ।

जगश्रितमनायाय पराय परमात्मने ।

५२. सिद्धान्तसार संग्रह ।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३ साइज १२×५ इञ्च । लिपि
सवत् १८०३. लिपि स्थान जयपुर । प्रति जीण शीर्ष हो चुकी है ।

प्रारम्भ—

भूर्भुवः स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मत्रयात्मक ।
त्रिभिः प्राप्तपरंधाम वंदे विध्वस्तकल्पम् ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्रीवीरसेनस्य गुणादिमेनो जातः सुशिष्यो गुणिनां विशेष्यः ।
शिष्यमतदीयोऽर्जुन चारुचित्तः सदृष्टिचित्तोऽत्र नरेंद्रसेनः ॥ १ ॥
गुणसेनोदयमेनाऽजयसेना संबभूवुरतिवर्षाः ।
तेषां श्री गुणसेनः सूरिर्जातः कलाभूरिः ॥ २ ॥
अतिदुःखमानिकटवर्त्तिनिकालयोगे,
नष्टे जिनेन्द्र शिव वर्त्सनि यो बभूव ।
आचाये नाम विरतोऽत्र नरेंद्रसेन—
स्तेनेद्रमागमवत्सो विशद निवद्ध ॥ ३ ॥

इति सिद्धांतसारसंग्रहे आचार्यश्रीनरेंद्रसेन विरचिते द्व दशमः परिच्छेदः समाप्तः ।

५३. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता श्री सोमप्रभसूर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १२×५ इञ्च । पत्र संख्या ६६.
लिपि सवत् १८८६.

प्रारम्भ—

सिन्दूरप्रमकरगतपकरशिरः क्रोडे कृषायटवी,
दावर्चिर्निचयः प्रबोध दिवस प्रारभसूर्यादयः ।
मुक्तिस्त्रीकुचकुभकुसुमरसः श्रेयस्तरोपलवः,
प्रोह्लासः क्रमयोर्नवद्युतिभरः पार्श्वप्रभो. पातु वः ॥

प्रशस्ति—

सोमप्रभाचायंभशास्रयज्ञपुसां तमः पंकमपादरोति ।
तत्प्यमुष्मिन् सुपदेशलेशे निशम्य माने निशामेतिनाशं ॥ १ ॥

गुरुणामुपदेशेन सच्चरित्रमिदं शुभं ।

नेमिदत्तो व्रती भक्त्या भावयामाश शर्मदं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनभस्कारमहात्म्यप्रदर्शके ब्रह्म श्री नेमिदत्तविरचिते सुदर्शनमहासुनि
मोक्षलक्ष्मी संप्राप्ति व्यावस्थानो नाम द्वादशमोऽधिकारः ॥ इति सुदर्शन चरित्रं संपूर्णं ॥

५५. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक ।

मूलकर्त्ता स्वामी कार्तिकेय । टीकाकार आचार्य शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत्
१६०१. लिपि सवत् १७२१. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहा है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंधेऽजनि नदिसधः, वराबलात्कारगणः प्रसिद्धः ।

श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिवर्यः, विभातिभाभूषणभूषितांगः ॥ १ ॥

तदन्वये श्रीमुनिपद्मनंदी, ततोऽभवच्छ्रीसकलादिकीर्त्तिः ।

तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः श्रीज्ञानभूषोवरवित्तिभूषः ॥ २ ॥

तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टधारी शुभचंद्रदेवः ।

तेनेयमाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तः ॥ ३ ॥

सूरिश्रीशुभचन्द्रेण वादिपर्वतवज्रिणा ।

त्रिविद्येनाऽनुप्रेक्षायावृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥

श्रीमत् विक्रमभूपतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,

माघे मासिदशाग्रवह्निमहिते ख्याते दशम्या तिथौ ।

श्रीमच्छ्रीमहीसार सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरोः,

श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र देवविहिता टीका सदा नन्दतु ॥ ५ ॥

वर्णा श्रीक्षीमचन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।

शुभचंद्र-गुरो स्वामिन कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥

तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैवेद्येन गणेशिना ।

कार्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥

तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।

सार्थीकृतीसार्थेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥

लक्ष्मीचन्द्रगुरु स्वामीशिष्यात्तस्यसुधीयशा ।

वृत्तिर्विस्तरितातेन श्री शुभेदुप्रसादतः ॥ ९ ॥

विशदशीलस्वधुं नीसिलातलैकगजहसोत्सवायकीडनः प्रियः,
 स्वमतसिंधुवद्धे नप्रकृष्टयामिनी न पीनतेजसोद्भुत प्रभामितः ।
 सुरेद्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनद्यनगमदनैकपंडितः कलाधर
 स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥
 गोलशृ गारवशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चिन्त,
 भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत् ।
 तेनोच्चैरेष ग्रंथ कृत इति सुतरा शैलराजस्य सूरैः,
 श्री विद्यानदिदेशात्सुकृतविधिवशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धयै ॥
 इदं श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।
 रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं ।
 धर्मार्थी लभते भृषं धनुयुतो वृद्धि च निःस्वाधनं,
 पुत्रार्थी सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत् ।
 मोक्षार्थी वरमोक्षमाश्चलभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,
 ह्येतत् शैलमुनीन्द्रराजचरितं सर्वार्थसिद्धिप्रदं ॥
 पठकः पाठकश्चैव वक्ता श्रोता च भावकः ।
 चिरं नद्यादयं ग्रंथस्तेन साद्धं युगाविधि ॥
 प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।
 श्लोकानामिह मंतव्यं हनूमक्चरिते शुभे ॥

इति श्री हनूचरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः ॥

संवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी पचमी दीतवार पुस्तक लिखापित जैसी श्रीपति ।

५८. हरिवंशपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्य
 २२३. साइज १२।।×५। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ४६-५० अक्षर । प्रति लि
 संवत् १८०३ प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है ।

मगलाचरण—

सिद्धं संपूर्णं भव्याथं सिद्धेः हारणमुत्तमं ।

प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादन ॥ १ ॥

सुरेन्द्रमुकटाश्लिष्टपादपद्माशुकेशर ।

प्रणमामि महावीर लोकत्रितयमगल ॥ २ ॥

कर्मक्षयं बोधिचरित्रलाभं,
 शुभां गतिं चेह न चान्-देवः ॥ ११ ॥
 यद्किंचिदत्र स्वरसंघजात,
 पदादिकिचदस्खलित प्रमादान् ।
 क्षमस्व तद्भारतितुच्छबुद्धे,
 ममाशुनो मुह्यति कः श्रुताब्धौ ॥ १२ ॥
 तथा च धीमद्विरिद विशोध्यं,
 मुनीश्वरैर्निर्मलचित्तयुक्तैः ।
 कृत्वानुकंपां मयि जैन शास्त्र-
 विशारदैः सवंकपायमुक्तैः ॥ १३ ॥
 यावन्महोमेरु नगः पृथिव्या शशी च सूर्यः परमाण्वश्च ।
 श्रीमज्जिनेन्द्रय गिरश्च तावन्नदत्विदं नेमिचरित्र मार्यं ॥ १४ ॥
 रक्षां सघस्य कुर्वतु जिनशासनदेवताः ।
 पालयतोऽखिल लोकं भव्यसज्जनवत्सलः ॥ १५ ॥

इति श्री हरिवंशे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिशिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास विरचिते श्री नेमिनाथ-
 निवाण वर्णनो नामैकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ३६ ॥

संवत् १८२७ वर्षे मितो ज्येष्ठ बुदि ५ चंद्रवासरे सवाई जयपुरमध्ये चंद्रप्रभुचैत्यालये पडितो-
 त्मपडित श्री चोखचदजी तत् शिष्य पडितोत्मपडित श्री रायचदजी तत् शिष्येण सेवक सवाई रामेण इदं
 त्रटित ग्रथ पूर्णं कृत ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ३५५. साइज १२x५ इच्छः । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति में
 ३६-४० अक्षर । प्रति मे दो तरह की लिखावट है । प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है ।

शुभ संवत् १६६१ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी दिने राजमहलनगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये
 महाराजाधिराज श्री मानसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री
 कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र-
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोघा गोत्रे
 याचकजनसंदोहकल्पवृत्त श्रावकाचारवर्णनिरतचित्त साह श्री धनराज तद्भार्या शीलातोयतरिणी विनय-
 वागेश्वरी घनसिरि तयो पुत्रः त्रयः प्रथम पुत्र धर्मधुरा धरणधीर साह श्री रूपा तद्भार्या दानशीलगुण-
 भूषणभूपितगात्रा नाम्ना गूजरि तयो- पुत्र राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुखकुमुदाकर
 स्वसनिसाकारआह्लादित कुवलय दान गुण ।

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

ततस्त्रिलोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिककयात्र भारते ।
 समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥ १ ॥
 त्रयः क्रमात्केवलिनो जिनात्परे द्विपष्टिवर्षान्तरभाविनोऽभवत् ।
 ततः परे पंचसमस्तपूर्विकस्तपोधना वपशात्परे गताः ॥ २ ॥
 त्र्यशीतिके वर्षशते तु रुभ्युक् दशैव गीता दशपूर्विकाः शते ।
 द्वये च विशेषभृतोपि पञ्च ते शते च साष्टदश चतुर्मुनिः ॥ ३ ॥
 गुरुसुभद्रो जय भद्रनामा परो यशो बाहुरनततरस्ततः ।
 महाहलोहार्य गुरुश्च ये दधुः प्रसिद्धमाचरमहागमत्र ते ॥ ४ ॥
 महातपो धृत्विनयवरश्रतामृषिश्रति गुप्तदाधिनादधत् ।
 मुनीश्वरोन्मयः शिवगुप्त सङ्गको गुणैः स्वमहद्वलिरप्यधात्पदं ॥ ५ ॥
 समदराजोऽपि च मित्रवीरविगुरु तथान्यौ बलदेवमित्रकौ ।
 विवद्धमानाय त्रिरत्नसयुतः श्रियान्वितः सिंहवलश्चवीरवित् ॥ ६ ॥
 सपद्मसेनो गुणपद्मबद्धभृत् गुणाग्रणीव्यघ्रपदादिहस्तकः ।
 स न गहस्तोजित दडनामभृत्सन्दिपेणः प्रभुदायसेनकः ॥ ७ ॥
 तपोधन श्रीवरसेननामकः सुधर्मसेनोऽपि च सिंहसेनक ।
 सुनन्दपेणेश्वरसेनकौप्रभु सुनदिपेणाभयसेन नामकौ ॥ ८ ॥
 स सिद्धसेनोऽभयभीमसेनको गुरुपरौ तौ जिनशांतिपेणकौ ।
 अखड पटखड मखडितस्थितिः समस्तसिद्धातमधत्तयोर्यः ॥ ९ ॥
 दधार कर्मप्रकृतिश्रुतिच यो जितोत्तुष्टिजयसेनसद्गुरुः ।
 प्रसिद्धवैयाकरणप्रभानवानशेषराद्धातसमुद्रपारगः ॥ १० ॥
 तदीयशिष्यो मितसेनसद्गुरुः पवित्रपुत्राटगणाप्रणा गुणी ।
 जिनेद्रसच्छाशान्तवस्सलात्मना त गोभृता वर्षशताधिज विना ॥ ११ ॥
 सुशास्त्रदानेन वदान्यत मुना वदान्यमुख्येन भुविप्रहाशिता ।
 तदग्रजो धर्मसहोदरः समो संमप्रबोद्धर्म इवान्तिविग्रहः ॥ १२ ॥
 तपोमयी काति भशेपदिक्षु यः क्षिपन्वभौ कीर्तितकीर्त्तिपेणमा ।
 तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥
 स्वशाक्तभाजा जिनसेन सूरिणा वियल्पयोक्ता हरिवशोपद्वितः ।
 यदत्र किंचद्रचित प्रमादतः परस्यव्याहृतिदोषदूषित ॥ १४ ॥
 तदप्रमादास्तु पुराणकोविदाः सृजतु जतुस्थित शक्तिवेदिनः ।
 प्रशस्तवशो हरिवशोपर्वतः क्व मे मतिं क्वालपतरात्पशक्तिका ॥ १५ ॥

जयन्ति देवासुर संघसेविताः प्रजातिशांतिप्रदशांतिशासनाः ।
 विशुद्धकैवल्यविनिद्रदृष्टयः सुदृष्टतन्त्रा भुवनेज्जनेश्वराः ॥ ३१ ॥
 जयन्त्वज्यपाजिनघर्मसततिः प्रजास्वह क्षेममुभिन्नमस्वतः ।
 सुखाय भूयात्प्रतिवषवर्षणैः सुजात सस्या वसुधा सुधारिणां ॥ ३२ ॥
 शाके व्रद्धशतेषुमत्सुदिशं पंचोत्तरेषूत्तरा,

पातीद्रायुध नाम्नि कृष्णानृपजे श्री बलभेदक्षिणां ।
 पूर्वो श्रीमदवति भूभृतिनृपे वत्सादि राज्ये परा,

सूर्याणामधि मडल जययुते वीरे वराहेवनि ॥ ३३ ॥
 कल्याणैः परिवर्द्धमानविपुल श्री वर्द्धमाने पुरे,

श्री पार्श्वालयनन्नराजवशतौपर्याप्तशेषःपुरा ।
 पश्चाद्धौस्तटिका प्रजाप्रजनित प्राज्यार्चना चचने,

शांतेः शातिगृहे जिनेसुरचिते वशोहरीणामयं ॥ ३४ ॥
 व्युत्सृष्टापरसघसंतर्वृहत्पुत्राटसघान्वये,

प्राप्तं श्री जिनसेनसूरिकविना लाभाय बोधे पुनः ।
 दृष्टोऽयं हरिवशपुण्यचरितः श्री पर्वतो सर्व्वतो,

व्याप्ताशा मुखमंडलस्थिरतरस्थेयात् पृथिव्या चिरं ॥ ३५ ॥

इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपर्व्वकमल वर्णनो नाम षट्
 षष्टितमः सगः ।

इति श्री हरिवशपुराणसमाप्तमिदं ।

संवत् १६६२ वर्षे पौष सितपचम्या तितौ सप्रामपुरवास्तव्ये महाराजाश्रीमानसिंह राज्यप्रव्रतमाने
 श्रीधर्मनाथचत्यालये श्रीमूलसधे नद्याम्न ये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदं कुदार्चयान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
 भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये चांद्वाडगोत्रे सा०
 श्री जाटू तद् भार्या जौणादे स्तयोः पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० लालू तद्भार्या ललतादे स्तयोः पुत्राः सप्त ।
 प्रथम सा० गढमल तद्भार्या गौरादे द्वि० चि० भरथा तृतीय चि० वेणा भार्या बहुरगदे, चतुर्थ चि० मनोहर,
 षष्ठ चि० दयाल सप्तम धीनड । प्रथम देवदत्त, द्वि० सा० कुभा तद्भार्या कोडमदे स्तयो पुत्र चि० दासा
 तृतीय सा० मानू तद्भार्या लाडमदे स्तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० वीठल द्वि० चि० गोइद । चतुर्थ सा० कल्याण
 तद्भाया कल्याणदे पतेषा मध्ये चतुर्विधदानवितरणसमर्थः सा० कल्याण तद्भार्या कल्याणदे तथा इदं
 हरिवश पुराणाख्य शास्त्र पल्यव्रतउद्योतनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तये घटापित ।



महिवीढिपहाणु गुणवरिट्टु सुरहविमणविभउजगाइसुट्टु ।
 वरतिरिणासालमंडिठपवित्तु णं इह पंडिउ सुरपारपत्तु ।
 रुहियासुविणामे चणिवइट्टु , अरियणजगाह हियसल्लुकदट्टु ।
 जहिं सहहिंणिरतर जणणिकेय , पंडुगसुवणधयसुहसमे ... ।
 सट्टालसतोरणजत्थहम्म, , मणसुहसदायण ण सुकम्म ।
 चउहट्टयचच्चरदामजत्थ , वणिवर ववहरहिविजहिं पयत्थ ।
 मगणगणकोलाहलसमत्थ , जहिजणणिवसहिं संपुरण अत्थ ।
 जहिं आवणम्मिथियविहभंड , कसवट्टिहिं वसियहिं भम्मखड ।
 जहिं विसहिं महायणसुद्धवोह , णिच्चचियपूयादाणासोह ।
 जहिं वियरहिंवरचउ वणणालोय , पुणणेषपयासियदिव्वभोय ।
 ववहारवार सपुरणसव्व , जहिंसत्तवसणामयहणीभव्व ।
 सोहगणिलयजिणधम्मसील , जहिं माणिणिसिमाणा महग्घलीक ।
 जहिं चोरचाडकुसुमालदुट्टु दुज्जणसखुदखलपिसुणधिट्टु ।
 णविहीसहिकहिमहिदुहियहीणा , पेम्माणुरत्तसव्वजिपवीणा ।
 जहिं रेहहिहयपयदलिलमग्गु , तं वोलरंगरगियधरग्गु ।

घत्ता

सुहलच्छिजसायरु णं रयणायरु, वुहयणजुवगाइदउरु ।
 सत्थत्थहिसोहिउ जणमणमोहिउ, णं वरणयरहएहुगुरु ।
 तहिं साहिसिक्करुमामिसालु , णियपइपालइ अरियणभयालु ।
 तं रज्जिवसइ वणिवरुपहाणु , दुत्थियजणपोसणु गुणणिहाणु ।
 जो अइरवालु कुलकमणभाणु , सिघलकुवणयहुविसेयभाणु ।
 मिच्छत्तवसणावासणविरत्तु , जिणसासणिगंधहपायभत्तु ।
 चउवरियणामचीमासतोसु , जो वसहमडणु सुयणपोसु ।
 तं भामिणि गुणगणसीलखाणि , माल्हाहीणामे महुरवाणि ।
 तं णदणुणिरुवमग्गुणिवासु , चउधरिय करमचदु अरुहदासु ।
 जिणधम्मोवरिजेव द्वमाहु , णिवहियइइट्टु पुरयणहणाहु ।
 जिणचरणोदणवियजोपचित्तु , आयमरसरत्तउजासुचित्तु ।
 उद्धरिउ चउन्निहसधंभारु , आयरिउविसावयचरिउचारु ।
 चउदाणवतु णं गंवहत्थि , वियरेइणिच्चजोधम्मपथि ।

अन्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

रांदउ जिखवरसासगासारउ जिशावाणीविकुमभगविथारउ ।
 रांदउ वुहयगासमयपरिद्विय रांदउ सज्जगाजेविसविद्विय ।
 रांदउ गारवइपयरखंतउ गायमग्नुभोयह दरिस्ततउ ।
 सतिवियंभउ पुद्विवियभउ तुद्विवियभउ दुरिउणिसुभउ ।
 सेणिवणिगउ गारयणिवसहु जिगाधम्मुविपणउउ भववासहु ।
 जि मच्छरु मोहविपरिहरियउ सुहयवभगिजे णिय मणुधरियउ
 हेमचदु आयरिउ वरिद्वउ तहु सीसु वितवतेयगरिद्वउ ।
 पोमगांधर रांदउ मुणिवरु देवगांदि तहु मीसु महीवरु ।
 एयारह पडिमउ धारतउ गायरोसमयमोहहयांतउ ।
 सुहज्जाणें उवसमुभावतउ रांदउ वभलोलु समवंतउ ।
 तहं पासजिणैदहगिहर वराणा वेपडियणिवससिंह गायवराणा ।
 गरुवउ जसमलु गुणागणारिहाणु वीयउ जहु वंधउ भवजाणु ।
 सिरि सतिदास गथथ्यजाणु चव्वइ सिरि पारखुविगयमाणु ।
 रांदउ पुणु दिवराउ जसाहिउ पुत्तकलत्तपउउ विसाहिउ ।

यता

रोहियासिपुरिवासि सयलुनोउसहगादउ ।
 पासजिगाहुपयसरय गाणाथोत्तद्विद्विउ ।
 पुणु गामावलि भगाउ विसारी दायहु केरी वराणाविसारी
 अइरवालु सुपसिद्ध विभासिउ सिवत्त गोत्तिउ सुपणासमासिउ ।
 ब्रह्माणिवि अहिहाणे भण्णिउ जे णियतेण कुलु संताण्णिउ ।
 करमचन्दु चउवरिय गुणावरु दिवचंदही भज्जहि ।वेमणंहरु ।
 तस्स तण्णरुह तिसिणविजाया गा पंडवइणा तिसिणसमाया ।
 पढमउ सत्यअत्थरसभायणु महगाचदुगाउइयउधरइणु ।
 तहवणियापेमाहीसारी पुत्तचउउकिजुवमगाणी ।
 अग्गिमुचाणेंसेयसिउ उज्जलजसचरिओ विजयसिउ ।
 असुवरुपहरतियद्विविरत्तउ जं असवुकइयाणाउ उत्तउ ।
 दिउराजुजिगामहहिमल्लउ गौणाहीतियरमाणुविमल्लउ ।
 तहुकुखिनिधिसुत्ताहलाहलाइ इपणाउवेसुपरिउसत्ताइ ।
 पहिलारउणियकुलहंविदीउ हरिचलुणामु गुणागणाविदीउ ।

दोदाहीकामिणी अणुरजइ ज सुहिमरणी सगिगमिज्जइ ।
 जोजाअवरु वि शादणुसारउ लखमणुयामे पडिय हारउ ।
 मल्लाहीकामिणी तहु रादणु हीखामे जगामणुणदणु ।

वृत्ता

अवरु वि शादणुतीयउ, ताल्लूणामे भसिउ ।
 वाल्लाही मणुहारु वेसुयताहसमासिउ ।
 पढमउ पोमकंतिदामूसुहो इच्छाही भामिणी दिरणुउसुहो ।
 महदासुवि तहु पुत्तपियाउ पुणु दिवदासु वीरमणुहारउ ।
 साधारणही भज्जमणुोहरु धणुमल्लु रादणु तहुपुणुसुइयरु ।
 जगमल्लाही कामिणी तहुसारी चायमल्लु सुयपोसणायारी ।
 इय दिवराजह वसुपयासिउ काराविउ सत्तुजि रससारउ ।
 कोहमोहमय माणुविथारउ जं अवरुखणु किंपि विरणुसिउ ।
 सुपसाए विविरुद्ध उभासिउ त सरसइ महु खमउभडारी ।
 वीरजिणुहो मुह गिणुगयसारी ।
 हेम पोमआयरियवससि वभज्जुणुणुणुगणुणुगिणीहीसे ।
 मइकसवट्टियवणुणुवरेणुणु कवसुवणुणु लीहविदेणुणु ।
 मत्त अत्थ सोहणुणुखिनेविणुणु अत्थचिरुद्धकिट्टिकट्टेविणुणु ।
 सोहिउ एहु विमणुणुयाएविणुणु होउ चिराउ सुकवुवुरसायणुणु ।
 विक्कमरायहु ववगयकालइ लेसुसुणीविसरअकालइ ।
 धरणि अकमहुचइभविमासे सणुणुवारे सुयपचामिदिवस ।
 कित्तियणुणुकरत्तेसुहजोय हउ पुणुणुउसुविसुत्तहजोय ।

वृत्ता

हो वीरजिणेसर जगपरमेसर एत्तिउ लहुमहुदिज्जउ ।
 जहिं कोकुणामाणु आवणुजाणु सासयपउमहुदिज्जइ ।

इस महाराय सिरि अमरमणु चरिए चउवग सुकहकहामयरसेणुसभरिए सिरि पंडिय मणि माणि-
 कविणुणु साधु महणुणुसु चउवरी देवगज गामंकिए सिरि अमरसेणु गमणुवणुणु गाम
 सत्तमइमपरिच्छेय सम्मत्ता ।

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्ति देवाभतस्य शिष्यमंडलाचार्य श्री सिंहनन्दि इव आत्मसबोधग्रन्थ लिख्यत ३म शयनिमित्तं । प्रति न० २ । पत्र संख्या ४० साइज १३×४३ इञ्च । लिपि सवत् १६०७ ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६०७ वर्षे अपाठ बुदि ८ शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहराज्ये रावणपाशवनाथ चेत्यालये श्री मूलसधे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री धर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवांसपुरि श्रावक., गोधा गोत्रे सगही भीष अर्जुन । सजनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु, पूरू, राउ । भतिजा बहुडु जिणदास श्रावकाः ... वाडसपूर निर्मित्यर्थ घटापितः ।

४. आदि पुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २१८ । साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ५०-५६ अक्षर । लिपि सवत् १६६२ । विषय—पुराण ।

मगलाचरण—

सिद्धि वहूमणरंजणु परमणिरजणु भुवणकमलसरणेसरु ।
पर्यावि विग्वविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ।

अन्तिम पाठ—

गडभरहु वि मोक्खवि शुद्धमइ विविहकम्मवधेहि चुओ ।
फणिलेयरकिन्नरपवरनर पुफदत गणसथओ ॥

इय महापुराणेति सद्धिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुफदंत विरइए महाभव्यभरहाणुमुणिए महाकव्वे सगणहररिसहनाहभरह णिव्वाणगमणं नाम सत्ततीसमोपरिछेड सम्मतो ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये... सा नरसिंह तद्भाया चाउ द्वितीया भाउ । नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्र-भक्त सा० नरसिंह भार्या ठकुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द । गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोलू भार्या चदणी । तृतीय पुत्र सा० दिउचन्द । चतुर्थ पुत्र सा० दुलू । सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० तालू भार्या जिणो । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण तद्भाया वीधो तत्पुत्र सा० विमलू । तील्हा द्वितीय पुत्र सा० भोला तद्भाया दीपो तत्पुत्र सा० दोचा । सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भाया उलो । सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा० तिहुण तद्भाया जीवो तत्पुत्र सा० उदा सा० नरसिंह पचमपुत्र तेजू भार्या सोभी । सा० नरसिंह षष्ठम पुत्र सा० वस्तू भार्या कुसुरी । सा० सीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० छाजू ६१० पल्हो । सा० सीधर तृतीय पुत्र सा० लोलू तद्भाया जल्पही तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० दूढा द्वितीय गूजर

तत्पुत्रौ भुविजज्ञाते नाथू कालू च धीधनौ ।
 लाडी धवेद्र राड्याख्यो धणराजपिताग्रभौ ॥ १४ ॥
 पचमोऽभयराजाह्वो भाया दुरगादे पतिः ।
 चूड कुसलाभिख्यो तत्पुत्रौ च वभूवतुः ॥ १५ ॥
 अजौ राजो राइसिंहपिताऽजाइवदेप्रभुः ।
 धीतड पिता अखेराजः प्रियाऽहीकारदेधनः ॥ १६ ॥
 छोतर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः ।
 कल्याणाहवोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥
 तम्य प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मज्ज सौख्यदे ।
 जिनवेश्म कृत येन सूअदुर्गे सनोरम ॥ १८ ॥
 द्वितीयो गढमल्लाख्य स्त्रिभायेस्त्रिपुत्रकः ।
 दयालच्छषभाहू सुदरेश्च विराजते ॥ १९ ॥
 तृतीय प्रदासी नामा ड्यागदे पारदे पतिः ।
 टोडरस्यपितरिजे जगुरूपपितामहः ॥ २० ॥
 तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भट्टकः पर ।
 पचम साहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधीः ॥ २१ ॥
 बल्ह विराजते षष्ठ भर्ता बहुरगादे स्त्रियः ।
 मत्रीशः पेमराजस्य उअसिंहसहीपते ॥ २२ ॥
 सघेश पेमराजस्य चोअसिंह महीपते ।
 मत्रीशस्य वभौ काता सुघारदे च नामतः ॥ २३ ॥
 सीतेव रामराजस्य पाडो कुतोव सुदारी ।
 दान्त कल्याणबल्लीव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥
 तेनेद शास्त्र लिखाण्य नरेशाय मुनये च दत्त ।
 कर्मक्षयार्थ वे चिर नदतुः भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७१ साइज ११×५ इञ्च । प्रति मे तीन प्रतियो के पत्र मिनाये गये है ।
लिपि सवत् १५६४ ।

लिपिकार की प्रशस्ति —

सवत् १५६४ वर्षे श्रावण सुदी ३ मंगलवारे राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसधे
बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र-
देवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तदाभ्नाये खडेलवालान्त्रये टोंग्या गोत्रे ।

५. उत्तरपुराण

उत्तरपुराण । रचयिता महाकवि पुष्पदत्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३६८ । साइज १४×४ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४० । ४८ अक्षर । प्रति बहुत प्राचीन है । उक्त ग्रन्थ अपभ्रंश भाषा का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है । इसमे ६३ शालाश्रो के महापुरुषो का जीवन चरित्र वर्णित है । ग्रन्थ के अन्त म महाकवि ने अपना विस्तृत परिचय लिखा है ।

भगलाचरण—

वामहो वामभालियमामियहो, ईसहो ईसरचदहो ।
अजियहो जियकामहो कामयहो परावेवि परमजियिदहो ॥
प्रशस्ति तथा ग्रथ कौ अन्तिमें भाग—

कयतिजोएसेगिरोहू अगिदिठउ ।	किरियाछिगराई म्गिणिं परिदिठउ ।
गिहिय अवाइचउंकु अदेहउ ।	वसुसमगुरांसंगोरगिगणहउ ।
रिसिसहसेरा समउ अरिछिंदण ।	सिद्धउ जिगुसिद्धथहो रांदेण ।
अभिदगहि अचिउ सिहिजालहि ।	अमरिदहि रावकुवलयमालहि ।
गिबुए वारेगलियमयरायउ ।	इदभूइ गगि ववलि जायउ ।
सो गिउलउरिदे गउ गिबवागहो ।	कम्मविमुक्कउ मामयठागहो ।
तहि वासरे उप्पराणउ केवलु ।	मुणिहे सुधम्महो पक्खालियमलु ।
त गिबवागहो जवूगामहो ।	पचमु दिवु गणु हयकामहो ।
गिदि सु गदिमित्तु अवरु वि मुणि ।	गोवद्धणु चउत्थु जलहरभुगि ।
ए पच्छए समथ सुअपारय ।	गिरसियमिच्छामनयभय गीरय ।
पुणु वि साहुजय पोडिलु ग्वत्तिउ ।	जउ गणउ वि मिद्धथु हयत्तिउ ।
दिहिसेणकु विजउ बुद्धित्तउ ।	गगु धम्ममेणु वि गीसल्लउ ।
पुणु राक्खत्ताउ पुणु जसवालउ ।	पडु गणमउ धुअमेणु गुगालउ ।

वैता—

आणकपउ अप्पउ जिणेवि थिउ ।	पुणु सुत्थु जिणसुअहर ।
जसे भलु अखलु अमदमइ ।	गाणिं गावइगाहिरु ॥ १ ॥
भेदवाहु लोहकु भेडारउ ।	आयोरगधारि जगमारउ ॥ ३ ॥
एयहिं सवु मथु मणि गाणिउ ।	सेसदिं एक्कु देसु परियाणिउ ॥
जियमेणेया वीरसेणेयावि ।	जिणमांसणु सेविउ मयगिरिप वि ॥
पुंनयान्ति गिसुणिय सुइभग्हे ।	रापे वहरिउ दीवियविरहे ॥
पुणु सयरया सव्यवीरके ।	पुहईसेया सगुत्तसस्ते ॥

जिगापयगाभगाविचलियगव्वह । होउ सति गासेसह भव्वह ॥

घत्ता

उय दिव्वहो कव्वहो तगाउ फलु, लहु जिगागाहु पयच्छउ ।
 सिरि भरहहो अरुहहो जहि गमणु, पुप्फयतु तहि गच्छउ ॥
 सिद्धिवित्तासिगामगाहाग्द्वय । मुद्धाएवीतणुसभूए ॥
 गिद्धगासधगालोपममचित्ते । सव्वजीवणि फफारणमित्ते ॥
 मल्लमल्लि परिवहियसोत्ते । केसवपुत्ते कासवगोत्ते ॥
 वमन्नस । सइजगियविलस । सुराण भयणा देवउल्लगिवासे ॥
 कालमलपावपडलपरिभत्ते । गिग्घरेणा गिघुत्तन्नत्ते ॥
 गायवावीतलायकयराहाणे । जग्घेवग्घकलपरिहाणे ॥
 धीरे धुन्नीधूसरियगे । द्ढरुज्जिक्कय दुज्जगाससग्गन ।
 महिसयणायल्लेक्कपंगुराणे । मग्गिय पडियपडिय मरगे ॥
 मल्लखेडपुग्घरे निवमत्ते । मणे अरहतधम्मु भापेत्ते ।
 भरहमगाज्जे गायगिल्लए । कव्ववधपयणियजणपुलए ।
 कोद्धगासवच्छरे आमादए । दहमइ दियहे चद रुइरुद्धइ ।

घत्ता

सिरि गिग्घहो भरहहो वहु गुणाहो, कइकुलतिलए भासिउ ।
 सुपहाणु पुराणु तिसिद्धिहिं मि पुरिसहं चरिउं समासिउ ॥

इस महापुराणं तिसिद्धिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुपयतविग्घए महाभव्वभरहाणुमगिगाए महाकव्वे
 वीरगाह गिग्घराणागमगा भावितिसिद्धिपुरिस वरणागा गाम दिउत्तारुसय सवी समत्तो ।

सप्तमरेऽस्मिन् श्री विक्रमादित्यगताब्दाः संवत् १३६१ वर्षे ईश्वरेण बुद्धि ६ गुरुवासरे अद्य श्री
 योगिनीपुरे ममस्वाजावलि शिरोमुकुटमणिकयस्वचित नखरश्मौ सुगत्राण श्री मम्मदसाहि नाम्नि मही विभ्रति
 सति अस्मिन् राज्ये योगिनीपुरस्थिता अप्रोतकान्वय नभः शशाक सा० महिपाल पुत्रेः जिनचरणकमलचचरीकेः
 सा खेत् फेरा साढा महाराजा तूपा एतैः सा० खेत् पुत्र गल्हा आजा एतौसा० फेरा पुत्र वीद्या हेमराज एतैः
 वर्म्म कर्म्मणि सवोर्धमपरै ज्ञानाचरणीयकर्मक्षयाय भव्यजनाना पठनाय उच्चपुराणा पुस्तक लिखापित । लिखित
 गौगान्वय कायस्थ पडित गवर्ध्व पुत्र वाहड राजदेवेन ।

संवत् १६२३ वर्षे पोष बुदी २ शुक्रवासरं श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचपावतीमन्वये महाराजाधिराज श्री भारमलकछवाहा राज्ये श्री मूलसधे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्द देवा स्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तपट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवा स्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तपट्टे शिष्यमडलाचार्य धर्म चन्द्रः तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ललित कीर्तिस्तदान्नाये खडेभ्रवान्त्वये अजमेरा गोत्रे साहा चापा तद् भार्या सोना तत् पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सधभारधुरंधर जिनपूजापुरदर साह जाटा द्वितीय साह दामा । मा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह-नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू मा० खेता भार्या खेतलदे । तत्पुत्र २ चि० वेणा गोपाज्ञसाह । चैहथ भार्या चादगादे तत्पुत्र धर्मदास । साह दासा भार्या दौडडे तत्पुत्र चि० पदारथ भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथाग्रिथा दुतिय पुत्र बरहथ भार्या सरदे एतेषां मन्वये इदं शास्त्र लिखापित शील शालिनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी । अर्जिका श्री मुक्ति दत्त ।

प्रति न० २ । पत्र सख्या २६ । साइज १०३×४३ इञ्च ।

संवत् १६१२ वर्षे भाद्रपदमासे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीतयोगे तत्तकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसधे नद्यान्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्ददेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा । तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवा स्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्ति इवा स्तदान्नाये खण्डेलवान्त्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीजा तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइद द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० गोकल । सा० गोइद भार्या सोढी तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पासा दु० सा० आसा तृ० सा० आरहा चतुर्थ सा० पचाइणा । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० कवरा भार्या कवलश्री द्वि० विगेह तृ० चिरजी हरा । सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या श्रियादे द्वि० वाखा, तृतीय सा० आरहा भार्या सुहागदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृगारदे, द्वि० चि० हेमा । चतुर्थ सा० पचाइणा भार्या पोसीर तत्पुत्रौ द्वौ । प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड । द्वि० सा० भार्या चांदौ तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० वोहिय, द्वि० सा० वाजा, सा० वोहिय भार्या बालहदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह सुरत्राण द्वि० साह साधु । सुरत्राणा भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरत्राणादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल द्वि० सा० साणु भार्या साहिवदे । द्वि० सा० वाला भार्या बहुरगदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० सारग द्वि० माधो । तृतीय सा० गोकल भार्ये द्वे प्रथम उदी द्वि० नोलादे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुभा द्वि० सहसा । प्रथम सा० कुभा भार्या कुभलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चित्राण द्वि० चि० पदमा । द्वि० सा० सहमल भार्या सिंगारदे एतेषां मध्ये साह वोहिय भार्या बालहदे इदं शास्त्र कल्याणकत्रतउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय दत्त ।

८. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता श्री मुनि कनकामर । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ६२ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ४०-४६ अक्षर । प्रति स्पष्टतया सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्डु का जीवन ।

किन्तिममतियकहवयथरुइ , जसुगुण लित्ती सरमइ सकइ ।
तहो सुय आहुत्तगल्हेराहुल , मुशिरुणायामर पयउव्वाहुत्त ।

वत्ता

तहु आणुगएयउ चरिउ , मइजणवए पयडिउ मणुहणउ ।
ते वधवपुत्तकलत्तमहु , चिरुणदउ जार विससिहरउ ॥

इय करकडुमहरायचरिए मुशिरुणायामर विरइए भव्वायण कण्णाययस्ते पचकल्लणविहाणकण्ण तरुफलसपत्तो करकडु सवत्थसिद्धिजाहो णाम दहमो परिच्छेउ समत्तो ।

संवत् १५८१ वर्षे चैत्र बुद्धि ६ गुरुवासरे घट्याली नाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाम्नाये खडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्ष साह काविज तद्भार्या कावलदे तयो पुत्रास्त्रय प्रथम साह गूजर द्वितीय साह रावो जिनचरणकमलचचरीकान् दानपूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्तचित्तान् सम्यक्त्वमतिपालकान् श्री मर्षजोक्तधर्मान् रजितचेतसान् कुटुम्बसाधारकान् रत्नत्रयालकृतदिव्यदेहान् आहारौपधा भयशाम्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो सह बहुराज तद्भार्या प्रतिप्रतापदा तस्य पुत्र परमश्रावक साह पचाइणा तद्भार्या सीलवती प्रतापदे तत्पुत्रा सा० दूल्ह एतेपा मध्ये साह बहुराज इदं शस्त्र लिखाप्य रत्नाय इह भोजा जोगी दत्तं ज्ञानावरणाक्षयार्थं ।

९. कर्मप्रकृति

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र । टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत । संस्कृत । लिपि संवत् १७७७ विषय-सिद्धान्त । मडलाचार्य श्री वर्मचन्द्र के शासनकाल में नागपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी । ग्रन्थ समाप्ति

इति प्रायः श्री गोम्भटसारमूलात् टीका च निकाय क्रमेश एकिकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता ।

संवत् १५७७ वर्षे आपाठ सुदी ३ श्रीमूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये देह वास्तव्ये पहाड्या गोत्रे सा० ऊधा तद् भार्या लाडी तत्पुत्र सा० फलहु भार्या गुणसिरि तत्पुत्र पचाइणा इदं शास्त्र नागपुर मध्ये लिखाप्य प्रदत्त ।

प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३३-३६ अक्षर । टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र । प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है ।

संवत् १९७७ वर्षे वंशाख बुदी ४ शुक्रवासरे भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदात्मनाये खटकडिपुरे ३३व श्री राव नरवदेवराज्ये वधेरवालान्वये कोट्वागोत्रे सा० गणा तद् भार्या वाल्हू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू भार्या सीलव्रतलयमगुणादिसयुक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह वोहित साह खेता नामान्स्त्रयः । भोलू भार्या मन्दना वोहित भार्या गजो प्रथमा न्यासंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा, लाला, लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र वधेरण । जीणा भार्या देउ तत्पुत्र नरमिह । खेता भार्या करमैती एतैः शास्त्र लिखाण्य सत्पात्राय मुनि माघन दिने दत्त ।

१३ चन्द्रप्रभञ्जित् ।

रचयिता महाकवि यशःकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२० । साइज १०×४॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३०-३४ अक्षर । विषय-चरित्र ।

मगलाचरणा—

नमिऊणा विमलकैवलच्छी सव्वगदिगणापरिरंभ ।

लोयालोयपर्यास चदप्पसामियं सिरसा ॥ १ ॥

तिकालवळमाणं पचवि परमेठ्ठिए ति सुद्धोह ।

तह नमिऊणा भणिएस चदप्पह सामियाओ चरियं ॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

धत्ता

इय सयलवि सुरवइ

पचमकल्ल गहो सुक्ख

ज सुद्धु अस्सुद्धउ गथचारु

न जिणात्राणा खमउ सव्वु

जे परमेसर जाणाहि अपारु

मुणिएणुपडिय मेल्लिवि कसाउ

गुज्जदेसई उमत्तगामु

सिद्धउ तहो गादणु भव्ववधु

तहु सुउ जिद्धउ वहुदंभुभव्वु

तहु लहु जायउ सिरिकुमरेसिहु

जिणसथुइ परभत्तिभेयभरसडा ।

णिहाणाहो करिवि ठाणिएसपत्ता ॥

ज सारु असागउ वहुपयारु ।

महुकविगहिल्लहो विल्लमउ अगण्वु ।

ते सोहिवि सोहिवि कुणाहे सारु ।

भोहतु मुणिए व इह मुहपसाउ ।

तहिं छदासुउहुउ दीयाणामु ।

जिणाधम्मु भारि ज विणुणु खुधु ।

जि धम्मकज्जिविक्कण्डिउ वव्वु ।

कलिकाल करिवहो णणाणासीहु ।

१४ जम्बूस्वामि चरित्र ।

रचयिता श्री वीर । भाषा अष्टाश्रया । पत्र सख्या ७६ । साइज ११×४॥ इन्द्र प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३६-३६ अक्षर । ६२ वा पृष्ठ नहीं है । रचना सवत् १०७६ लिपि सवत् १५१६ । विषय—अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन ।

मगनाचरण—

विजयतु वीरचरणगि चंपि मदिर्मि थरहरिए ।

कत्रसु छलततो ए सुतरणि जगत विंदु छकारा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जंबूस्वामिचारिए सिंगारवीरे महाकव्वे महाकइदेवयत्तसुय वीर विरइय बारहअणुपेहाउ भावणाए विज्जुचरस्स सव्वह सिद्धिगमण नाम एयारसमोसंवी परिछेउ सम्मतो ।

प्रशस्ति—

वीरसाणासयचउक्के

गिन्वारा उववरणे

विक्रमगिणवकालाउ

माहम्मि सुद्धपक्खे

सुणिय आयरियपर

वहुलत्थपमथपय

इत्थेवदिणेमेहवरापट्टणे

तेणावि महाकइणा

वहुरायकलधम्मत्थ

वीरस्स चरियकरणे

जस्स कयदेवयत्तो

सुहसीलसुद्धवंसो

जस्सय पसरणावयणा

सीहल्ल लखणाका

जाया जस्स मणिट्ठा

जीलावइ तितईया

पढमकलत्त गरुडो

विणायगुणमणिगिहाणो

सो जयउक्कयवीरो,

पाहाणामर्य भवणा

सत्तरिजुत्त जिणेदवीरस्स ।

विक्रमकालस्स उप्पत्ती ॥ १ ॥

छाहत्तरदससए सु वरिसाण ।

दसम्मी दिवसम्मी संत्तम्मि ॥ २ ॥

पाराए वीरेण वीरणिदिट्ठं ।

पवरमिणा चरिय मुद्धरिय ॥ ३ ॥

वह्ममाणजिण पडिमा ।

वीरेण पयट्ठिया पवरा ॥ ४ ॥

कामगोदंठीविहत्तसमयस्स ।

इक्को संवत्तरो जगो ॥ ५ ॥

जणाणोसक्कचरियलद्धमाहणो ।

जाणाणि सिरिसत्तुआभणिया ॥ ६ ॥

लहुणो सुमइससहोयगतिणिण ।

जसइणामेत्तिविखाया ॥ ७ ॥

जिणचइ पोमावइ पुणोचीया ।

पच्छिमभज्जा जयादेवी ॥ ८ ॥

सत्ताण कयत्तविडविपारो हो ।

तणाउ तह णोमिचदोनि ॥ ९ ॥

वीरजिणादस्स करिय जेण ।

पियरुहे सेण मेहवणे ॥ १० ॥

पूयगात्रयगात्रामय पाणपोद्दु,	अवमयमहामइदलियदुदु ।
जिगाणहवगात्रचचगा पूयगामयत्तु,	अहिगाणियगिहि लविगणायचित्त ।
मेच्छत्तच्छत्रेयगात्रइल्लु	गभोरपरमगामयमइल्लु ।
जिगापरिभावगात्रच्छल्लमल्लु	सम्भत्ता हरगामममहल्लु ॥
किइल्लवेल्लिगिणल्लुरगिल्लु,	भायरसुवलक्खगाणेह गिल्लु ।
परिवारभारउद्धरगाधीरु,	जिगाण्णवारिपावगासरीरु ॥
पविहियतियालवेदणविसुद्धि,	सुवमत्थभावभावगात्रमुद्ध ।
बहुसेवयमारिसरघट्टपाय,	वदीगाहदीगाहदियगाचाय ॥
भोयगिहियपोसियसूरिवंदु,	सउलामरवहकयचदुवदु ।

घत्ता

तहो सोहणाहो रसाजहो भोयपराजहो—

कलकणिदुच्छसहोयर ।

च्छहविमहामइ सोहणारिउवल सोहण—

गुणारोहणविहियायर ॥ १ ॥

गाहुलु साहुलु सोहणमइल्लु, तह रयणु मयणु सतणु जिच्छइल्लु ।
 च्छहमहिभायर अल्लहाहोभत्त, च्छहमविहो माणासत्तचित्त ।
 च्छहमवितहो पयपयरुहदुरेद, च्छहमयणोवयवामदेह ।
 साहु जहु सुपियपियममणुज्ज, गामे जयताकयणिल्लयकज्ज ।
 ताह जिगाणु लक्खणु सल्लक्खु, लक्खेण लक्खिउ सयदणदलक्खु ।
 विल्लसियविल्लासरसगलियगच्च, ते तिहुअण गिरि गिणवसतिसव्व ।
 सो तिहुवणागिरिभगउ जनेण, चित्तउ वलेण मिच्छहि वेण ।
 लक्खणु सव्वाउसमाणुसाउ, विच्छोयउ विहिया जगियराउ ।
 सोइत्थ तथहिडंतु पत्त, पुरे विल्लरामि लक्खणु सुपन् ।
 लोक्खणाहो समउ सो करइ पणाउ, विग्गदा गंदणु सम्माणावणाउ ।
 दिण्णि दिण्णि त अइसय बुच्छिजंतु, ताहि जिसणेहु गिण्णरुमहतु ।
 असराजवारिपोसियसरीरु, भवए पवुट्टए मेहुणीरु ।
 तइ गाहाउ गिण्णरु तुसारु, ज एयारहमए मासिफारु ।
 ज जिट्टइ गिट्टरु तवइ सुरु, खर कर पर्यंडवस्सडपुरु ।
 चिरु वट्टइ भोकह चित्तं तं जि, सुवणाहो सुवणेसहु येहुजजि ।

अणुहु जिवि संसारिय सुहाइ. सव्वइ दिव्वइ पयलिय दुहाइ ।
उव्वहि थाहिल सुह रस पयासि, पत्थइ गत्थइ शिावुइ गिासि ।

घत्ता

बारहसय सत्तरय पचोयत्तरं, विक्रम कानि विइत्ताउ ।
पढम पाक्खि गवि वारइच्छुट्टि सहाइइ, पूसमासे सम्मत्तउ ॥ ३ ॥
जो भुवणासरा समसरणासामिणि, सामि सालसुविसाल ।
सिरिहरहोतेमहता अरहंतादि तु कुल्लाया ॥ १ ॥
जे सुपसिद्ध सुद्धिरिद्धि था बुद्धिअद्धणुद्धारा ।
धर धीरधम्मधत्थाते सिद्धासिद्धिनहोदितु ॥ २ ॥
जसरममंडकोवडदडउळडकंडखंडयाया ।
शिाच्चड गुणकरडात्तिसूरिदितुस्सुहं ॥ ३ ॥
शिास्सारसारसंसारसायरेतरणातागगातरडा ।
ते तस्स महियमोहावोहद्धीदितुज्झाया ॥ ४ ॥
गाड्डुदुदुमयकट्टभट्टायातिट्टगठिणिट्टवणा ।
शिाट्टाएणिट्टियगा ते साहू दितु मगलयं ॥ ५ ॥
डुद्धर्मिदियकम्महियसम्मसामयमयणिम्महाहरिणाराउसिवमग्गदावतु ।
ससागडडिणिविडविडवियडतोडणासपावउ ।
सम्मत्तसणाणाणारु सम्मच्चरियविसालु ।
तरयणात्तउ सिरिहरहो अहिरक्खउ चिरुकालु ॥ ६ ॥
इति पडित्त जाखू विरचित्त जित्तदत्तशास्त्र समाप्त ।

संवत् १६११ चैत्र बुदि ११ सोमवासरे श्रवणनक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्रगढमहादुर्गे श्री नेमीश्वर
चंत्याजये राज श्री भारमल राज्य प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सुरस्वती गच्छे नंदाम्नाये श्री कुन्दकुन्दा-
चार्यान्वयेशिष्यमडजाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्
शिष्य ब्रह्म वेगो इदं शास्त्रं भीवीनाय पठपार्थं दत्तं ।

१६. धनकुमारचरित्र ।

रचिता श्री पं० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ५१ साइज ६॥×४॥ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
६ पंक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे २८-३२ अक्षर । प्रति अस्पष्ट है । लिपि संवत् १६३६. ग्रन्थ कत्ता ने प्रारम्भ
और अन्त दोनों स्थान पर प्रशस्ति लिखी है ।

तद्दु भञ्जा सील गुणस्त खाण, सञ्चहियणइ तिथयरवाणि ।
 तिहुवण सिरि सुणियण पयविणीय, सिरि हरसिरिजिमराहवहु नीय ।
 एय्हें सज्जणिश्च चारिपुत्त, लक्खण लक्खकय विणयजुत्त ।
 गियकुलमयकु पुण पढसु ताह, मुल्लणुजिमाहु पयडउ जसाह ।
 वीयउ पुण कुहयणजणनिव सु, सिरि सूले णामे जसपयासु ।
 तइयउ एदणु सयणावय रु, सिरि कामराजु णामेण साहु ।
 चउयउ एदणु आसणियावासु, आसलु णामे सो कुल पयासु ।
 एयहि जो पढमउ गुणगरिद्ध, सिरि मुल्लणुणामे साहु सिद्धु ।

घत्ता

आरउणपुरवरे सुहलत्थीवरे, तहि पदुवइरिणिकदणु ।
 तोसर कुलमइणु अरि सिरिखडणु, सिरि गणोस णिवणांदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

एदउ जिणसासणु दिरियविणासुणु सुहसयसासणु गुणभरिउ ।
 अरु सत्थसमिधउ वणणहिसुवउ एदउ मदियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥
 एदउ महिवइ णापवीणु, एदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।
 एदउ सुधम्मु सिवसोखयारि, एदहु जइवरवयभारधारि ।
 इक्खायवसमंडणमंयकु, सिरि पुण्णपालसुउ विगयसकु ।
 एदउ मुल्लणु णामेण साहु णिरादेवल्लहु दीहवाहु ।
 महुहोज्जउ विमलसमाहिवोहि, जादुग्गइ गमणहु पाहणारोहि ।
 गियकाले वरसउ मेहमाल, गिहगिहि ससुहु मगत वमाल ।
 वहु अथसमिद्धउ चरिउ एहु, परिपुण्णकरि-विसवेयगेहु ।
 पडिणसमाप्पउ पावणासु, मुल्लणुहुहाथपयडयपयासु ।
 तेण जिणिय सीसिचडाविऊण, पुणु पंडिउ पुज्जिउ पणमिऊण ॥
 लेहात्रिविहुपुथयजितेण, महिविथारिउ पुणउ सुवेण ।

घत्ता

गुणसुणिहु पसाए पयडियराए सिद्धउ कवर सायणु ।
 सोवाइ जतउ अथ सयतउ, वट्टउ सुहसयभायणु ॥ ४ ॥

संवत् १६३६ वर्षे फाल्गुन मसे शुक्लपक्षे सताम्यां तिथौ अक्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी विराजमाने मारुवाड देशे श्री मेदनीपुरुवरे अज्ञानातमरदिनकर विधुरिजिन-शरणमज्जनानन्द नृमवर लक्ष्म वल्लभे राज श्री पातिसाह श्री अक्कव्वर जलालदीमहंमदराज्ये । पायदामह-मदखानराज्ये श्री मूनसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलकमलिनीविकासनमर्त्ताण्ड भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोव्वहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभकुभविदारणैक केशरा भट्टारक श्री प्रभाचन्देवा स्तत् द्वितीय शिष्य दुद्धरपचमहाव्रतधारणैकप्रचड श्रीमत् मडलाचाये श्री रत्नक र्ति तत् शिष्य पचाचारचरणचतुगान् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमत् भुवनकीर्त्ति तस्य शिष्य मडलाचाय श्री धर्मोर्त्ति भव्यकुमुदविकासनेक निशाकर द्वितीय शिष्य मंडलाच य श्री विशालक र्तिः तस्य शिष्य दुद्धरपचमहाव्रतधारणैक प्रचड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र स्तदाम्नाये खडेलवालवशे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह फाल्हा भ र्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह वोहड द्वितीय पुत्र माह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्रः सोलव्रतावगाढ परिपालान् श्रीमत् सुदशनावतार साह श्री लूणा तस्य भार्या लूणादे तस्य पुत्र साह श्रीवत भार्या सुहलालदे तस्य पुत्र द्वितीय साह चि० वीदा द्वितीयपुत्र चिरजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री लूणाकेन पुण्यार्थेन पुस्तकं लि प कारायित बाई श्री करामाई केन घटापित ।

१७. धर्मपरीक्षा ।

रचायिता प० हरियेण । भषा अपभ्रंश । पत्र सख्या द्द साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रांत पक्ति मे ३०-३५ अक्षर । विषय-धार्मिक । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रारम्भिक पठ—

सिद्धि पुरधिहि कतु, सुद्धे तणु मणवयणो ।
 भक्तिण जिणु पणवेवि, चित्तिउ वुहहरिसेणो ॥ १ ॥
 मणुण जम्मि बुद्धिण कि किज्जइ, मणुहरजाइ कव्वुणरइज्जइ ।
 त करत अविद्याणिय आरिस, होसुलहहि भडरणि गय पोरिस ।
 चउमुह कव्वु विरयणि सयभुवि, पुप्फयंतु अण्णणु गिसुंभिक्कि ।
 तिण्णिविजोय जेण तं सीसइ, चउमुह मुहथियतावसरासइ ।
 ते एव विहइउ जडमाणु, तह च्छंदालकार विहीणउ ।
 कव्वुकरतुक्केमणविलज्जमि, तह विसेस पियजणकिह रजामि ।
 तो वि जिणिण्ण धम्मअणुणायइ, वुहसिंरिसिद्धसेणसुपसाइ ।
 करमि सइ जिणलिणिदलथिचजलु, अणुहणेइ गिरुवसु मुत्ताहलु ।

ते एदहु जे भक्तियभावहि,^१ तेएदहु जे लहहि लहावहि ।
 ते गिय परदुह दूरि लुढावाहि,^२ जो पुणु केविहु पढहि पढावहि ।
 ताण गिरतर सोक्खड सुहडहि,^३ एयहु अत्थुकेविजे पयडहि ।
 जे गिसुणेविपरिक्खहि भक्तिय,^४ ते हुं जहि गिम्मल मइ सत्तिय ।
 सयल पाणि वग्गहो दुहुहिज्जउ,^५ सोसमिडिय महिसोहिज्जउ ।
 परहिय करणि भिहडिय अहहो,^६ होउ जिणत्तणु चउविह संवहो ।
 पयडिय पहुपयावआरिवारिं,^७ एदउ भुवइ सहो परिवारि ।
 वम्मपवत्तणोणणदुहहारें,^८ एदहु पयवहु अइववहारें ।

धत्ता

संखदुसहसुसयाहिउ सदरसयाहिउ, इउकहरयणु अगव्वहं ।
 जाहरिसेणधराधर ववहि गयणुधर, तामजणउं सुहु भव्वहं ॥
 इय वम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिडियाए वुह हरिसेण कयाए पयारसमो सधि परिछेद सम्मतो ।

१८. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री महाकवि पुण्डित । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७०. साइज ११x५ इञ्च । प्रत
 पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३७ अक्षर । लिपि सवत् १६१२.

मंगलाचरण—

पणवैपिणु भावै पचगुरु, कलिमलवज्जित गुणभरिउ ।
 आहासमि सुयपचमिहि फलु, गणकुमारचारुचरिउ ॥ प्रुवक ॥

महाकवि ने पारम्भ मे अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

धत्ता

सिरिकन्हरायकरयलि गिहियां, असिजलवाहिणि दुग्गयरे ।
 ववलहरसिहरहयमेहउले, पविउल मण्णखेडणयरे ॥ १ ॥

१ दावहि २ हरे ३ जे जुं ४ आरिषारें ५ संखए दुसहसुसयाहिउ इय कययणु अगव्वह । जो हरिसेण
 धरापरउ यद्विगयणिवर तामजणहु मुहु भव्वहं ।

पदु भक्तिए हंणु वसुमाणु दिहु, पर एणणु ए वाणरु एरु विमिहु ।
 मंगौउ संचे जंणियतुट्टि, पर एणणु ए वइरिहिं देउ पुट्टि ।
 धम्मणेण जु हिट्टिल्लुं वम्मणत्तु, पर एणणु पत्रासदुहिंण चत्तु ।
 चाएण कएणुं जणदिण्णचाउ, पर एणणु न वधुहु देइ वाउ ।
 कतीए मणोहरुं छेणसंसकु, पर एणणु एउ दी इ कलकु ।
 गेरुयात्तिं मांहिसुविमुद्धचारिउ, पर एणणु ए किडिदाढइ धरिउ ।
 सुंथरत्ते मेरु भणत्तिं जौइ, पर एणणु पुरिसु पत्थरुण होइ ।
 सांयरु व गहीरुं रुयांयरेहिं, पर एणणु ए मथिउ सुवरेहि ।

धत्ता

जो वेणिएउ वणिएउ वरकइहिं, आवे णियमणि भावहि ।
 तहु एणणुहु केरउ एणमु तुहु, सुललियं रुवि चडावहि ॥ ४ ॥
 णिच्चेलत्तणु वेसालु चणु, णिच्चणिएमेज्जादेहाउचणु ।
 न्हाणविवज्जणु दताधोवणु, कालेइ एोरसु पगवसु भोर्यणु ॥
 वरणिसयणु रइरससकोयणु, दृसहदसमनयमुहनिवणु ।
 पिसुणाकोसणु ताडणु वधणु, चडुयायंनदंलंकपवणुइ ॥
 धाराहरजल धारासवणइ, सिसिरोसाकणहरमरु वेयइ ।
 हिमपडणइ निदुट्टणु तेयइं, उन्हइ सोसियंगरसभेयइ ॥
 वणतरुणिएहसणु सिहि सिहव नणुइं, गुहगयंभीमौरसहवसणुइं ।
 कठोलांविचिसहरचलणइ, सीहावघजीहादंलंघुलणुइं ॥
 कोलघोरघोणुणिएल्लुणणुइं, सवंगयंगंइयंकंइयंकुंडुयणुइं ।
 एव माइदुक्खाइ सहेप्पिणु, रणिएवसैप्पणु-भिकखचरैप्पिणु ।
 सत्तु वि मित्तु वि मरिसु गणैप्पिणु, मिउ भुं जेप्पिणु णिंदंजणैप्पिणु ।
 भोयभुर्यंगच्चिउ सुमरेप्पिणु, मणिएजंगभगुरत्तु भावंपिणु ।
 सुक्कज्जाणु मणि आऊरेप्पिणु, मोहमहारिं राउं मिल्लेप्पिणु ॥
 कम्मरुसायराय तडेप्पिणु, दढरुमदुगठि मिल्लेप्पिणु ।
 जुत्तायारु तिरुत्तिहिं गुत्तउ, चउहु मि तेहिं रिसिहि सजुत्तउ ॥

धत्ता

कति अणणु अणणु हुउ, पत्तंउं मोक्खुं अणंगवियारउ ।
 पुंफयतंसुरणमियपहु, पसियउं एण्यकुसंकि भडासु ॥

उपयणउ दीवा उरिरवणु ।	बुहु माणिकु शामे बुडहि मणु ।
तत्थतरि सावउ इक्कुपत्तु ।	वयदाणसीलसियमेणजुत्त ।
बुहयणरजणु गुणगणविसालु ।	विच्छिणवत्थदिप्पतभालु ।
घमत्थममसेवतु सतु ।	तस जीवदयावक सारमहंतु ॥
मेरुवधीरु गुणगणगहीरु ।	जिणगधो वयाणम्मलसरीरु ॥
णरवइ सहमडणु सव्वभासि ।	गोहाणगोहु सुयसीलरासि ।
चटुव्वभुवणसतावहारि ।	वररुवमडणणउ ण मुरारि ।
छहअंगवहूमिउ ण महेसु ।	मदारयपुज्जिउ णमहेसु ।
जिणपयसी सारुउ खीलकेसु ।	रमदंसणपालउ सुयणतोस ।
सिरि ठाकुराणि जिण धम्मधुरधरु ।	सुरवइ करभुयजुयलेहि विमलु ।
सिरि जइसवाल इक्खाक्कुवस ।	चउजगसीणदणु सुच्छवंस ।
टोडरूमलुणामे घरपयलु ।	ज कित्ति तिलोयह पूरिथिरु ॥

घत्ता

ते आइ वि जिणहरि णयणाणंदणि, अइणाहु जिणवदियउ ।
पुणु दिट्ठउ पडिउ भवियणमडिउ, अइविणय अठ्ठत्थियउ ॥

अष्टमी सधी परिच्छेद के वाद—

जइसवाल कुलसपन्नो, दानपूयपरायणः ।
जगसी नदनः श्रीमान्, टोडरमल्लु चिरजियः ॥
वस्तुपाल इव खयातो, मध्यलोके वभूव यः ।
टोडरमल्लु ते साध्वो, वद्धंता काग्रलोचने ॥

अन्तम पाठ—

सिरि णायकुमारचरिउ खालु, पभणुउ कइयणपुव्वहि ।
जो भव्वहभासइ लिहइ सुणइ मइ ते सिवसुहु माणिकक लहहि ॥

इय णायकुमारचारु चरिये विबुहचित्तारजणु पडिय सिरिमणिककराज विरइए चउधरी जगसी
पुत्त राइरजण टोडरमल्लणामणिए सिरि णायकुमार वालि महावालि छेया भेया णिण्णण गमण णवमो
सधि परिच्छेउ समत्तो ।

प्रशस्ति—

णदउ जिणवरिंद जिणसासणु । दय धम्मु विभव्वह आसासणु ।
णंदउ णरवई पइपालतउ । णदंउ सुणिगणु सुत उतवंतउ ।
णदउ जिण सुहमाग्गीचरतउ । भवियणु दाणपूयविरयतउ ।

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादिस्थराज्ये सवत् १५६२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पचम्या तिथौ भौमनामरे श्री गलत्र शुपस्थाने श्री पातसाहि हूमायु राज्यप्रसिद्धमाने श्री काष्ठासधे माथुरान्वये पुष्कर-गणे श्री भट्टारक श्री मन्त्रयकीर्त्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि क्षीमकृत्तिदेवान् तदा-म्नाये मुनि श्री थमभूषणदेवान् तदांम्नाये ब्रह्मचारा मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पण्णा एतत् इक्ष्वाकुवंशे श्री गोत्रे भडारी श्री जयमवाल वशांम्नाये श्री पचदशलाक्षणीकव्रतपालकान् पचमी उद्धरण घोर साधुवस्थावसे तस्य भार्या शीलतोयतरिणी विनय वागेश्वरी तस्य नाम सुनखी । तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासु— ।

२०. पञ्चपुराण ।

रचयिता श्री, प० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ६०. साइज १०।।४४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तिया तथा पति पक्तिमे ५०-५४ अक्षर । विषय—पुराण । प्रति जीर्ण अवस्था मे है । लिपि सवत् १५५१ ग्रन्थ का दूसरा नाम बलभद्र पुराण भी है ।

मगलाचरण —

पण्यविद्धं सणु मुणिसुव्रयजिणु,
सिरि रामहु केरउ सुक्खजणोरउ,

पण्यवि बहुगुणगण भरिउ ।
सह लक्खेण पयडमि चरिउ ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

सिरिआइणाहु भव्वयणइड्डु,
पुणु सनिपहु धम्मामयसवतु,
तहि सति वि जीवदयापहाणु,
पुणु वदमाणु चरं मल्लुदेउ,
पुणु ताह वाण्णिज्जाए विचित्ति,
पुणु इड्डभूत्ति गणहरु णवेत्ति,
पुणु ताह अणुक्कमि देवसेणु,
पुणु विमलसेणु तह धम्मसेणु,
तह सहसकित्ति आयमपहाणु,
गच्छह नाइकु सिद्धि गुण मुण्णिदु,

पणवेप्पिणु लोयत्तयवग्गिड्डु ।
भव्वयणहु भव्वतएहासमतु ।
जि भासिउ महियत्ति विमज्जणाणु ।
सो सव्वह जीवहं केरउ, सेउ ।
लोयत्तमगामिणि वण्णादित्ति ।
सो धम्मु वि जवूसामि तेव ।
इदियभुयगण्णिहलणवेणु ।
मिरि भान्णसेणु गयमात्रेणु ।
तह पट्ठिणि सन्नउ गुणनिहाणु ।
सद्धथपयासणु विगवेत्तदु ।

वृत्ता

तहु पट्टि जईसरु णिहयर ईनरु
तहु सिसु पहाणउ तव्वयठणणउ,

जसकित्ति वि मुणियणतिलउ ।
खेमचदु आयमणिलउ ॥ १ ॥

गुरुभज पावित्रि करणीउ एम
चित्तिव्वउ दसणु णाणु इट्ठु,
धम्मु जि दहलक्खणलोयसारु,
विणु धम्मं जीउ ण सुखि थाई,
इह चिंतवि पुणु गउ साहु तत्थ,
वहु विणएणं पुणु विणएणतु तेण,
भो रइधू पडिव गुणणिहाण,
सिरिपाल्ह वम्ह आयरियसीस,
सोढल णिमिच्चि रोमिहि पुराणु,
तह रामचरिणु विमहु भणोहि,
मुहु साणुराउं कहमिच्चजेणं,
मुहु णांसु लिहहि चंदहु विमाणि,

भवदहिणिवडणुणो होइजेम ।
चरणु त्रि पुणु लोयत्तय चरिद्ध ।
सेविव्वउ एतु भवणसारा ।
ति विणु केरवेडिउ विसयलु जाइ ।
अच्छइ पिडिउ जिणगेहि तत्थ ।
कर आरोपेणु णियेसरेण ।
पोभावइ वरवसह पह ण ।
महुवयणु सुणहि भावुह गरीस ।
विरयउ जहपइ जण विहियमाणु ।
लक्खण समेउ इउमाणु मुणोहि ।
विणएणमिच्चु अवहारि तेण ।
इय वयणु सुद्ध णियचिच्चिठाणु ।

धत्ता

इय णिणुणिविंइ भपियसवणइ,
हो हो किं वुत्तउ एहु अजुत्तउ,

पडियण ताउत्तउ ।
इउ गह कम्मं गुत्तउ ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

भवम्ह गुणगंदउ कियसु कम्मु,
राउवि णदउ सुह पयसमाणु,
णदउ पुणु हरसीहसाहु एत्थु,
सह अ गिमंतु जसु फुरइ चित्ति,
सिरि रामु चरित्त विजेणएहु,
तहु णंदणु णामं करमसीहु,
सो पुणु णंदउ जिणचलणभत्त,
सिरि योभावइ परवालवंसु,

अरु णदउ जिणवर भणउ धम्मु ।
णदउ गोवगिरि अचलठाणु ।
जि भाविउ चयण गुण पयत्थु ।
कलिकालधरियजिन्नाणि सत्ति ।
कराविउ सव्वहं जणिय रोहु ।
मिच्छतमहा उयदलणसीहु ।
जो रायमहायणि माणु पुत्त ।
णदउ हरसी सघवी जससु ।

धत्ता

वालोहमहणसिह चिरुणदउ इह,
मोह्लिक सम्माणउ कलगुणजाणउ,

रइधू कइतीयउविधरा ।
णदउ सहियलि सोवियरा ।

इय बलहइ पुराणे वुहयणविदेहि लद्धसम्माणे सिरि पडिय रइधू विरइय पाइयवघेण अथ विहिसिधेण

प्रियछदाणुग मिनी बधू जटो तयो पुत्र दुइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुदरी । साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकारी जिनप्रातष्ठाकरण इद्रस्वरवतारा भूपति सभा शृंगारहार चद्रमा इव द्योतकारी विवेकसुन्दर साधुमनोहर तस्य भा मणा प्रियछदाणुगामिणी भार्या नगीना तयो पुत्र चतुरभुज तस्य भार्या भागर्जती एतेषा मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विधदान-दायक साह अग्रमल्ल तेनेद शास्त्र बलभद्रपुराण लिखापित । लिखाय करि वाई जिंदो नैदत्त पठनाथ । लिखत पाडे केना । शुभ भवतु ।

२१. परमेष्ठि प्रकाशसार ।

अपभ्रंश । पत्र सख्या १८८ साइज ६।४४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३ ३६ अक्षर । प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है । विषय धर्म । प्रति प्राचीन है ।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

घत्ता

गयसासयठणइ सिद्धपहाणइ,
इय पणपरामिट्ठिहिं केवलदिट्ठिहिं,

कम्मरहिय गुणअट्टजुवा ।
रयणत्तयलदिकम्मचुवा ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशम्ति—

घत्ता

इय सिट्ठिसरुवइ सिवसुहदूवइ,
सुयणाणणिरिक्खवि,
इय परमिट्ठि पचजगसारइं ।
तह गुणपयडइ जिणवरवाणी ।
गणहरदेवपमुहमुणिरायइ ॥
इदपमुह जे सुरवरवग्गइ ।
तहं पडिविवतियजहजत्थइ ॥
तह अणु मग्गमुणिविदइं ।
तह गुणपूयरयहिं जे भव्वइं ।
जे तहिं थुत्त पठहिं तयक लइं ।
ते तह णाम जवहिं एरुग्गइ ।
हो हिं अमरणर सुक्खविरायइं ।

णिसुणि वि जेण्णच्छउ करहें ।
सुमण्हिरि वि धम्म अहिंसाते घरहें ॥ १ ॥
भवियह जे भवदुत्तरतारइ ॥
जा तयलोयपवित्तपहाणी ॥
पयडहिं ते चहुंरिद्धिवरायइ ॥
मुण्हिणो तह गुणगणइणि सग्गइ ॥
सुरणरअक्कहिं ते सुपसत्थइ ॥
पुज्जणिज्ज ते तिहुयण चंदइ ॥
पूयहिं ते हिं ण रामरसव्वइं ॥
तह थुइ करहिं अमरअसरालइं ॥
जे तह धम्मचित्त अणुरायइ ॥
जे तह धम्म पसंसहिं चिसइं ॥

तेहि लिहाइ णाणगथइ । इय हरिवसपमुहसुपसत्थइ ।
 विरइय पढमत्तमहि वित्थारिय । वम्मपरिक्खपमुहमणहारिय ।
 पढहिं भव्वजह पडिय लोइयइं । सातहोइ सुणि अत्थमणोयइ ।

घत्ता

पुरणयरणरेसह गोमह देसह—
 मुण्णगणसावयलोयसहें ।

धणुकेंणु मणिसारइ धम्मद्वारइ

करहि सात्त परमिद्धिपहो ॥

इय परमिद्धिएयाससारे अरुहादिगुणेहि वरणणाणलकारो अप्पसुद सुदकित्ति जहासत्ति महाक
 विरयतो णाम सप्तमो परिच्छेउ संमत्तो इति परमेष्ठिप्रकाशसार ग्रथ समाप्तः ।

२१. पाण्डवपुराण ।

रचयिता मुनि श्री यश.कीर्त्ति । भ षा अपभ्र श । पत्र सख्या ३४७, माइज १०॥४४॥ इअ । प्रत्ये
 पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८ । ४२ अक्षर । लिपि सवत् १६३६ रचना सवत् ।
 प्रारम्भिक भाग—

वोयसु सरधयरट्टहो गयधयरट्टहो सिरिलालमु सोरट्टहो ।
 पणवेवि कर्हाम जिणिट्टहो णुयवलविट्टहो कह पंडवधयरट्टहो ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे दो हुई प्रशस्ति—

*	*	*	*	*	*	*
सिरिसरवण उववणगिरि विसालु,		गंभीरपरिहउत्तगसालु ।				
तहि निवसइ जालपु साहु भव्वु,		णुउजी भज्जाल किउ अगव्वु ।				
सिरिअयरव ल वसह पहाणु,		जो सचहं वच्छलु विगयमाणु ।				
तहो एदणु वाल्हागयपमाउ,		नवगावनयरे सो सइ जिआउ ।				
आवपिणु हितमक्खानु विट्टु,		तेणवी सम्माणुउ किउ विदिट्टु ।				
वेनाही तहो पियणाम सिट्ट,		गुरुदेवभत्तपारयणह इट्ट ।				
तहो एदणु एदणु हेमराउ,		जिणधम्मो वरि जसु णिच्चभाउ ।				
सुरतानसमारखतणइंरज्जे,		मतित्तणे थिउ पियभारकउजे ।				

घत्ता

जें अरहंतु देउ मणिभाविउ, जासु पढुत्ते को वि ण ताविउ ।

त णिसुणिवि जणित्तु मुणिरिदु
पडव चरित्तु अइगइणु जइवि,
ता तहो वयणें गुणगणमहतु,
सज्जणदुज्जणभउ परिहरेवि

चणउ पुच्छिउ चुरयणह चदु ।
तुव उवरोहें हउ कहमि तइवि ।
पारभित्तु सदत्थह फुरतु ।
णियणियसहाचरत्ते विदोवि ।

घत्ता

सज्जणु वि सहावु अकुडिलभावु,
परदोस पयासिरु अवरगुण भाविरु,

ससिमेहु व उवयारमइ ।
दुज्जणुसाधु व कुडिलगइ ।

अन्तिम भाग—

पढमहि वीरजिणदे अक्खिउ,
सोहम्मे पुणु जवुसामें,
णदिमित्त अवरज्जिय णाहें.
एमपरंपराइ अणुलगउ,
सुणसंक्खेउसुत्तु अवहारिउ,
पड्डडिया छदो सुमणोहरु,
करेवि पुणु भव्वह वक्खणिउं,
जं हीणाहीउ किंविवासाहिउं,
जो इहु चरिउ वि पढइ पढावइ,
जो पुणु सददेइ समभावें,
जो आयरइत्ति सुद्धि करेप्पिणु,
जो पुणु एय चित्तु णिसुणेसइ,
एउ पुराणु भवियह आसासइ,
वइरिउ मित्तत्तणु दगिसावइ,
पियकलत्ता पुत्तत्थिउ त पुणु,
इद्ध समागमु धणु सपावइ,
लाह सुहत्थिउ लाह सुहाइवि,
साणुगगहगहसयलपयट्टहि,

पढइ गोयमेण णउ रक्खिउ ।
त्रिएहुकुमारें णिग्गयणामे ।
गोवद्धणेण सुभद्धसहावें ।
आयरियाह मुहाउ अउग्गउ ।
मुणिजमकित्तिमहिहि वित्थारिउ,
भवियणजणमणसवणसुहकरु ।
दिदुमिञ्चत्तु मोहु अवमाणिउं ।
तं सुयदेवि खमउ अवरहउं ।
वक्खणोप्पिणु भवियणदावइं ।
सो मुच्चइ पुव्वकियपावें ।
सो सिउ लहइकम्मच्छिंदेप्पिणु ।
सगु मोक्खु सोसिग्घुलहेसइ ।
अ युविद्धि जसुरिद्धि पयासइ ।
रउज्जत्थिउ त्रिरज्जु संपावइ ।
रउज्जभट्टु पुणु रउज्जु चउग्गुणु ।
गउ परणुसु सिग्घु घरु आवइ ।
देव देहिवरु मच्छरु मुचिंवि ।
मिद्धा भावखणद्धें तुट्टहि ।

घत्ता

आवडं मव्वडं जाहि खउ सपड सुहयरि पडसहि ।

पडवचरिउ सुणंताह विवाहविलासइं विलसहि ॥

केसवदामराज्यप्रवर्तमाने छावडाव्ये स० रेडा तद्रभार्या रयणोद तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० पदाथ द्वि० सा० जिणदास । सा० पदार्थ भार्या पौसरि तत्पुत्रास्त्रय, प्रथम सा० नाथू द्वि० सा० श्री राणा तृतीय सा० हरदास सा० नाथू भार्या तूनी तत्पुत्र सा० गोपाल भार्या प्रथम गोरदे द्वि० सुहागदे तृतीय लाडी, तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० र मासिह द्वि० सकरदास तृतीय चि० उदयरज । द्वितीय सा० श्री राणा भार्ये द्वे प्रथम रयणादे द्वितीय लाडमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० रूपसी द्वि० मा० मेखा, सा० रूपसी भा० द्वे प्रथम सुरूपदे द्वि० उडगदे तत्पुत्रास्त्रय चि० त्रामसी चि० खीवसी चि० साहमल्ल । द्वि० सा० शेषा भार्ये प्र० सुहतालदे द्वि० कोडिमदे तत्पुत्र चि० दुगादास । तृ० सा० हरदास भार्या हषमदे तत्पुत्रास्त्रयः सा० पूरण सा० नेतसा सा० साधू । सा० पूर्ण भार्या कपूरदे तत्पुत्र चि० प्रतापसिंह । सा० नेतसा भार्या नवलदे तत्पुत्रास्त्रय चि० नारायण चि० मानसिंह चि० सुरत्राण साधू भार्या सुजाणदे द्वि० सा० जिणदास भार्या द्वे० प्रथम मनी सफलादे तत्पुत्र पच सा० कृंजा भार्या कुसुभदे, द्वि० सा० करणा भार्या करणादे तृतीय सा० भापरभार्या सावलदे चतुर्थे कान्हड एतेषा मध्ये सा० राणा भार्या लाडमदे हरदास भार्या हरषमदे एतभ्या इद पाडव पुराणशास्त्र लिखाप्य आचार्य श्री हेमचन्द्राय घटापित षोडशकारणव्रतोघापनार्थ ।

प्रति न० २ पत्र संख्या ४७१ साङ्ग १०॥४॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रत पति अक्षर । प्रति पूर्ण स्पष्ट और सुन्दर है । लिपि सन्त १६१६ ।

संवत् १६१६ वर्ष भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी । तथै बुद्धवामरे घनिष्ठान्त्रे आमेरमहादुर्गे श्री नेमीनाथ जिनचैत्यालये श्री राजधिराज भारमल्ल राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे नंघाम्नाये बलात्कारणो सरस्वतोगच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाम्तच्छिष्य मडलाचाय श्री धमचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मडला चाय श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० भाङ्गू तद्भार्या होली तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० ठाकुर द्वि० सा० छाहड तृतीय साह थेलहा चतुर्थे सा० चाचा । सा० ठाकुर भार्ये द्वे प्रथम डीडी द्वि० लालि तत्पुत्राः सप्त प्रथम चतुर्विधदान वितरण कल्पवृक्ष जिनपूजापुरदर सोलगागेव साह तेजा द्वि० कल्हा तृतीय सा० लूणा, चतुर्थे सा० ह्यौराज पचम साह उदा षष्ट साह बोहिथ सप्तम सा० रेखा । साह श्री तेजा भार्ये द्वे प्रथम त्रिभुवनदे द्वि० लहौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह लोहट द्वि० श्रगारदे । द्वि० हट्ट, भार्या हरखमेद । द्वि० साह केलहा भार्या केवलदे तत्पुत्रा पच प्रथम सा० नारायण द्वि० नरवद तृतीय गोपाल चतुर्थे चिरजीव सारग पचम साह पदारथ । साह नारायण भार्या नारगदे, साह नरवद भार्या नरवददे तत्पुत्र चि० घीनड, सा० गोपाल भार्या गौरादे, तृतीय साह लूणा भार्या ललितादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह हल्ल द्वि० भूणा । साह हल्ल भार्या हुलसरी । प० साह ऊदा भार्ये द्वे० प्रथम उत्पोदे द्वि० लाडी षष्ट साह बोहिथ भार्या बहुरगदे तत्पुत्र चिरजीव देवा द्वि० साह छाहड भार्या छाहडदे तृतीय थेलहा भार्या थिल्लसरी तत्पुत्रास्त्रय प्रथम साह हीरा द्वि० साह हेमा तृतीय साह नाथू । साह हारा भार्ये द्वे प्रथम

सिग्गिभाहवसेणु महाणुभाउ,
तसु पुव्वसिणेहि पउमकित्त,
ते जिणवरसासण भाविण्ण,
गा खमयदोमविज्जिएण,
त्तकइत्त विज्जणेसुकइत्तहोड,
जइ अग्निहि चुक्कवि किंप कुत्त,

जिणुसेणुसीसु पुणु त सु जाउ ।
उपपणु सीसु जणु जासुचित्त ।
कह विण्डय जिणमणहोमएण ।
अकखरपयजोडियलज्जिएण ।
जइ सुरणहि भावइण्णु लोइ ।
खामयव्वउ सुयणहि ताणरूत्त ।

घत्ता

रिसिगुरुदेवरसाए कहिउ अमेसुविचरिउ मइ ।
पउमकित्तमुण्णिमुण्णपु गवहो देउ जिणोसरू विमलमइ ॥

इति पार्श्वनाथचरित्त समाप्त ।

जयविरुद्ध एयं गियाणवध जिण्णित्तुहंसमए ।
तह वित्तेहयचलणकित्तिण जउ पोमकित्तिसस ॥ १ ॥
इयं पासपुराण भामियापुह्वीजिणालयद्विट्ट ।
एवहि जीवियमरणे हरिसविसाउणपउमस्स ॥ २ ॥
साचयकुलमिज्जम्मो जिण चरणाराहण कइ कइत्तं च ।
एयइ तिण्णजिणवरभवे भवे होत्तु पउमस्स ॥ ३ ॥
एयसयइ वाणऊरा वत्तियमासे अमावसीदिवसे ।
लिहियं पासपुराण कइणा इह पउम णामेण ॥ ४ ॥

संवत् १६११ वर्षे अषाढ बुदि ६ दिने शुक्लासरे आल्हणपुरस्थाने श्री मुल्लिजाथ च्चेत्यालये श्री मूलसंधे नघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्य वसुधराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाग्नाये खडेलवालान्वये चौवरी गोत्रे साह गोगा तद्भार्या गारवदे तत्पुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज । साह भादा भार्या भावलदे तयो. पुत्र चिरंजीव वृचः तद्भार्या बहुरगदे । सा० महाराज तद्भार्या सैणा तयो पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान कल्पवृक्ष साह घेलहा भाया हरपमदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राण द्वि० भीमसी एतेषा मध्ये साह महाराज तेनेर्दपार्श्वनाथचरित्र षोडशकारणव्रतोघापनार्थं वसुधराचर्यं श्री धमत्रन्द्राय दत्तं ।

प्रति न० २. पत्र सख्या १०८ संवत् १०४४ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति

१ एवसयणउवाणुइए २ णामं पउमस्स

यस्यागजो जनि सुधीरिहराघवाख्यो ज्यायानमंदमतिरुज्झितसर्वदोषः
 अत्रोतकान्वयनभोगणपाव्वणोदु श्रीमाननेऽगुणरजितचारुचेतः ॥ २ ॥
 ततोभवत्सोढलनामधेयः सुतो द्वितीयो ब्रूषत मजेय ।
 धम्मार्थः मृतयेविदग्धो जिनाधिपप्रोक्तवृषेन मुग्धः ॥ ३ ॥
 पञ्चाद्भूव शशिमडलम समानः ख्य तः क्षितीयश्वरजनादर्पिलब्धमानः ।
 सदृशनामृतरसायनप नपुष्टः श्री नट्टल शुभमनाक्षपितारिदुष्ट ॥ ४ ॥
 तेनदमुक्तमधिया प्रविचिन्त्या चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसाग्भृतं ।
 श्री पार्श्वनाथचरित दुरितपनोदि म ज्ञायकारितमितेनमुद व्यलेखि ॥ ५ ॥

अहो जगन्नाथं चित्त करेवि,
 रवाणकक पर्यापि मञ्जु सुणेहु,
 इहस्थ पसिद्ध उ ढिल्लिह इक्क,
 समरत्त्वाम तुम्हह त सु गुणाई,
 ससकसुहामर्कात्तहे धामु,
 मणोहर माणि गिरंजणकामु,
 जिणोसरपायसरोयदुरेहु,
 सयागुरुभत्त गिरिंदुवधोरु,
 अदुज्जणु सज्जणमुक्खपयासु,
 असेसहसज्जणमज्झि मणुज्ज,
 महामवतह भावइ तेम,
 सबसणह गणभासणसूरु,
 सुहोह पयासणु धम्मयमुत्त,
 दयालयवट्टण जीवणवाहु,
 पिया अइवत्तहवालिहेणाहु.

भिस िसप सुभमतुधरेवि ।
 कुभावइ सव्वई हों तह णोहु ।
 णरुत्तमु ण अवइण्णउं सक्कु ।
 सुरासुररायमणोहरणाई ।
 सुरायले कण्णरगाडयणामु ।
 महामहिमालउ लोयह वामु ।
 विसुद्धमणोगइ ित्तइ सुरेहु ।
 सुह सुह ओजलहिव्वगहीरु ।
 वियाणियमागहलोयपयासु ।
 णरिह चित्तपयासय चोज्जु ।
 सरोयणराह रसायणु जेम ।
 सबधव वग्गमणिच्छियपूरु ।
 वियाणियजिणवर श्रायमसुत्तु ।
 खलाणणचन्दपयासणराहु ।

वृत्ता

बहुगुणगणजुत्तहो जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनट्टलहो ।
 सो पयहिं णहगणु रमियवरगणु, लघइ सिरिहरहयखलहो ।
 पंचाणुन्न यधरणुससयल सुअणह सुहकारणु ।
 जिणमयपहसचरणु विसमविसयासावारणु ॥
 मूढभानपरिहरणु मोहमहिहरणिदारणु ।

शिष्य मुनि धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खडेलवालान्त्रये पहाड्यागोत्रे साह ऊधा तद्भार्या लाड। तत्पुत्र साह फ० ह
द्वि० गूजर । फलहू भायो सफलादे साह गूजर भार्या गुण सर्ग तत्पुत्र पचाडण उद शाम्त्र न गपुर मध्य
लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्र य दत्त ।

२४, पचास्तिकायप्राभृत ।

मूलकर्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या
१४८. साइज ६।।×४ इञ्च प्रति पृष्ठा तथा सुन्दर है । त्रिगुण-सिद्धात ।

लेखक प्रशस्ति—

सन्वत् १६३७ वर्षे अषाढ बुदि १४ दिवसे शनिवासरे मर्गिसर नक्षत्रे श्री मूलसधे नद्याम्नाये
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारके श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री
धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तदम्नाये
खडेलवालान्त्रये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पाठमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम जिनपूजापुरदर सधभार
धुरधर चतुर्विध दानवितरणल्पवृक्ष सा० श्री नूना तद्भार्या नुनामरि तयोः पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० वीरु
नद्भार्या ल्हौकन, द्वितीय जिणदाम तद्भार्ये द्वे प्रथम मरुपदे द्वि० लहुडा । तृतीय सा० चिमला तद्भार्या
बहुरगदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः पुत्रचि० दुर्गा । द्वि० सा० डीडा
तद्भार्या डिडिसरि, तृतीय चि० किसनदास चतुर्थ सा० चौड्य तद्भार्ये द्वे प्रथम चादणदे द्वि० लहुडा तथा
पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० कौजू द्वि० चि० दशरथ । द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि । तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा०
जाटू तद्भार्या जौणादे, द्वि० सा० नेता तद्भार्या नेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० कवरु तद्भार्या
कौतिगदे एतेषा मध्ये सा० जिणदास तद्भार्या स्वरूपदे उद शाम्त्र लिखाप्य उक्तमपात्रे य दत्त ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता महाकवि श्री सिंह सिद्ध । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३२×३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । पत्रो का रंग बदल गया है ।
अक्षर मोटे हैं ।

मंगलाचरण ।

खमदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलयिस्ममरुलंरुहो ।

घुइ करमि ससत्तिए, अडाणरुभन्तिए हारकुलगयणससकहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय पञ्जुणकहाए पयडियधम्मरथकाममोक्खाए बुहरल्हाणसुव, कइसीह विरइयाए पञ्जुण
संबु भाणु अणिरुद्धाणव्वाणगमन णाम पणारहमो सधी, पारच्छेउ सम्मत्तो ।

तेण विहिणि चित्तु अच्चमि,
अ धुहोवि एवणट्टपिच्छिरो,
त सुणेवि जाजयमहासई,

खुञ्जु होवि तालहलु वच्चमि ।
गेय सुणाणि वहिरोवि इच्छरो ।
णिणुणि सिद्ध जंपइ सरासई ।

घत्ता

आलसु सकिल्लहिं हियउ म मेल्लहि,
हउ मुणिवरवसे कर्हामविसेसे,
१
ता मलधारिदेव मुणिएगुमु,
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ,
तासु सीसु तत्रतेयदिवायरु,
तक्कलहरि भक्कोलियपरमउ,
जासु भुवणो दूर तरु वकिवि,
अमयचन्दु णामेण भडारउ,
सरिसरणंदण वणसंछरणउ,
वंभणवाडउ णामे पट्टणु,
जो भु जइ अरिणारखयकालहो,
जासु भिच्चु दुज्जणमणसल्लणु,
तर्हि सपत्त सुणीसरु जावहि,

मञ्जु वयणु एउ दिहुकरहि ।
क्वु क्किप त तुहु करहि ॥ २ ॥
ण पच्चक्खु धम्म उवसमु दमु ।
जो खमदमजमणियमसमिद्धउ ।
वयतवणियमसीन रयणायरु ।
वरवायरणपवरपसरियपउ ।
न ठिउ पच्चणु मयणु आंसकिवि ।
सो विहरंतु पत्तु वुहसारउ ।
मठविहारजणभवणारवणणउ ।
अरिणारणाहसेणदलवट्टणु ।
रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो ।
त्तत्तउ गुहिलपुन गहि भुल्लणु ।
भव्वलोउ आणदिउतावहि ।

घत्ता

णियणुणअपससेवि मुणिएहि णमंसवि, जो लोएहि अदुगुच्छियउ ।
णयविणयसमिद्धे पुणु कर्हासद्धे, सो जइवरु आउच्छियउ ॥ ३ ॥

×

×

×

×

×

इय देवय णंदणु अविणण जणमणणयणाणदणु ।
वुइयणजणपयपकय छप्पउ भणइ सिद्धु परमप्पउ ॥

अन्तिम प्रशस्ति—

कृत कल्मपवृत्तस्य शास्त्र शास्त्र सुधीमता ।

सिद्धेन सिद्धभूतेन पापसामजभंजनम् ॥ १ ॥

कामस्य काम्य कमनीयवृत्तेः वृत्तं कृतं कीर्तिमता कवीनां ।

जगं वच्छंलु सज्जगंजाणि हरिसु,
 उप्पणु सधोयरु तासु अवेरु,
 साहारणु लहु वउ तासु जाउ,
 तइ अणुवउ मह एउवि सु सारु,
 जावच्छहि चत्तारि सुभाय,
 एकहिं दिणि गुरुणा भणिउ वच्छ,
 भोवाल । सरासइ गुणसमीह,
 चउविह पुसत्थर सोहभरिउ,
 कइ सिद्धहो विरयतहो विणासु,
 महु वयण करेहि किं तुव गुणेण;

सुइ सैत्यविंविह वइराय सारसु ।
 णामेण सुहकरु गुणह पवरु ॥
 धम्माणरत्तु अइ दिव्वभाउ ।
 सबिणोउ विणसेरु कुसुमसारु ॥
 पर-उवयारिय जणजणियराय ।
 णिसुणहि च्छप्यय कइरायदच्छ ॥
 कि अविणोवइ दिणगमहि सीह ।
 णिव्वाहाहि एउ पज्जुण्णा चरिउ ॥
 सप्पणउ कम्म वसेण तासु ।
 संतेण कूउ छाथा समेण ॥

वृत्ता

कि तेण पहुवइ बहुधणई, जं विहडियहण उद्धरइ ।
 कव्वेण तेण कि कइयणेण, ज गच्छइल्लहे मणुहरइ ॥
 गुरुणो पुणो पउत्त पवियप्प पुत्त माधरहचिन्ते ।
 गुणिणा गुण लहे दिणु जइ लोओ दूसण थवइ ॥
 की वारइ सविसेस खुदो खुहत्तणं प विर्यरतो ।
 सुवेणो छुडु मंभत्थो अमुणं तोणियंसहावच ॥
 सभवइ बहुयविग्घ मणुयाण समय मगलगाणा ।
 मा होहि कज्जसिडलो विरयहि कव्व वर तोवि ॥
 सुहे असुहं ण वियाणावि चिन्तां धीरेवि तेजए वण्णा ।
 परकज्ज परकव्वा विहडत जेहि उद्धरिय ॥
 अमियमंडगुरुण आपस लहेवि कत्ति इय कव्व ।
 णियसइणा णिम्माविय णदउ ससिदिणमणी जाम ॥
 को लेक्खइ सत्थम्मे दुज्जणं पिअ सुहयर ।
 सुयणं सुद्ध सहाव करमउ तिरए वि पत्थामि ॥
 ज किंपि हीण अहियं विउसा सोहतु त पि उह कव्वे ।
 धिट्ठत्तेणेण रइय खमंतुं सव्वेवि मुह गुरुणो ॥

संवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसधे नंदाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे * कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अजमेर वास्तव्ये खडेलवालांन्वये अजमेरा गोत्रे सा भालाण तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन तृतीय साह ईमर । साह पट्टिराज भार्या पडसिरी तत्पुत्र साह घणाराज साह सुरजिन भार्या दानशीलवंती सुनखती । साह घणाराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषा मध्ये साह सुरजन भार्या पतिवृता द्विगुणयुक्ता सुनखत इदं शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्रं लिखाय दशलाक्षाणिक व्रतोद्यापनाथं अजिका विनयश्रीवै दत्त ।

प्रति न० ३, पत्र संख्या ६५, साइज ११।।५ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ५०×५४ अक्षर । प्रति प्राचीन द्वै तथा पूर्ण द्वै ।

संवत्सरे १५१८ वर्षे शाके १३८३ पञ्चममध्ये सवन्धारिनाम्नि सवत्सरे उत्तारायने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे ६ षष्ठ्या त्रिथौ शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावहान राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकीर्त्तिदेवास्तत् शिष्य मुनि नेत्रान्दिदेवा । तत् शिष्य ब्रह्म गाल्हा खडेल वालांन्वये साह राऊ तद् भार्या साध्वी रावश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्मसी धर्मसी । साह छाजू तद् भार्या साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषा मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थं पुत्रपोत्रकल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इदं प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाय ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्तं ।

२६. बाहवलिचरित्र ।

रचयिता महाकाव्य धनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २७२, साइज ६।।३।। इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया और प्रति पक्ति मे ३३×३८ अक्षर । रचना संवत् १४५४ लिपि संवत् १५८६ ।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिसहणाह जिणपयजुयलु पणविवि णसियकल्लिमलु ।

पुणु पढमकामए वही चरिउ, आहासमिक यमंगलु ॥

प्रारम्भ मे दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदेसमज्जि णयवट्टणु,
वीसलएउ राउ पयपालउ,
तहि पुरवाडवसजायामल,
पुणु हुउराय सेट्ठि जिणभत्तउ,

वसइ विउलु । पल्हण पुहु पट्टेणु ।
कुवलयमडलु सयलु व मालउ ।
अग्गणियपुठ्वपुरिसणिमलकुल ।
भोवइं णामे दयगुणजुत्तउ ।

तहो सुउ सोमएउ सोमाणणु,
 तहो पेमसिरिभञ्ज विक्खाइय,
 एयहि सत्त पुत्त सजाया,
 पढमु ताहदय वल्लो सुरतरु,
 जो दिवहाडिय चाउ पसिद्धउ,
 पुणु वीयउ परवारि सहोयरु,
 तंउवउ सुउ पल्हाउ सलक्खणु,
 पुणु तुरियउ महाराउ विसुद्धउ,
 पंचमु भामराउ मोहायरु,
 सत्तमु सयल वधुजण वल्लहु,
 एयहि सत्तहि सुपहि पसाहिउ,
 जो पढमउ रादणु वासाहरु,
 पेक्खे विणु सारग एरिदे,
 रञ्जधुराधरु णियमाणजाणिवि,
 अप्पि विदेसु कोसुवणु पस्सियणु,

कुणयमइद्विदपंचायणु ।
 पिययमसीलगुणोहि विराइय ॥
 णंजिणगिरए तव्व विक्खाया ॥
 सघाहिउ णामेवांसद्धरु ।
 णट्टभजु णिवमतसामद्धउ ।
 विणयकिउ हरिराउ मणोहरु ।
 सजायउ आणदिय सञ्जणु ।
 गुणमडिय तणु हुउ जसलुद्धउ ॥
 छट्टउ तणउ णाम रयणायरु ।
 सतणु णाम जाउ अइ दुल्लहु ॥
 सोमएउ ण णयहि जिणहिउ ।
 सयलकलाभउ ण छणससहेरु ॥
 अहुवाणकुल कइरवचन्दे ।
 मातपयम्मिठावउ सम्माणिवि ।
 भुजइ रञ्जु सोक्खु णिच्चलमणु ॥

धत्तः

सो सुअणु गुणायरु वुहविहियायरु, दुत्थियजणणवकप्यतरु ।

जिणपयपकयमहुयरु सिरिवासद्धरु, जा अच्छइ तहिं दुरिय हरु ॥ ३ ॥

ता पेक्खिखवि पडिय धणवाले,
 भो, सम्मत्त रयणरयणायर,
 विणयगुणालकिय णिम्मद्धर,
 करि वि पइट्ट भव्वजणु रजिउ,
 धणएउं तुहु गुरुभात्तिकयायर,
 जिणवरपायपउरहमहुयर,
 दुस्समकालपहाधगुरुक्कउ,
 द्दुज्जणपउरुल्लोउ अकयायरु,
 असहा न्हो जगिकोविणमण्णइ,
 धम्महीणु जणु जहिं जहिं गच्छइ,
 ते कज्जे धम्मायरु किञ्जइ,
 इय धम्महो पहाउ उर घुट्टउ,

विहसि वि भाणउ वुद्धिविसाले ॥
 वासद्धर हरिरायसहोयरु ।
 पडियजणमण रजणुकोद्धर ।
 जे तित्थयरगोत्त आविञ्जउ ।
 मइसुरकिंत्ति तरंगिणि सायर ॥
 सयल जोव रक्खणसुदयायर ।
 जिणवरवम्ममगिजणुवंकउ ।
 विरलउ सज्जणु गुणिविहियायरु ॥
 धम्मप्रहावे लवभइ उण्णइ ।
 तहिं तहिं सम्मुहु को जिण पच्छइ ।
 धम्महीणु ण कयाविहविज्जइ ।
 णिसुणिवि वासाधर सतुट्टउ ।

सिरि वज्रसूरि गणिगुणिहाण्यु,
 महसेण महमइ विउसमहिउ,
 रविसेणें पउमचरित्त वुत्त
 मुणि जडिअलि जडत्तणिवारणत्थु,
 दिणयरसेणें कंदप्पचरिउ,
 जिणपासचरिउ अइसयवसेण,
 अमियाराहण विरइय विचित्त,
 चदप्पह चरिउ मणोहिरामु,
 धणयत्तचरिउ चडवग्गमारु,
 मुणि सीहणदि सद्धत्थवासु,
 णवयारणेहु णरदेववुत्त,
 सिरिसिद्धसेण पवयणविणोउ,
 गोविट्टु कइ तसणकुमारु,
 जयधवल सिद्धगुणमुण्णुअं भेउ,
 वर पउमचरिउ किउ सुकइ सेटि,

विरइउ महब्बदसणपमाणु ।
 घणणाय सुत्तोयण चरिउ कहिउ ।
 जिणसेणें हरिवंसु वि पवित्तु ।
 णवरग चरिउ खडणु पयत्थु ।
 वित्थरिउ महिहि णवरसहं भरिउ ।
 विरइउ मुणि पुगव पउमसेण ।
 गणि अवंसेण भवदोसचत्त ।
 मुणि विल्हुसेण किउ घम्मु धामु
 अवररेहि विहिउ णाणापयारु ।
 अणुपेहा कइ सत्तप्पणासु ।
 कइ असगविहिउ वीरहोचरित्त ।
 जिणसेणे विरइउ आरिसेउ ।
 वह रयण सुमुदहो लद्धयारु ।
 सुयसालिहत्थ कइजीव देउ ।
 इय अवर जाय धरवलय वीठ ।

घत्ता

चउमुहु दोणु सयंभुकइ, पुण्यंतु पुणु वीरु भणु ।
 ते णाणदुमणिवज्जोयकर, हउ दीवोवमुहाणु गुणु ॥ ६ ॥

त णिसुणिवि वासाहरू जंपइ,
 जइ मयकु किरणहि धवलइ भुवि,
 जइ खयराउ मयणे गमु सज्जइ,
 जइ कप्पयरु अमियफलकप्पइ,
 जसु जे त्तिउ मइ पमरु पवट्टइ,
 इय णिसुणिवि संघादिव वुत्तउ,
 तुम्ह भत्ति भारेण दायवर,
 पर दुज्जण भइ मणुथिउ कायरु,
 कुडिलु गमणु परच्चिह णिहालउ,
 अह पह गामिउ परदुह दरिसउ,
 गयरसु जडवाईव दुरासउ,

किं तुह वुहचित्तउल्लु संपइ ।
 तोखज्जोउ ण छंडइ णियच्चवि ।
 तोसिहडि किं णियरुमु वज्जइ ।
 तो किं तरु लज्जइ णिय सपइ ।
 सो तेत्तिउ धरणिण्य ले पयट्टइ ।
 कइणाघणवालेण पउत्तउ ।
 विरयमि कामचरिउ गुणसायर ।
 खलहु ण छुट्टइ गयणिणि सायरु ।
 णयणायणु दुज्जोहु विसालउ ।
 णिट्टरु पिसुणु भुअगम सेरिसउ ।
 दोसायरु रक्खसु वपलासउ ।

अ तरवेइमन्नि धरारिद्धउ,
 वीरखाण्डपत्ति पवित्तउ,
 सूरमेणु एणवइ तदो एण्डणु,
 तदो पइवयपियपाणपियारी,
 दसदसारतहि एण्डणजाया,
 सायरविज्जउ पढमुउ विणीयउ,
 तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु,
 विज्जउणामु पंचमु सुइ वेद्वणु,
 सत्तमु एणाम पसिद्ध उधारणु,
 सुउ अहिचदुणवमु पुणु जाणहु,
 एयह लहुअ क्कामिहोवर,
 समुदविज्जउ सूरी पुरि थप्पेउ,
 तदो सुउ रोहिणेउ अरिगज्जणु,
 तदो सताण कोडिकुल लक्खइ,
 पुणु सभरि एरिद महिसु जिय,
 आमव्वमु चहुवाणु पुहइपहु,
 पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि,
 साहुणाम गोकणुमंती तहु,
 हुउ सभरि एरिदु महिवाणउ,
 सोमदेउ तदो मंत मेणोहल्लु,

तहि काविट्टविसउ सुपसिद्धउ ।
 सूरीएरु जणपरिपालतउ ।
 अ धयं वट्टिराउ रिउमहणु ।
 एणाम सुहदा देवि भंडारी ।
 वीरव्रत्तित्तहु अणविकेखाया ।
 पुणुअक्खोहुणाम हुउ वीयउ ।
 पुणु हिमवंतु तु'रउ जणदुल्लहु ।
 छट्टउ अचलु'रिद्ध सप्पदणु ।
 पुणु अट्टमउ तणुअभउ पूरणु ।
 दहमउ सुउ वसुए उपमाणहु ।
 लावणुणं गिज्जिय अमरछर,
 चंदवाडु वसुदेवदो अप्पउ
 देवइणदणु अणु जणद्वणु ।
 सजाया केवलि पच्चक्खइ ।
 जायव्व सुव्वभवे ते रजिय ।
 तहु मत्तिउ जदुवणिउ जसरहु ।
 आसाउरि'सुरिपय पय अलि ।
 जिणव्वरचरणं भोरुह महिलिहु ।
 वरहदेउ एणाम पयपालउ ।
 सयलकला लंकिउ एं ससहरु ।

घत्ता

पुणु सारगु एरिदु अभयचन्दु तदो एणदणु ।

तदोसुउ हुउ जयंचदु रामचदु एणामे पुणु ॥ १ ॥

एणिसारंगरज्जि समयंकिउ,
 एणियपहुरज्ज भारादढक्खणु,
 एकुजि परमप्पउ जो रु वड,
 जो तिराल रयणत्तउ अ चड,
 जो परमेट्टि पच आराहड,

वासाहरुमंतिउ एणिसन्निउ ।
 विवुउविदतरु पोमणक्खणु ।
 वे ववहार सुद्वणयभावइ ।
 च एणउयरुइ कहेवि एण मुचड ।
 जो पचगमंतमहि साहइ ।

अ तरवेइमन्निभ धणरिद्धउ,
 वीरखाणिउपपत्ति पवित्तउ,
 सूरमेणुं णग्गवड तडो णदणु,
 तहो पइवयपियपाणपियारी,
 दसदसारतहिं णंदणजाया,
 सायरविज्जउ पढमुउ विणीयउ,
 तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु,
 विज्जउणामु पंचमु सुइ वद्धणु,
 सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु,
 सुउ अहिचदुणवमु पुणु जाणहु,
 एयह लहुअ कौत्तिमहीवर,
 समुद्विजउ सूरि पुरि थप्पिउ,
 तहो सुउ रोहिणेउ अग्गिज्जणु,
 तहो संताण कोडिकुल लक्खइ,
 पुणु सभरि णरिउ महिमु जिय,
 आमवंसु चहुवाणु पुहइपहु,
 पहु गणपत्ति हुअउ धरणोयलि,
 साहुणाम गोरुणुमंती तहु,
 हुउ सभरि णरिउ महिवाज्जउ,
 सोमदेउ तहो मंत मेणोवरु,

तहिं काविट्टविसउ सुपसिद्धउ ।
 सूरिणुं जणपरिपालतउ ।
 अ धयेवट्टिराउ रिउमहणु ।
 णाम हुइडा देवि भंडारी ।
 वीरिवात्तितहु अणविकखाया ।
 पुणअक्खोहुणाम हुउ वीयउ ।
 पुणु हिमवंतु तुंरिउ जणदुल्लहु ।
 छट्टउ अचलुरिद्धि समदणु ।
 पुणु अट्टमउ तणुअभउ पूरणु ।
 दडमउ सुउ वसुएउपमाणहु ।
 लावण्येणुं णिज्जिय अमग्गर,
 चदवाडु वंसुदेवहो अप्पिउ
 देवइणदणु अणु जणदणु ।
 सजाया केवलि पच्चकत्वइ ।
 जायवव सुअभव ते रजिय ।
 तहु मतिउ जदुवणिउ जसरहु ।
 आसाउरि सुरिपय पकय अलि ।
 जिणवरचरणं भोरुह महुलिहु ।
 वरहंदेउ णाम पयपालउ ।
 सयलकला लंकिउ णं ससहह ।

वत्ता

पुणु सारगु णरिहु अमयचन्दु तहो णदणु ।

तहोसुउ हुउ जयचंदु रामचंदु णामे पुणु ॥ १ ॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ,
 णियपहुरज्ज भारदिडकवरु,
 एकुजि परमणउ जो भ. वड,
 जो तिकाल रयणत्तउ अ चड,
 जो परमेट्टि पच आराहड,

वामोहरुमतिउ णीसकिउ ।
 विवुडविदतरु पोमणवघड ।
 वे ववहार सुद्धणयभावइ ।
 चे णिययरुइ कहवि ण मुच्चड ।
 जो पचंगमत्तमहि साहइ ।

घत्ता

लक्खणंमत्ता छंदगणहीणहिउ ज भण्णु मई ।
त खमउ संयल्लु अवरहु वाएसरि सिवहसगई ॥ ३ ॥

विक्रमणरिद अ'किय समए,
पंचास वरिस चउअदियगणि,
साईणक्खत्ते परिट्टियइ,
सासवासरे रासिमयकतुत्ते,
चउवग्गसहिउं एवरसभरिउ,
गुज्जरपुरं वाडवसतिलउ,
तहो मणहर छाया गेहिणिया,
तहो उवरि जाउ वहुविणायजुई,
तहो विण्ण तण्णुभव विउल्लगुण,
थरुअरुह भम्मु जां मोहिल्लए,
कणयदि जाम वसुहा अचल्लु,
जो पठइ पठावइ गुण भरिउ,
सताणसिद्धि वित्थरइतेहो,
वाहुवलि सामिगुरुगण सभरणु,

चउदहसय सवच्छरह गए ।
वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि ।
वरसिद्धि जोगणामें वियइ ।
गोल्लगो मुत्ति सुक्केसवले ।
वाहुवलिदेव सिद्धउं चरिउ ।
सिरि सुहदु सेठि गुण गणणिलउ ।
सुहडाएवी णामे भणिया ।
घणवालु विउसु णामेण दुई ।
सतोसुतहयहराराउपुण ।
सांयरंजलु जा सुरसरिभिलिए ।
वांसर होछट्टुं तोम कुलु ।
जो लिहइ लिहावइ वरं चरिउं ।
मणवळिउं पूरइ संयल्लु सुहो ।
महुणोसउ जम्मं जरांमरणु ।

घत्ता

जो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ ।
सो रिद्धिविद्धि संपय ल्हिवि, पछइ सिवपउ पावइ ॥ ४ ॥
अ मत्प्रभाचद्रपदप्रसादादवाप्त बुद्धया धनपालदत्तः ।
श्रीसाधु वासाधरनामधेय स्त्रकाव्यसौधेयकलसीकरोति ।

इति बाहुवलि चरित्र समाप्तं । शुभं भूयात् । सवत् १५८६ वर्षे वैशाखे सुदि ७ दिने बुधवासरे श्री
मूलसधे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नद्याम्नाये श्री कुदकुवाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभोचन्द्रदेवा श्री
रतनकीर्त्तिशिष्येण ब्रह्मरतनेन लिखापितम् ।

प्रति न० २. पत्र संख्यां २३७. सांइज १०x४। इच्च । प्रारम्भ के १३७. पृष्ठ नहीं है । शेष के पृष्ठ

अणुमोएं ताहें तिहु सपणणगुणंतरेण ॥
 अरि उरि अइरावइ दीहरछि धणयत्तहो गोहिण धणयलच्छि ।
 उज्जमिय ताए चिरु सजुएण, भा विय धणमित्ते तहि सुएण ।
 तहि मित्तिसेण णामुज्जयाइ, अणुमोइय वज्जो अरसुआए ।
 तहो फलेण ताइ तिण्णिणविजणाइ, चउथइ भविसिन्नलोगहो गयाइ ।
 पहिलइ धणयत्तहो धणयदित्ति, डयरइ विण्णिणवि धणमित्तु कित्ति ।
 विज्जइ भवि पकय सिरि सरुव, सुउ भविसयत्तु भविमाएरुव ।
 तियल्लिगुहणेवि विण्णिणविसुतेय, पहचूल रयण चूलाइ देव ।
 तइयएभविमत्तु वि कणय तेउ, हुउ दइमइ तेहे जि वि माणे देउ ।
 चोत्थएभवि सुवपचमि फलेण, णिहट्टु कम्म भाणाणलेण ।

घत्ता

णिसुणत पढतह परिचितंतह अष्पाहिया ।
 धणवाले तेण, पंचमि पंचपयार किया ॥

इप धनपालकृत पचमी भविअदत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति —

संवत् १५६५ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेषा राजाधिराज मछवा
 करमचद मोजावाद मध्ये लिख्यतं रामदास । श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्क रणणे सरस्वतो गच्छे श्री कुदकु
 चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्प
 भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवस्तदात्मनाये खंडेलवालालान्वये पटणो गो
 सागानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केल्ल पुत्रास्त्रय. प्रथम साह सखण भार्या लाडो तयोः पुत्रा सह डा
 भार्या ऊदी तयोः पुत्रौ राणौ द्वितीय रामदास । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय देह भार्या टिहुसिर
 द्वितीय साह हीरा भार्या त्तरु तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम दुग द्वितीय पखत तृतीय गोना डूगर भार्या धर
 पुत्रौ द्वौ म० सा० चाचा द्वि० घोराज पखत भार्या पूना तयो. पुत्रो द्वौ प्रथम सोढा द्वि० छजू । गोना भाय
 गगा तयोः पुत्र माधव । तृतीय सा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इदं शास्त्र लिखाय्य ज्ञानपालाय त्र
 कोल्हाय दत्त ।

प्रति न० २ । पत्र संख्या १४ । साइज १० × ४। इच्च । प्रत्येत पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्र
 पक्ति मे ३६।४० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

मूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरुपदेशात् मुनि श्री रत्नकीर्ति पठानार्थ खडेलवालजातीय साइ लाला भार्या ललतादे सुत साइ वीरम भार्या वीरहणदे भाव परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रचलराजेन ज्ञाना-
वरणकर्मक्षयार्थं लेखायित्वा दत्त ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचयिता प० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा तथा प्रति पंक्ति मे ३०×३७ अक्षर । रचना सवत १२३०

मंगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइ सिवसुहकरणइं पणविवि शिम्मलगुणभरिउ ।
आहासमि पविमल्ल सुअपंचमिफल भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ मे दी हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणयर ट्टिपण,	जिणधम्मकरण चक्कंठि एण ।
माहुरकुल गयण तमीहरेण,	विबुहयण सुयण मणवणहरेण ।
णारायण देह समुभवेण,	मणवयणकायणियभवेण ।
सिरिवासुएव गुरुभायरेण,	भवजलणिहि शिणडणकायरेण ।
णीसेसवलक्खगुणालयएण,	मडवर सुपट्ट। णामालएण ।
विणएण भण्णं जोडेवि पाणी,	भत्तिए कइसिरिहरू भववप्पाणि ।
इह दुलहु होइ जीवहं णरत्तु,	णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।
जइ कहव लहइ दइयंहो वसेण,	चउगइ भमंतु जिउ सहसरेण ।
ता विलउ जाइ गन्भेवि तेम,	वायाहउ णहे सरयब्भु जेम ।
अहलहइ जम्मु ता बहु विहेहिं,	रोयहिं पीडिज्जइ दुहगिहेहि ।

धत्ता

जइ णिहय मायरि अय खामोयरि अवहरेइ णियमणि अणिसु ।
पयपाण विहीणउ जायइ दीणउ ता सो णवि जीवेइ सिउ ॥ २ ॥

हउ आयइ मायइ महमइएमइं,	सइं परिपालिउ मंथरगइए ।
कप्पयहव वउलासए सयावि,	दुल्लहु रयणु व पुणएण पावि ।
जइ एवहि विरयमि णोवयारु,	उघाडिय सिवसउ हलयवारु ।

तहो माढी णामे धरिणि जाय,
 कोयल इव सुहयर ललियनारिणि,
 तहो गव्भे समुप्पण्णउ रवण्णु,
 पढमउ परिखाणिय णाय मग्गु,
 वीयउ णारायण्णु णयण्णुउत्त,
 णिम्मलयर जसलच्छी णिहण्णु,
 मइवंत्त संत्तु पाविय पससु,
 करुणात्तउ किरयावतु साहु.
 तह रुप्पियणि णामे जाय भज्ज,

णावइ लच्छी सयमेव आय ।
 पविरइय कज्ज जाणे वि जाणि ।
 साहारणु सुउ णवकणयवण्णु ।
 जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु ।
 मणे परिखाणिय जिणभणिय सुत्तु ।
 माहुगयणहयलसेय भाणु ।
 जिणवर कह कय कएणावतसु ।
 सुद्धासउ मयरहरुव अगाहु ।
 सिरिहरहो सिरिवजाणियसकज्ज ।

घत्ता

सज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविमलसीतालंकारिया ।
 वधवहं पियारी शीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया ॥ २ ॥

तहो पढमु सुउ पटुणामे,
 माणवरुउ लएप्पिणु लोयहो,
 वीयउ वासुएउ संजायर,
 तज्जउ पुणु जसएव पवुच्चइ,
 लोहडु तुरिउ समासहि पियग्हि,
 पचमु लक्खण कलित सलक्खयणु,
 वंचवि णं मणांसय हो सिलीमुह,
 पंचवि मय मयगण पचाणण,
 ताह मज्झे जो सुप्पडु भायरु,
 जिणपय पुग्जकरण उच्छुल्लउ,
 जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ,

हुउ णं अण्णउ दरसउ कामे ।
 धम्मपह वें माणिय भोयहो ।
 वासुएउ जिह तिह विक्खायउ ।
 जो णीसेसह वधुहु रुच्चइ ।
 आवज्जिय णिम्मलगुण णिचरहि ।
 कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु ।
 पचवि वधवयण विरइयसुह ।
 पचवि पिसुण जणोह भयाणण ।
 वर वड्डला णंदिय णहयरु ।
 परिखाणिय सत्थत्थर सुल्लउ ।
 लीलागइ जिय पांडल पिल्लउ ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरू तिमिरतमीहरू णियजणणी णामंकिउ ।
 अठ्ठमथेवि सिरिहरू कइगुणसिरिहरू पचमि सत्थुकराविउ ॥ ३ ॥

सुप्पट तणय जाणणि जासुहमइ,
 धम्मपसत्ता हें मज्झिखामहो,
 होउ समाहि वोहि रयहारिणी,

तियरण विणिवारय कुसमयरइ ।
 गुरुयण भत्तहें रुप्पिणि णामहो ।
 अठ्ठम महि लच्छी सुहकारिणी ।

भवेत्प्रयत्नपिथीरी हरिसेजगोरी नदउ चउविहसचवेह ॥

इय मयणयराजयचरिणे हरिएवकइ त्रिरइए मयणपायपराजय नामहु इजउ पगिच्छेउ सम्मत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

सवत् १५७६ वर्षे कार्तिक सुदी १३ श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नद्याम्नाये कुदकुद चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये गगवाल गोत्रे सा डावर तस्य भार्या माल्ही तयोः पुत्रयः सा दूदा, सा भोल्लु सां डुंगर । सां दूदा भार्या चाहू तयोः पुत्रौ सा० रणमल द्वितीय सा० चोखा स रणमल भार्या जिणसी । सां चोखा भार्या ऊदा । सा दूदाख्येन लिखापित कम्मंज्ञयानिमित्त ।

२६. मृगांकलेखाचरित्र ।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदास । भाषा अर्धश । पत्र सख्या ७४. साइज १०॥ x ५ इञ्च । प्रत्ये पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३२x३६ अक्षर । प्रति स्पष्ट है । मगलाचरण करने के पहिले लिपिका ने भट्टारक माहेन्द्रसेन को नमस्कार किया है । बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये है । रचन सवत् एव लिपि सवत् १७०० ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है ।

प्रारम्भिक पाठ—

पणविवि जिणवीरं णाणगहीरं तिहुवणवइरिसिगइजई ।
णिरुवमविसअत्थ सीलपसत्थ भणमिऋहाससिलेहसई ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

दोहा

ससिलेहा णियकत सम धारइ संमज्जमु सारु ।
जम्मणमरण जलजलो ढाण सुयणुं भवतार ॥१॥
करितणि तपु सिवपुर गयउ, सोवणि सागर चन्द ।
ससिलेहा सुरवरुं भई तजि तिय तणु अतिणिट्टु ॥२॥
लहि एरभउ णिरवाण पद, पावसि सुदर सोइ ।
कविं सु भंगौतीदास कहि पुणु भव भमणुं ण होई ॥३॥
'सील वडा संसार मंहि' सोलि सरहिं सव काज ।
इह भविं परभवि सुह लहई आसि भणहिं मुणिराज ॥४॥

ऋदासंधसु माहुरगच्छए,
जिणवाणी पुवग्ग सेयोधरु,

पुष्करगणि णिम्मल वयसच्छए ।
अवइएणउ णावइ जणिगेणहरु ।

महुरी भासउ देस करि भण्डु भगौतीदासि ॥
जावगयणि रवि ससि म'ह जाव लरह थिरू खित्तु ।
सासलेढा सु'दिर भई एदउ ताउ चरित्तु ॥

इयसिरिचन्दलेहाकहाए रत्रियवुचित्तमहाए भट्टागगमिरिमुणिसाहेंदसेण सीसदिबुहभगवइदास
विरइए । मसि तेहा मग्गिमणु इत्थियल्लिगळेउ इंदपयणीपयण सायरचन्द णिव्वाणगमण तवदीखासाहण
ए म चउथो सधि परिळेउ समतो । इति श्री भगवतीदाम कृत मृगाकलेखाचरित्रंसंपूर्ण ।

अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सत्रतु मत्रहसतसंपूर्ण १७०० फाल्गुणमासे शुक्ला
पक्षे सप्तम्या रत्रिवासरे श्री साहिजहाराज्यपवत्तोमाने श्री काष्टासवे माथुरान्तये पुंहरगणे श्री लोहाचार्यान्वये
भट्टारक श्री यशः कीर्तिदेवास्तोमट्टे भट्टारक श्री गुणचन्द्रदेवास्तोतस्वट्टे भट्टारक श्री सकलचन्द्रः तस्वट्टे भट्टारक
श्री महेन्द्रपेण इन्द्रान्वाये हिसारिवास्तव्ये अमोतकान्वये गर्गगोत्रे सेठी पारस तस्य भार्या सेठाणी परोज
तस्य पुत्र द्वौ ज्येष्ठ पुत्र सेठी पाथु द्वि० पुत्र सेठी सुखनन्द तस्यभर्या सठणी घनो तस्य पुत्र युगम प्रथम पुत्र
ताराचन्द द्वि० पुत्र जगरुन, मेठी पार्श्व पुत्रा शीलतोत्तरगिणा त्रिनयगोेश्वरी साधर्मिणी जीवणो अवर
अमोतकान्वये गोयल गोत्रे आसीवाल चौधरी वनू तस्य भार्या सा० जमो तस्य पुत्र अर्जुन तस्य भगिनी
शीलतोत्तरगिणा दानगुणे रेवतो साधर्मिणी दयालो तेन द्वौ० साधर्मिणी दशलाखिणी व्रत उद्यानार्थं
मृगाकलेखाचरित्र लिखापित हिमर नगरे श्री वरवद्धमानचैत्यालये पचगोष्ठे तत्रस्थिति अचोघजीव
सवोधिनी बाई माथुरी जाग्य घटापत ।

३०. मेघेश्वर चरित्र ।

रचयिता श्री प० रइधू । भाषा अपभ्रंश पत्र सख्या १५६, साइज १०।।×४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३२, ३६ अक्षर । प्रति जोण शीर्ण अवस्था मे है । प्रारम्भ के ५ पत्रों का
आधा भाग कृतनी ही जगह स फटा हुआ है । प्रारम्भ मे कवि ने अपना विस्तृत वंश परिचय लिखा है लेकिन
अक्षर विलम्ब होने के कारण पढने मे नहीं आती ।

अन्ति पठ—

इय सोणियगयहो कयअणुरायहो गोयमेण जसविष्फुरिउ ।
मेहेसरचरियउ तहुगुणभरियउ अक्खिउ बुइयण आयेरियउ ।

प्रशास्ति—

एदउ आइजिणेसर सासणु,
एदउ सायवायविहि जुती
एदउ एरवइ एीइवियारउ

एदउ सुरयणु धम्मपयासणु ।
भारइ देवी जयत्तसवित्ती ।
एदउ भव्वलोयगुण सारउ ।

देवसत्थगुरुभक्तिकयायरु; -
 वील्हाही पिय यम तहु सारी,
 तहि, तणुभ्रउ वुहमणरजणु,
 जिण, समयाणु भत्ति अणु रायउ,
 तहु भज्जा धणसिदि गुणवती,
 णदण चारि ताह उरि जाय,
 चारि दाण ण पायड भूयलि,
 ताह पढमु गुणमाणरयणायरु,
 रतणपाल ही तासु जि भामिणि,
 उद्धरणाहि हाणु हुउ णदणु,
 तहु पढ जिणि जिणिउ मयको,
 सुरतरु ण दुत्थियज्जणपोसणु,
 मपणपालहो तासु जि भज्जा,
 सोणपालु तेहि णदणु णदउ,

पजणसाहु णांभे णियमायरु ।
 सीलाहरण विहसणधारी ।
 जाचय जण दालिद विहजणु ।
 खेऊमाहु णाम विक्खायउ ।
 चन्दहु रोहिणी विपहवती ।
 चरिपाण ण जीव सहाय ।
 चारि वि दिग्गय ण जस णिम्मलि ।
 सहसराजु कुलकमल दिवायरु ।
 णियभत्तारंचित्त अणुणामिणि ।
 परियणजण चित्तेह आणदणु ।
 वीयउ पढराजे गय सका ।
 परउवयारसोरसुपयासणु ।
 दाणपूजाविहि करणमाणज्जा ।
 णिच्चे जिणिदसूरपिय वदउ ।

धत्ता

पुणु सुउ तहु तीयउ अइव विणीयउ जिणसासणरहधुरधणु ।
 रइपतिरयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थिय जणदुहभरहरणु ॥

रइपति भामिणि,
 कोडी णामा,
 सुउ खेमकरु,
 तुरिउ वि पुत्तो,
 साहु हु भासिउ,
 विज्जामंदरु,
 वुह चूडाभणि,
 होल पायडु,
 तासु कलत्ता,
 भणिय सरासइ,
 संसि व कलालउ,
 इहु परियण धुउ,

कुलगिहसामिणि ।
 पूरियकामा ।
 सुक्खरिवक्खरु ।
 गुणगणजुत्तो ।
 पवरजेसासिउ ।
 वंसहु चदिरु ।
 णिम्मच्छरु गुणि ।
 सयलत्तापडु ।
 सररुहवत्ता ।
 विणुउ पर्यासइ ।
 चदपालु हुउ ।

प्रारम्भिक पाठ—

तिहुअणसिरिकतहो अइसयवतहो अरहतहो हयवम्महहो ।
पणवेवि परमेद्धिहो पविमलदिद्धिहो चरणजुअल णयसयमहहो ॥

कोडेत्तगोत्तणहदिणयरासु,
णणहो मदिरि णिवसतु सतु,
चित्तइ इहु धणणारीकह ए,
कह धम्मणिवद्धी का वि कहामि,
पचसु पचसु पंचसु महीसु,
धुउ पंचसु दसमु विणणसु जाइ,
काला विक्खण पढमिल्लु देउ,
पुरुदेउ सामिरायाहि राव,

वल्लइणरिदधरमहयरासु ।
अहिमणमेरु नइ पुप्फयतु ।
पञ्जुत्तउ कयदुक्किण्यपहाए ।
कहियाइ जाइ सिवसोक्खु लहमि ।
उप्पज्जइ धम्म दया महीसु ।
क्खणधिवत्तइ पुणु पुणु वि होइ ।
इय धम्मवाइ सियवसहकेउ ।
आणदिय चउ सुरवर णिकाउ ।

वृत्ता

वत्त गुट्टु णो जणु धणणारे, पइ पोसिउ तुहु खत्तधरु ।
तवचरणविहाणे केवलणारे, तुहु परमपउ परमपरु ।

अन्तिम पाठ—

१
फिउ उवराहे जस्म कइमइ एउ भवतर ।
नहो भवहु णामु पायडमि पयडउ धर ॥ २६ ॥
चिरु पट्टण छगे साहु साहु, तहो सुउ खेला गुणवंतु साहु ।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम लाहु, वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु ॥
सोयारु सुणणगुणगणसणाहु, इक्कइय चित्तइ चित्ति लाहु ।
हो पडियठक्कुर कएइपुत्त, उवयारियवल्लहपरममित्त ॥
कइ पुप्फयात्त जसहरचरित्त, फिउ सुट्टु सहलक्खणविचित्तु ।
पेसहि तंहि राउलु कउलु अञ्जु, अमहरविवाहु तह जणियचोञ्जु ॥
सयलह भवभमणभवतराइ, महु वड्डिउ करहि णिरंतराइ ।
ता साहु समोहिउ कियउ सव्वु राउलुविवाहु भवभमण भव्वु ॥
वक्खणणिउ पुरउ हवेइ जाम, सतुट्टउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणपुरवरि णिवसतु सिद्धु, साहुहि घणे सुत्थियणहु घुट्टु ॥
१३६५
पणसट्ठि सहिय तेरइसयाई, णिवक्किरुम सवद्धर गयाइ ।

चिलसउ गोमिण,	णच्चउ कामिण ।
घुम्मउं मदलु,	पसरउ मगलु ।
सति वियभउ,	दुक्ख णिसुंभउ ।
धम्मच्छाहें,	सहु णारणाहें ।
सुहु णंदउ पय,	जय परमपय ।
जय जय जिणवर,	जय भवमयहर
विमलसु केवलु,	णाणु ममुज्जलु ।
महु उप्पज्जउ,	एत्तिउ दिज्जउ ।
मइं अमुणातिं,	कब्बु करतिं ।
जं हीणाहिउ,	काइं मि णाहिउ ।

धत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, णिहयसयल सदेहदुह ।

महु खमउ भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवणायरुह ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणणकणाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकब्बे चंडमरि देवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अणेविसगागमणं णाम चउत्थो परिछेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६१२ वर्षे आश्वीज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे गुरुवारि अश्लेषानक्षत्रे तत्तकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने अ आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंदाग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्रीललितकीर्तिदेवास्तदाग्नाये खडेलवालान्वये छावडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना । प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि० दूलह भार्या दूलइदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० श्रीपाल । प्रथम सा० पोय भार्या पसरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण । प्र० सा० सुरत्राण भाया सुरत्राणदे । द्वि० सा थेभाल्हार्ये द्वे प्रथम थेल्हश्री द्वितीय कौतगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डू गरसी द्वि० चि० भेला, तृतीय सा० तोल्हा । प्र० सा० डूंगर भार्या दाड्यौदे । तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास । तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम योसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० सरवण द्वि० सा० ईसर । प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या वाली एतेषा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इदं यशोधरचरित्रं लिखाय्य सोलहकारणव्रतोद्यापनार्थं मडलाचार्य श्रीललितकार्तिये दत्तं ।

संवत् ११८० वर्षे आसोज सुदी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री यथानामनगरे तत्पार्श्वे सिकराव द
शुभस्थाने सुलितान साहि इन्द्राहिमराज्यप्रवत्तमाने श्री मूलसचे बल तकारगणे सरस्वतीगच्छे श्रोत्रुन्कुन्दाचां-
र्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक आशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
पूर्वाचलदिनमणि षट्तरुताकिचूडामणि वादिमदद्विपसिंह विवुषवादिमददलनत्रादिकंदकुहाल सक्लजीव
अवुधप्रतिबोधे भट्टारके श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य तर्क व्यकरणछंदोलकारसाहित्यसिद्धांतज्योतिषवैदक
संगीत शास्त्रपारंगत जिनकथित सूक्ष्म संपन्नस्व नेत्रपदाथे षट्द्वयपचाणितकाय अध्यात्मग्रंथसमुद्गमध्यमहारल-
मार्थनिरतिचार सीलव्रतसागर संपूर्णकादेशप्रतिमापरिपालक श्रीप्रभाचन्द्र गुरुत्वामिचरणस्मरणेण ह्यपित-
चित्तदेशव्रति तिनकीभूत ब्रह्म वीडां तदग्निनाये खंडेलवालान्वये परमश्रावक सो क्रिता तस्य भार्या मीता तयोः
पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० देवू तस्य भार्या राणी । द्वितीय पुत्र सा० नरसिंधु भार्या पामेणि तृतीय पुत्र सा
धरणी भार्या राणी देवू पुत्र सा दोदू तस्य भार्या सिवरी तपोपुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र सा धरमू भार्या देवल ।
द्वितीय पुत्र सा० दासा तस्य भाया सूहो । तृतीय साह विमलू चतुर्थ पुत्र गजपाल एतेषां मध्ये साह दोदू इदं
यशोधरशास्त्र लिखाय कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मवीडाय दत्त ।

३२. रत्नकरणड शास्त्र ।

रचयिता श्री पंडिताचार्य श्रीचद । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १४५. साइज ११५४॥ इन्द्र । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४० । ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी हैं । अन्तिम पृष्ठ
नहीं है । रचना संवत् ११२० लिपि संवत् १६४० ।

मंगलाचरण—

सो जयउ जयम्मि जणो, पढमो पढमं पर्यासिउ जेण ।
कुगेईसु पढंताण दिणं कलवणा धम्मो ॥ १ ॥
सो जयउ संतिणाहो, विग्घसहसाइ णामं सित्तेण ।
जस्सोवहथिऊण, पाविज्जइ ईहिया सिद्धो ॥ २ ॥
जयउ सिरिबीरइदो, अरुलको अक्खउ शिरवारणो ।
णिम्मलकेवलजोएहा उज्जोइय सयल भुवण यत्तो ॥ ३ ॥
सिद्धिविद्धि जयबुद्धि, तुद्धि पुद्धि पीयकर ।
सिद्ध सरुव जयतु, चउवीसवि तित्थकर ॥ ४ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

एणवेपिणु जिणवयणुगग्राहं,

विमलइ पयाई सुयदेवयाहं ।

चारु गुणोह रयणारयणायरु ।
इदिय चचल मयह मयाहिउ ।
सिरचदुउजल जसु सजायउ ।

चाउरंग गण वळल्लायरु ॥
चउकसाय सोरग मिगाहिउ ॥
णामे सहमार्कित्त विक्ख यउ ॥

घत्ता

तहो देवकित्ति पुरु सीसु हुउ, वीयउ अहो वासिणि मुण ।
वारिंदु उदयकित्ति वि तहासुइइदु वि पचमउ भणि ॥

जो चरणकमलआयमपुराणु ।
आइरिय महागुणगणसमिद्धु ।
तहो वीर इदुमुणि पंचसासु ।
सउजएण मडामाणिकरखाणि ।
सिरिचदुणाम सोहण मुणीसु ।
तेणोउ अणोयळरियधामु ।
किउ कवु विहिय रयणोहवामु ।
जो पढइ पढाउइ एय चित्तु ।
आयणणइं मणणइं जो पसत्थु ।
जिण्णइ ए कसायहि उ द्वि एहिं ।
तहो दुक्किय कम्म असेसु जाइ ।
जिण्णयाह चरणजुय भत्तएण ।
ज काइंवि लक्खण छदहीणु ।

णायत्तु इ वहु सायमसमाणु ॥
वळल्लमहोवाह जय पसिद्धु ॥
दूरुज्जिय दुम्मइ गुणणवासु ॥
वयसालालकिउ दिव्ववाणि ॥
सजायउ पांडउ पढम सीसु ॥
दमणकह रयणकरंडु णामु ॥
ललियरक्खरु सुयणमणोहिरामु ।
सइ लिहइ लहाउइ जो णिरुत्तु ॥
परिभावइ अहिणिसु एउ सत्थु ॥
तो लियइ ए सो पासंडिपहिं ॥
सो लहइ भौक्ख सुक्खुवभावइ ॥
अमुणते कत्थु करंत एण ॥
मइं वुत्तु इत्थ अइ अहिउ हीणु ॥

घत्ता

त खमउ सव्वु महु जणणामिय, सुयदेनय अण्णायमइ ।
जगपुज्जिअउज सिरिचदमइ, तहय भडारी विउस सह ॥ १ ॥
एयारह ते वीसा वासमयाविकरमस्स एरवइणो ।
जइयागयाहु तइया समणियं सु दरं एय ॥ २ ॥
कण्णणरिदहो रज्जिसुहि सिरिसिखात्तपुरम्मि ।
बुहसिरि चदे एउ किउ णदउ कवु जयम्मि ॥
जयउ जिणवरु जयउ जिणघम्मु, जिणवयणुवि जयउ जइ ।
जयउ साहु सतइ सुहकर पणवंतहो भव्वयण कुणउ जइहो सासुहपरंपरं ।

प्रारम्भिक पाठ—

परावेति अग्निदहो चरमजिग्निदहो वीरहो दसणणाणवहा ।
सोणयहो गरिदह कुवलयचंदहो, गिसुणहो भवियहो पवरकहा ।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जयदेवाहिदेव तित्थंकर,
गिरुवमकण्णरसोयणु धरण्णं,
सो रांदउ जो गणयभण्णिभाण्डे,
सो रांदउ जो लिहइ लिहाण्डे,
जो पयत्थु पयडेइ सुभन्-ह,
रांदउ देवरामण्णदंणुवर,
एहु चरित्त, जेण चित्थारिउ,
होउ सति गिसेसह भन्वहं,
वरिसउ सयल पुहमि धरवारहं,
घरि घरि मगलु होउ सउणउ,
होउ सति चउविहजिणसघह,
रांदउ सासणु वीर जिणेसहो,
मदर सिहार होउ ज सुछउ,
होउ सयल पुरत मणोरह,
अमियविडउ सहपवह रांदणु,
विण्णवेइ सन्मय दय किज्जउ,
अल्हसाहु साह सुमहु रांदणु,
होहु चिराउ सणियकुलमडण.
होउ सति सयलह परिवारह,
पउमण्णंदि मुण्णिणाह गण्णिदहु,
जं हीणाहिउ कव्वु रसडइं,
त सुयणाण देवि जगसारी,

वड्ढमाणजिणमव्वसुहकर ।
कव्वु रयणु कुडल भउ पुण्णउ ।
वीर चरित्त, विमलु आलावइ ।
रस रसइ जो पढइ पढाणइ ।
मणिसदइणु करेइ सुकव्वहं ।
होत्तिवम्म कण्णुवउ रायकर ।
लेहाविभि गुणियणउवयारिउ ।
जिणपयभत्तहं वियत्तियगव्वह ।
मेहजालु पावसवसु धारहं ।
दिण्णि दिंण धणधण्णह सपुण्णउ ।
देस वास णरणाह दुलघह ।
गिण्णउ सेण्णउ णरयणि वासहो ।
घरि घरि दुदुहि सञ्जु अतुछउ ।
परमाण्णं दु पवड्ढउ इह सह ।
त्तणि जगमित्त वि दुरियण कदणु ।
सासय सुहु गिवासु महुदिज्जउ ।
सज्जणजणमण्णयणाण्णंणु ।
मगणजणदुहरोरविहडण ।
भत्तिय वड्ढउ गुरुवय धारहं ।
चरण सरणु गुरु कइ हरि इंदहु ।
पउ विरइउ सम्मइ अवियडइ ।
महु अवरहु खमउ भडारी ।

वत्ता

दयधम्म पवत्तणु विमलु सुकित्तणु गिसुणतहो जिण इदहो ।

१ मण्णइ २ आयण्णइं ३ पयडे ४ धणधण्णइं ।

सवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ वृहस्पतिवारि श्री मूलसधे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुदकुदा-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाग्नाये खडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे
साह नाथू तस्य भार्या तोला तत्पुत्र तिहुण तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस। धाना भार्या नेमी तत्पुत्र
कचमल, हेमराज, वील्हा, भरथा, श्रोवत। कचा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या कर्मा, वि. भार्या
गेगी एतेषा मध्ये इदं शास्त्रं लिखीष्य नेमी आर्यको विनयसिरी जीग्यदत्त।

प्रति न० ३ पत्रे सख्या ६२. साइज ११×४॥ इच्छ। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में
३५×४० अक्षर। प्रति नवीन है तथा पूर्ण है।

संवत् १६३१ वर्षे म ह्युदि ११ शुक्रवारि श्री मूलसधे नद्याग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री
कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रस्तत् शिष्य मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तत् शिष्य
मडलाचार्य श्री लालतकीर्तिस्तदाग्नाये खडेलवालान्वये रांवका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र वृताय
साह खेमा तस्य पुत्र घाटमल्ल द्वि० पुत्र साह वील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेलहा भार्या तिहुणश्री तस्य
पुत्र नानग। तृतीय पुत्र साह खेता तस्य भार्ये द्वे०. प्रथम महरखु द्वि० मानं तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र
नानू द्वि० पुत्र हीरा तृतीय पुत्र विइरा चतुर्थ पुत्र पाला। हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल। पाला
भार्या प्रतापदे तत्पुत्रौ पुत्र द्वौ प्रथम हेमराज व्रतीक नेमदाम। एतेषा मध्ये इदं शास्त्रं घटापित साह हीरा
दशलाक्षणीक व्रतकनिमित्त्य मुनिश्रीरत्नानि ? मालपुरा मध्ये साह धान, चपा, हेमा, हीरा, के देहुरा (मदिर)
श्री भगवानदास राज्ये।

प्रति न० ४ पत्रे सख्या ५६. साइज १०×४ इच्छ। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में
३५×४० अक्षर। प्रति सुन्दर और स्पष्ट है।

सवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाडणपुरवरे आदिनाथचैत्यालये परोज-
खान राज्ये श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि जयनन्दि तत् शिष्य ब्रह्म अचल्ल
लिखितं कर्मज्ञयार्थं ब्रह्म वीराय दत्त।

३३. वेदमार्ग कथा।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या १७ साइज १०।५ इच्छ। प्रत्येक पृष्ठ पर
३२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३२×३२ अक्षर। लिपि सुन्दर है। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

तवसिरिभत्तारहो गिज्जियमारहो पणविवाअम्मइं जिणवरहो।

छक्कम्मिहिं पसन्ति मणिज्जम्मइ,
 छक्कम्मिहिं पसद्धि जणि लब्भइ,
 छक्कम्मिहिं वसिजायहिं णरवर,
 छक्कम्मिहिं वच्छिउ संप्पज्जइ,
 छक्कम्मिहिं उप्पज्जइ केवलु,

छक्कम्मिहिं सुरण्य रिहि गम्मइ ॥
 छक्कम्मिहिं तिहुयणु खणि खुब्भइ ।
 छक्कम्मिहिं देववि आणायर ॥
 छक्कम्मिहिं सुरदु दुहि वज्जइ ।
 छक्कम्मिहिं लब्भइ सुहु अवियलु ॥

घत्ता

छक्कम्मइ जो णीसल्लमणु, भविउ भवाहि विवज्जउ पालइ ।
 सो जिणणाहेँ देसियउ मोक्खम्मग्गु थिरदिट्ठि णिहालइ ॥

गाथा

विहियाएँ सवुद्धीए एयाइं मए गिहत्थकम्माइं ।
 अमुण्णतेण सुअत्थ जिणणाहपयासिय सम्म ॥

ताइ मुण्णिहिं सोहेँवि णिरंतरु,
 फेडिब्बउममत्तु भावंतिहिं,
 छक्कम्मो वएसु एहु भवियहिं,
 अं वपसाए चाच्चणि पुरो,
 गुणवात्तहो सुण्ण वरयाविउ,
 २ १२७४
 वारहसयहिं ससत्तचयात्तिहिं,
 गयहिंमि भद्वयहो पक्खतरि,
 एककेँ मासेँ एहु समात्थउ,
 णंदउ परसासण णिण्णासणु,
 णदउ अणिसु देवि वाएसरि,
 णंदउ धम्मु जिण्णिदि भासिउ,
 णंदउ महिवइ धम्मासत्तउ,
 णंदउ भवियणु णिम्मलु दंसणु,
 णंदउ अं व पसाउ वियक्खणु,
 णंदउ अवरुवि जिण पय भत्तउ,

हीणाहिउ विरुद्धु णिहियक्खरु ।
 अम्हह उप्परि बुद्धिमहत्तिहिं ॥
 वक्खाणिब्बउ भत्तिए णामयह ।
 गिह्छक्कम्मपवित्तिपवित्तेँ ॥
 अवरेहिंमि णियमाण सभात्रिउ ।
 विक्कम सवच्छग्गो विसालिहिं ॥
 गुरुवारम्मि चउदास वासार ।
 सइं निहियउ आत्तसु अवत्थिउं ॥
 ३
 सयलकालजिण्णाहो सासणु ।
 जिणमुहकमलुब्भउपरमेसरि ॥
 णंदउ संघु सुसील विहुसिउ ।
 पयपरियालण णायमहंतउ ॥
 धक्कमीहिं पाविय जिण मासणु ।
 अमरसूरि लहु वंधु वियक्खणु ॥
 विबुद्धवग्गु भाविय रयणत्तउ ।

वास्तव्या साधु यजने भार्या उदौसिरि पुत्र जौत गूजर। जौत भार्या सरो पुत्र वाधू तस्य भार्या जोल्हा ही द्वि०
सुहाग श्रो पुत्र आढा एतेषां मध्ये साधू जौतू भार्या सरो तथा निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयनिमित्त इदं पट्ट
कर्मोपदेशशास्त्र लिखाप्य बाई जौतसिरि शिष्या बाई विमलसिरि तस्या देवशास्त्रगुरुपूजाविधान
महामहोत्सवेन बाई विमल श्री योग्य सम्मर्पित। लिखित प डत रामचन्द्र। इदं शास्त्र ब्रह्म पेमा तेन २०
इश्वरविमल दासाय समर्पित।

३५. पट्ट पाहुड संटीक।

मूलकर्ता श्री कुदकु दाचार्य। टीकाकार श्री श्रंतस गर। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या १६५
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्ति तथा प्रति पक्ति मे ४४×४८ अक्षर।

प्रशस्ति—

संवत्सरे वाणरसमुनीदुमिते १७६५ माघमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ पुनर्वसुनक्षत्रे वनोपत्र-
दीधिकासरोनदीप्रसादशोभिते चतुर्विधसंघकृतगीतवाद्यप्रभावन निरंतरप्रवृद्धितित्योत्सवे बगरू नगरे
श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुदकु दाचार्यन्वये भट्टारक
श्री देवेन्द्रकीर्ति श्रीमद् जगत्कीर्तिजितः शासनकारी निजवचनचातुगी पाडित्यगुणरजित
नागरलोकवृद्धः पंडित श्री छीतरमल्लः तत् शिष्यः स्वशीलपडित्यवदान्यलोकरजकत्व धैर्यगाभीर्यसौंदर्यप्रमुख
गुरो रत्नरोहणचलः पडितचेतो गजायत्तीकरणासृणिः प्रख्यः पडित श्री हीरनद तत् शिष्येण चौखचद्रेण
स्वशयेनेदं पट्ट पाहुडशास्त्रं सलिख्य भट्टारक श्री जगत्कीर्तिशिष्याय श्री दोदराजाय प्रदत्तम्।

प्रति न० २ पत्र संख्या १८६ साइज ११।।×२ इच्च। लिपि सवत् १५८५।

संवत् १५८५ वर्षे महावुदी ४ श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुदकु दा-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये वाकलीवालगोत्रे
साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्र साह नेमा भार्या सवीरी द्वि० कोडमेठ तयोः पुत्र साह द्योपाल सात
रूपा। साह द्योपाल भार्या दानसिरि। साह सात भार्या बाई साह रूपा भार्या दाभा एतेषां मध्ये कोडमदे
रोहिणी व्रतोद्योतनार्थ इदं शास्त्र लिखाप्य भक्त्या मुनि श्री धर्मचन्द्राय ज्ञानपात्राय दत्तं।

प्रति न० ३ पत्र संख्या १६ साइज ११।।×२।। इच्च।

संवत् १६०२ वर्षे वैशाखसुदी १० तिथौ रविसारे उत्तराफाल्गुननक्षत्रे राजाधिराजसाह
आलम राज्ये नगरपचावती मध्ये श्री पारवनाथचैत्यालये श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे
भट्टारक श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री

३७. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० नरसेन । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २६ साइज १२x१॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ४४x५२ अक्षर । प्रात प्राचीन है ।

मंगलाचरण—

सिद्धचक्रविहिरिद्विय गुणहसमिद्वय पणवैष्णु सिद्धमुणीसरहो ।
पुणु अक्खमि णिम्मलु भवियहमगलु सिद्धमहापुरसामियहो ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय रज्जु करतउ पुणु वि विरत्तउ देविसयलु णियपुत्त हो ।
ससारहो सक्किउ पुणु विक्खकिउ मत्तिपुणेहियजुत्तहो ॥

पुहवीपालुहु रज्जु समप्पिउ,
मयणासुंदरिपमुहते उर,
सयल विसंजइ यउ सत्तायउ,
महासुक्क सुरइदुइ वोप्पिणु,
अंगरक्खजहिं जहिं वउ भायउ,
सयल वि णरणवइ समदेप्पिणु,
गउ सिरिपाल परमणिवाणहो,
अवरु वि नरुनारिज्जु करेसइ,
सग्गि सुराहिं सुहु भु जेसइ,
कत्तिय आसाढहिं फग्गुणमासहिं,
वहु भंत्ति हिं जिणपूयकरें सहिं,
जिणइ अक्कित्तिमाइं वदेसइ,
करिं विरज्ज पुणु मोक्खु लहे सहिं,

अप्पउराय महाव्वइ थप्पियउ ।
हरडोरउत्तारिय णोउर ।
दुवहिं तवयरणेहिं विरायउ ।
गइय देव तियल्लिगुह णोप्पिणु ।
तहिं तहिं देवत्तणुसुहु पावउ ।
घोरु जीरु तवयरणु चरेप्पिणु ।
सिद्धचक्रफलु भवियहु जाण हो ।
एव माइ सो फलु पावेसइ ।
सुक्खण्ह सिहु कील करेसइ ।
ते णंदीसर दीउ गवेसहिं ।
सिद्ध चक्रफलु सुहु भुंजेसइ ।
पुणु महियाल चक्रवइ ह्वेसहिं ।

घत्ता

सिद्धचक्र,विहिं रइयमइं, णरणेण भणइ णियसत्तिए ।
भवियणजणआणव्यरे, करिंवि जियेसर भत्तिए ॥

इय सिद्धचक्रकहाए महारायसिरिपालमयणासु दरिदेवचरिए पंडितसिरिणरणेण विरइए इह

सर्वज्ञोक्तधर्मरजितचेतमान् कुटुम्बभारधरधुरान् साधु श्री नोऋमु तद्भार्या शीलतोयतरगिनी हीरा तयो. पुत्र सर्वगुणालकृत देवशास्त्रंगुरावनयवत सर्वज्ञोवदयाप्रतिपालकान् उद्धरणधीरान् दानश्रेयासावतारान् आभार-
मेरान् परमश्रावक महासधु श्री महे सुतेनेव श्रीपालनामशास्त्र कर्मक्षयनिमित्तं लिखापित । लिखितं पं०
वीरसिधु । वाई मानिकी योग्य प्रदानार्थ ।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या ३७ साइज ११×५ इञ्च ।

लेखक प्रशस्ति—

सवत् १६३२ वर्षे वैशाख अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शावरतपगच्छे प० न्यास, श्री प०
नयरत्नगणेशिष्य प० न्यास न्यास विद्यासुन्दरगणि लिख्यत चाटसुमध्ये ।

श्री पार्श्वनार्थचैत्यालये चपावत्तीमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसधे
नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकु दाचायान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री
शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमडलाचार्य श्री
धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तपट्टे मडलाचार्य श्री लालतकात्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकीर्त्तिदेवा खडेलवालान्यये
साह गोत्रे साह टेह भाया वाह । तत्पुत्र साह नानू भार्या नारगदे । द्वि० भार्या दिवू । नानू पुत्राः पच
प्रथम पुत्र साह कपूरा भार्या नमी । तत्पुत्र गुणराज । द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिवेद तत्पुत्र
हारिल ।

३८. श्रीपाल चरित्र ।

रचियता प० रइधू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १२८ साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे २६×३२ अक्षर । प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

मगलाचरण—

मिद्धहं सुपासिद्धहं वसुगुणरिद्धह, हियइ कमले धारे वि निरु ।
अक्खामि पुणु सारउ सुहसयसारउ, सिद्धचक्क माहपुवरु ॥

अन्तिम पाठ—

इय चरिउ सुहायरु बुहयणमणहरु नंदउ महियलि गुणभरिउ ।
भवभमणविणासणु दुरियपणासणु अस्थपसस्थहि विष्फुरिउ ॥
सत्यं वदति व्रतानि कुरुते शास्त्र पठत्यादरान् ।
मोह मुञ्चति गच्छति स्वसमय धत्ते निरोहपव ॥
पापु लुंपति पाति जीवनिवह ध्यान समात्तवते ।
सौड्यं नदतु सावुरेव हरसी पुष्पाति धर्म सदा ॥ १ ॥

जो पुणु वाटूसाहु पयासउ,
हरसी साहु नामु माई पायडु,
तहु कलत्त परियणह पहाणी
देवसेत्थे गुरू वयणकलायर,
वाई भज्जा पुणु वील्हाही,
तहु नदणु पुणु कडयण वणित,
नामै करम सीहु सो नदउ
जंउ गाही तहु तय सुपसिद्धो,
पुणु हरसीहहु पुत्ति पवत्ती,
जाइ अखंडु सीलु वंउ पालिउ,
पुणु विननो तहु लहु सुयसोरी,
एहु गोतु नदनु माई मडलि,
एयह सव्वह मत्ति पहाणउ,
कलिकाले जत्ताणु द्वारियउ,
।तणिकाळ रयणत्तउ अं चंडे,
जि वलहई पुराण सुहरु,
सो हरसीह साहु चिरु नदउ,

तहु चउत्थु नदणु विजयासिउ ।
जो जिण भणिय सेछ अत्थहु पडु ।
जिह सिरि रामहु सोया जाणी ।
दिवचदही नामं नेहायर ।
न गोविंदुहु लछिपसाई ।
जो डू गररायं निरूमणिउ ।
अहनिमु जिणवर चरणवदित ।
विहु कुल सुद्ध रुवगुणारिद्धि ।
न मानतमई गुणजुत्ती ।
कलिमलु असुहु साचित्तहु स्वात्तिउ ।
सयलहु परिवारहु सुपियारी ।
जा रवि सास निवसहि आहंडलि ।
सत्थ पुराण भेय वुह जाणउ ।
चेयणु गुणु अरुडु त्रिफुरियउ ।
सुद्ध धम्मजो अहनिमु सचइ ।
कारा विथेउं पयत्ते मण्हरु ।
सज्जण चित्तहु जणिया णदउ ।

धत्ता

पोमावड पुरवाड वसिउ वणउ कुनतिलउ ।
हरविध सधविहु पुत्तु रइधू कइगुण गणनिलउ ॥

इति श्रीप लसिद्धचक्रचरित्रं रइधू पंडितकृत समाप्त ।

सवत् १६३१ वर्षे कार्तिक वुदी ६ शुक्रवासरे पुष्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसधे नद्यम्नाये
वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये षड्त्रिंशद् गुणोर्वराजमान व्याकरणछंदोत्कारसाहित्य-
तर्कागमादिशास्त्राणवपारप्राप्तान् भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक
श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकोत्तिदेवास्तत् भ्राता
आचार्य श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खडेलवालान्वये पुस्तिका लिखापित नागरचालमध्ये टौक समीपे साखिणा
नगरे पातसाह श्री अकवरविजयराज्ये सोलकी महाराय श्री सुरजन श्री साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे
पुत्र चिरजीव साह उदा भार्या उत्पौदे पुत्र द्वि० चिं० साह भीरवा । साह भीरवा भार्या भावलदे पुत्र जैसा
द्वि० पुत्र मोटा । साह सीखा भार्या सिंगारदे पुत्र चिं० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छोट

सावयवगु वि पुण्णसमग्गु वि,
 मिच्छातम भरु भव्वह खिञ्जउ,
 मुण्णि जसकिात्तहु सिस्स गुणायर,
 मुण्णि तह पाल्ह वभुए णदहु,
 देवराज सघाहव णदणु,
 पोमावइ कुलकमत्तादवायरु,
 जस्स घरि जि रइधू बहु जायउ,
 वरिउ एहु णदउ चिरु भूयलि,

घरि घरि वीयरउ अ'वज्जइ ।

 खेमचन्द हरिसेण तवायर ।
 तिण्ण वि पोवहु भरु णिक्कदहु ।
 |हरिसिधु बुहयणकुलआणदणु ।
 सोविसु णदउ इत्थु जसायरु ।
 देव सत्थ गुरु पयअणु रायउ ।
 पाठ ज रूपवट्टइ इह काल ।

घत्ता

खेणगारि दुग्गहि खयअरि वग्गहि सुक्कयरे ।
 गोउर चउ दारहि तोरणफारहि बुहयणमनसतोसयरे ॥

धर्यालहमेहहि जिणवरगेहहि,
 जिणु पुाञ्जज्जइ धम्मसुण्णज्जइ,
 तव ता विञ्जइ भवमलु खिञ्जइ,
 मंगलगिञ्जहि उल्लवकिञ्जहि,
 तिविहं पत्तहं गुणगणजुत्तहं,
 घरि घरि सद सणु भाविञ्जइ,
 आवणि आवणि वरकचण मणि,
 करि करदारणं जहि अपमाणे,
 दह दिह धविय कत्थणमाविय,
 रुव्वे ण सरु कंतिए ससिहरु,
 कर करवालो अरिखयकालो,
 उज्जोयणयरु कुलसंतयधरु,
 तासु जि रज्जहि मई गिरवज्जहि,
 विरयउ कठवो एहु जि भव्वो,
 अणु कमेण साठउ वयसायरु,

मणिगणचदिरि गयणा णदिरि ।
 णिच्चजिजत्थाह थक्क अवत्थहि ।
 पुणु पुणु घरि घरि घण कं वणण भरि ।
 सावय लोयहि मणहु पमोवहि ।
 दाणइ दिञ्जइ पुण्णइ लिञ्जइ ।
 तसु भावणाइं कम्ममलु खिञ्जइ ।
 विक्कहि वणिवर रुव्वे जियसर ।
 पंथइं सित्तइं अलिआसत्तइ ।
 तहि पुहइसरु णाइ सुरैसरु ।
 लच्छहि आयरु णावइ सायरु ।
 तोसर वसहु लद्ध पसंसहु ।
 णामे डुगरु अरियण खययरु ।
 जिणारिठति सुहमइ वति ।
 पुव्वाहयरियहं पट्टि गुणायरु ।

घत्ता

मिच्छन्ति तामरहरु णाइसहसयरु आयमत्थ हरु तवणिलउ ।

सहजो भवगुणमणिरयणायरु,
सहजपालु पदमउ नय वल्लहु,
शिरुवम रुवसीलवयसज्जा,
पुरिमरयणउ पाय रारखाणी,

तिविह पत्त दाणेण कयायरु ।
तेजु इयउ विवुह जण दुल्लहु ।
..... ही पढमिल्लहु भय ।
सच्चित्तजि परहु उवसमवाणी ।

घत्ता

तहिं उरि उवण्णा लक्खणपुण्णा छह णदण आणदयर ।
ण जिणवर भासियं वव सुहासिय णं अहरसजणपोसयर ॥

ताह पढमु वरकीत्तिलयाहरु,
दाणु णाय करुणं सुक्खरं वरु
जिणपूयाविहि करणपुरदरु,
भूरि दवु ववसाएँ अउज्जिव,
जिण्णाहहु पइट्ट काराविचि,
तिथयरत्त गोत्तु जि वद्धउ,
धामाहिय तहु भामिणिभासिय,
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय,
माम्णु भाइय जिणपय कमला,
पढमउ वीयउ तीयउअमला,

दुहिय जणाण दुक्खणखयमरु ।
परिवारहु पोसणे सुभूरहु ।
णियकुलमदिर बहु सोहाहरु ।
लद्धि सहाउ चवलु मडि वज्जिाव ।
मणइ छिय दाणवहु दाविचि ।
सवहिउ सहदेउ जसद्वउ ।
जिणदासहु सुवसणेहामिय ।
वहु उवमज्जइ तहिं सीलहु सिय ।
तिण्णि पुत्त हुयतांइ गुणाला ।
वद्धरजुसाभु नामाला ।

घत्ता

सहजपाल सुडउ यउ पुणु हुउ छीतमु गयतमु विमलजसु ।
दुहियण दुहखडणु णियकुलमडणु, गुणवण्णाण कोई सुत ॥

तासु पियखिम गुणसील अतुली,
खिउं धरहिय अहि हारें साहिय,
छह पमाण भूयलि सुम्माणिय,
वणिवर यट्टह जो मुखेसरु,
वीरदेउ पढमउं गुणमदिरु,
वीयउ हेमाहेसु व दुल्लहु,
लउदी णामे भासिउ तीयउ,
रूपा ह्वें जिय मय रद्वउ,

जायण जण आसातरु वली ।
ताहिं गांभहुय पुत्त गुणाहिय ।
गुरुयण जेहि, णिच्च सम्माणिय ।
वीयराय पय पकय महुयरु ।
दाणु णाय करु जो जांग सु दरु
णियपरियणयणम्मि अइवाल्लहु ।
देव सत्यगुरपाय विणायउ ।
जि महियलि जसु विमललुलद्धउ ।

सहजासाहु हिं पमुहहिर वणु,
 सिरि सेट्टिवांस उप्पणु धणु,
 तहु पिय जालपहिय वणणणीय,
 तहिं गाळिभउ वणणासुयपुण्णिण,
 तुरिया वि पुत्त जा पुण्णमुत्ति,
 ज्ञेमी ण मा वरसीलजुत्त,
 सा परिणिय तेण गुणाथरेण,
 णिय भायर णदणु गुण णउत्त,
 हेमा णामे परिवारभत्तु,

x

x

x

x

x

जिण वयधारण उक्कठएण,
 जणणी जणु वि परिवारलोउ,
 अपुणु वि खमेप्पिणु तक्खणेण,
 जसकित्तिमुण्णिदहु णवि विपाय,
 तासड णदणु दिवराजु अणुणु,
 परिवारभत्त गुण सेण्णजुत्त,
 सच्चवावइ भांसि सच्चवेवलीणु,
 तहु णदणजाया दुण्णिणवीर,
 चटुव्वकालयरू सिखरचन्दु,
 वीघउ पुणु णामे मल्लिद सु,
 तोसडहु पुत्ति पुणु विण्णिणजाय,
 जोठी णामे जीवो जिउत्त,
 वयण्णयमसीलपालणसमग्ग,
 लहुडी णामे सेल्ही पविच्च,
 सेल्ले सोहमो सिय समाण,
 तहिं णदणहू याविण्णिणसज्ज,
 पच वि भयरह जि अण्णसुया,

इहु परियणु वुत्तउ सजसपवित्तउ, जा ऋणयायलु सूरससि ।

जावहिं महिं मडलु दिवे आहंडलु, णदउ तावहिं सजसवसि ॥

भायर चउक्कजु उणुणु वियणु ।
 तेजा साहु जि णामे पसणुणु ।
 परिवारभत्त मीलेणसीय ।
 राजसपालु ढाक्कू जि तिण्णिण ।
 णिण्णच्चजि विण्णइय जिण्णणाह भत्ति ।
 कोरुइ वण्णइ तहिं गुणह कित्ति ।
 बहुकालिं जति सायरेण ।
 मग्गेषिणु विण्णिहउ कमलवत्तु ।
 तहु घरहु भारदेप्पिणु विरत्तु ।

ससारु असारुउ मुण्णिमणेण ।

सयलह विषभावणु कार विसोउ ।

जिणवेसुधरिउ णीसल्लएण ।

अणुवयधारिय तिं विगयमाय ।

सा वाहिय पियणेहि पसणुणु ।

णियवसगयण उज्जोयमित्त ।

जिणधम्ममज्जिकारणायवीणु ।

जिणधम्मधुरधरगुणगहीर ।

पढमउ सज्जणह जणइ थ्रगटु ।

वीसेगूणहु जिणवरहु दासु ।

जिणधम्मि कम्मि रयन्निगम माय ।

जिणपयगवोवयण्णिच्चसित्त ।

जिणसमयहु भरु धरणअभग्ग ।

विहुं परिवारहं जा णिच्चभत्त ।

णिणु पत्तहं चउविह देइ दाण ।

भाडा तेजा णामे मणुज्ज ।

जालही वीरो पमुहइ हुया ।

शामे सिद्धत्थे सजएण,

पुणु विजयसेण पुठिल्लएण,

पुणु धम्मसेण साक्खत्तएण,

पडुवु ध्रुवसेणे जियमएण,

भद्दे जय भद्दे पुगमेण,

विदिसेणे तवसिरिरजिएण ।

पुणु गगएव शामिल्लएण ।

जइपाले मुणिएजय पत्त एण ।

पुणु कसायरियं गयभएण ।

लोहज्जे सिक्कोडियकमेण ।

धत्ता

गणहरएव मुनिःहि कुवल्लयच्चदहेँ एयहि अवरहि अविचलु ।

आहासिउ पवयणे जहं मइभवेयणेतिहं पचणमोकारहो फलु ॥

जिएणदस्स वीरस्स तित्थे वहत्ते,

सुसिक्खाहिहाणेँ तथा पोमणदी,

जिएणदद्ध धम्मं धुराणं विसुद्धो,

भव वोहि पोउं महीविस्स एदी,

जिएणदागमाहासणे एयचित्तो,

एरिदामीरदाहिवाणदवदी,

अलेसाणगंधम्मि पारमिपत्तो,

गुणायस भूवोसु तिल्लोक्कणदी,

महाकुंदकुदाणए एनसते ।

पुणो विसहुएदी तउ एदणंदी ।

कयाणेय गधो जयते पसिद्धो ।

खमाजुत्तसिद्धं तउ विसहएदी ।

तवाचारणिट्ठाड लद्धाड जुत्तो ।

हुउ तस्स सीसो गणीरामणदी ।

तवे अगवी भव्वराईवमित्तो ।

महापांडि अंतम्मस माणिककणदी ।

धत्ता

पठमसी सुतहो जायउ,

चरिउ सुद्धमण साहहो तेण,

आराम गाम पुरवरणिवेसि,

सुरवइ पुरिउव विवुइयणइद्ध,

रणिदुद्धर अरिवर सेलवउज्जु,

तिहुयणु एणारायण सिरिणिक्केउ,

मणिएणपहदृसिय रविगमित्थेँ,

जगच्चिक्खायउ मुणिएणयणदि आणिएदिउ ।

अवाह हो विरइउ वुहअहिणदिउ ।

सुपसिद्ध अवती शाम देसि ।

तहि अत्थि धारणयरी गरिद्ध ।

रिद्धियदेवासुरजणियचोउज्जु ।

तहिणएरवइ पुगमु भोयदेउ ।

तहि जिणवर वद्धु विहारु अत्थि ।

१ वेठिल्लण २ अविचलु ३ मइभवेयणेतिह ४ पंचणमोकारह फलु ५ महाकुन्दकुन्दएण ६ वसिअहि,
सुएहाखारि, ७ ओहि ८ महीविस्स, महाविस्स ९ भूउ ।

वीरमदे तत्पुत्र सा० लाला तत्पुत्री द्वौ सा० रामा कर्मा तद्भार्या रैणादे तत्पुत्र सा० पर्वत तत्पुत्रास्त्रयः सा०
 आशा तद्भार्या असलदे द्वितीय सा० कर्मा तद्भार्या करणादे तृतीय पुत्र सा० लूणा तद्भार्या ललितादे ।
 तत्पुत्रै द्वौ प्रथम सा० नारायण तद्भार्या नौलादे द्वितीय पुत्र सा० कसोदास तद्भार्या केसरीदे एतेषां मध्ये
 सा० देवू तद्भार्या दाडौदे तत्पुत्र सुदरदास श्यामदास इदं शास्त्रं सुदर्शनाभिधानं लिखाप्य षोडशकारण-
 व्रतोद्यापनार्थं दत्त कर्मक्षयनिमित्त श्री १०८ देवेन्द्रभीर्त्तं थे ।

प्रति न० २. पत्र सख्या ६५. साइज १०॥४१॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तिया तथा प्रति मे
 ३३-३८ अक्षर । लिपि सवत् १५०४.

प्रशस्ति—

सवत् १५०४ वर्षे मार्गसुदी ६ शुक्लपक्षे गुरुवासरे श्री काष्ठा संघे पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्ति-
 वास्तत्पट्टे श्री यशकीर्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री भवसेनदेवाः तस्य शिष्य भुवनकीर्तिदेवा । स० हुमामनि तस्य
 भर्ज गुनत्रिराजमान चतुर्विधदानसयुक्त मनगातास्य डालु भर्ज दौसिरी तस्य लघु भ्राता गुजर ।
 तस्य भार्या गुनसिर तस्य पुत्र उत्पन्न पदमा तस्य लघु भ्राता नादा तस्य भार्जनरक पुत्र जिनदास तस्य
 भगिनि वइ धर्मिणि कर्मक्षयनिमित्त इदं सुदर्शनं चरित्रं लिखापितं ।

प्रति न० ३. पत्र सख्या १०६ साइज १०५४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति
 पर २५-२८ अक्षर ।

संवत् १६३२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी दिवसे हस्तनक्षत्रे श्री चन्द्रप्रभचेत्यालये वला-
 त्कारगणे संरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये भट्टारक श्री पद्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा
 स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री घमचन्द्रदेवा
 स्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा स्तत् शिष्याचार्य श्री .. तदाम्नाये खण्डेल-
 बालवशे निवाई वास्तव्ये सेठी गोत्रे सा० बाळू तद्भार्या राजी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम ठाकुर द्वि० देवा तृतीय
 सा० पहराज । सा० ठाकुर भार्या देउ तत्पुत्र साह महणा तद्भार्ये द्वे प्रथम बोखी द्वि० लाडमदे तत्पुत्रास्त्रय
 प्रथम सा० हीरा भार्या हीरादे द्वितीय रामदास तृ० चि० शोशादेव भार्या देवलदे तत्पुत्रौ द्वौ । प्रथम चि०
 कोजू । साह पहराज भार्या पाटमदे एतेषां मध्ये साह पहराजेन इदं शास्त्रं सुदर्शनं चरित्रं लिखाप्य आचार्य
 हेमचन्द्राय धर्तापित ।

४१. सुलोचनाचरित्र ।

रचयिता महाकवि गणेशदेवसेन । मेषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २४८, साइज १०५१॥ इच्छ । प्रत्येक
 पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३४-४० अक्षर । लिपि सवत् १५६०.

प्रारम्भिक पाठ—

तासु सीसु णिधि मयणुभउ,
 काहिय धम्मु परिपालयसजमु,
 सच्छपरिगगहु णिहयकुसीलउ,
 उवसम णिलउ चरिय रयरयणत्तउ,
 देवसेण णामे मुणि गणहरु,
 अमुण तेण किपि होणाहिउ,
 सयलु त्रिखगउ देववाएसरि,
 फुडु बुहयणु मोहेण्णु भल्ल तउ,
 रक्खस सवत्सरे बुहदिवसए,
 चरिउ सुलोयणाहि णिण्णउ,

गुरु उत्रएसँ णिव्वाहियतउ ।
 अवियरुमलरविण्णयासियतमु ।
 धम्मकहाए पहावणः सीलउ ।
 सोम्मु सुयणु जिणु गुणअणुरत्तउ ।
 विरइउ एउ कवु ते मणहरु ।
 सुत्तविरुद्धउं काइं मिसाहिउ ।
 तिहुयण जणनंदिय परमेसरि ।
 केरंतु पउदेउणवल्लउ ।
 सुक्क चउदसि सावणमासए ।
 सदअत्थवणयसंपुणउ ।

घत्ता

एवि मइकवित्त गव्वेणकियउ, अवरुण केणवि लाहँ ।
 किउ जिणधम्मडो अणुत्तर गुहमणे कयधमुल्लहँ ॥

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृरतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १५७७ वर्षे पौसमासे कृष्णपक्षे नवम्या तिथौ सोमवासरे अश्विनो नक्षत्रे श्री योगिनीप्रत्यासने श्री कान्दितीतहे श्री फेरोजाबाददुर्गे गुणिजनव्रतिसस्यमान विद्वज्जननिहितनिवासाया भव्यजनाभ्यासपवित्रिताखिननिवासिमनप्रवृत्तनासाया जिनधम्मंरत्नाकारप्रियायां दुस्थितस्वस्थोकरणकृमाया प्रतापपरमेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इवराह्मिशाहि रत्नमाणार्या जैनबौद्ध-वावाक साख्य नैयायिक शैवादि षट् दर्शना द सस्यताया जयवत श्री काष्ठासधे माथुरान्वये पुष्करगणे वादिकविभजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमलय-कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयःद्रिभास्वद् भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवा स्तदाभ्याये अमोतकान्त्रये गर्गगोत्रे श्री योगिनीपुरेवास्तव्यः सुश्रावक साधुनानिग तस्य भार्या साध्वी महीचरही लखणसी भार्या देवराजही तत्पुत्र वीरदास तस्य भार्या धनराजही तृतीय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषा मध्ये चउधरी लखणसी तस्य भार्या शीलतोय तरणिणी प्रिया नाम दिउराजही तत्पुत्र वीरदास दिज्ञाना पचमहाव्रतधारकः विवैकगुण-सपन्नः विद्वज्जनसभारंजनःभव्यजीवप्रतिबोधकः मुनि श्री ३ विमलाकीर्त्तिदेवैरिद सुलोचना चरित्र लिखा-पित निजद्रव्योपार्जित कर्मक्षयनिमित्तार्थं सद्भावतत्परेण लिखापित आत्मपठनार्थं ।

४२. सुकुमाल चरित्र ।

रचयिता मुनि श्री पूर्णभद्र । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४५ साइज १०॥५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३१×३३ अक्षर । प्रारम्भ के २ पृष्ठ से ३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है ।

गुरुभक्तिय परिणामिय मुणीसर,
 तहो गल्हु णामेण पियारी,
 पविमलसीलाहरण विह्वसिय,
 ताह तरुणरुह पीथे जायउ,
 अवरु महेंदो वुच्चइ वीयउ,
 जालहणु णामें भणिय चउत्थउ,
 छट्टउ सुवसं पुण्णहु यउ जह,
 अट्टमु सुवणइ पालु समासिउ,
 पदमहु पियणामेण सलक्खण,
 तहि कुमारु णामेण तरुणरुहु,
 विशयविह्वसण भूसिय कायउ,

णामे साहु रजाणु वणीसर ।
 गेहिणिण णामणइइय सुहयारी ।
 सुहि सज्जण वुहयणहपसंसिय ।
 जणसुहयरु महियलि विक्खायउ ।
 वुहयणु मणहरु तिक्कउ तइयउ ।
 वुणु विसलक्खणु दाणमहत्थउ ।
 समुदपालु सत्तमउ भयउतह ।
 विणया इय गुणहि परिभूसिउ ।
 लक्खणकलिय सरीर वियक्खण ।
 जायउ पकय जेम सरोरुहु ।
 महियल्लिमय मिच्छत्त परिचत्तउ ।

वत्ता

णारु अवरु वीयउ पवरुकुमरहो हुय वरणेहिणि ।
 पउमा भणियासुयणहि गणिय जिणमय रयवहु रोहणि ॥

तहि पालह णामेण प्रह्वयउ,
 वीयउ तारुहणु जो जिणु पुज्जई,
 तइ यउ वलि जारिणव जणिज्जइ,
 तुरियउ जायउ सुपट्टु णामे,
 एयहणुसेसह कम्मक्खउ,
 मज्झु वि एउ जि कज्जण अण्णो,
 चउविहु सघु महीयलि णदउ,
 खयहु जाउ पिसुणु खलु दुज्जणु,
 एउ सत्थु मुणिवरह पट्टिज्जउ,
 जामणहगणि चददिवायर,
 पीथे वसु ताम अहिणदउ,
 वारहसयइ गयइ कय हरिसइ,
 कसणपक्ख आगहणो जायए,

पठमु पुत्त णं मयण सरुवउ ।
 जसु रुवैण णमणसिउपुज्जइ ।
 वधव सयणइ सम्भाणिज्जइ ।
 णावइ शियसवुदर सियकामें ।
 जिणमंयरयहो दोउ दुक्खक्खउ ।
 ससारिय सुहयोसुरवण्णं ।
 जिणवरपयपंकयए वदउ ।
 दुट्टुदुरासउ णिदिय सज्जणु ।
 भक्तियभवियरोहि णिसुण्णिज्जउ ।
 कुलगिरिमेरु महीयलसायर ।
 सज्जणसुहिमणाइआणदउ ।
 अट्टोत्तरइ महीयलि वरिसइ ।
 तिज्ज दिवसि ससि वामरि मायइ ।

वत्ता

वाहर सइय गत्थ कहइ पददिएहिर वण्णउ ।

सुरसरिजउणाणइ अंतरालि,
 तहि एयरु अभयपुरि महिस्वणु,
 इकखारसगोरस ककणाइ,
 पहियण पोसिय पयसालजत्थ,
 चउवणणमिद्वउ वसइ लोउ,
 जहि पूरिउ बहु मयणाइ वासु,
 एरणारिमणोहरगेहगेह,
 धम्माणु रत्त जण वसइ जत्थ,

तरुसोमखेत्तधणकणविसालि ।
 सुरणाहु ववहु-वुहहिमणुणु ।
 तरुहलइ रमालइ वणधणाइ ।
 समविसमञ्जुहातिसणत्थि जत्थ ।
 सुरसत्थुवमणणइ विविह भोउ ।
 मणइछिय मणोहिरइ विलासु ।
 एणवइ सुरसउर अइसणोइ ।
 चउ दाणय हरइवपसत्थे ।

घत्ता

चेयालयवेवि अइउत्तंग विसाल तहि ।

धवलियासिहरगमडिय कचण कलसजहि ॥ १ ॥

एणवणु वसवणवहुमडिय,
 धयतोरण उल्लोवयसोहिय,
 कित्तिमपडिमअ कित्तिमजेहिय,
 मंगलगीय महुउउ किउजइ,
 एककु कट्टमघह चेईहरु,
 सत्थपुराण पूय जिणणाहउ,

धम्मणिलय पावारि विहंडिय ।
 पिअमहुउउ सुरणरमोहिय ।
 जिम कइलासहु दीसहितेहिय ।
 दु दुहि सरुवहु थुइ रउजइ ।
 धम्मसंचुणिएणासिय भवडरु ।
 विभवणामिसिबलछिसणाहहु ।

घत्ता

सावय पुरवाड णिवाहिया गेहधम्मभरु ।

वयचाइं समत्थ तिविह पत्तउण्णतकरु ॥ २ ॥

तहि वीयउ पसिद्धु जिणमदिरु,
 मूलसंघजिणसासणसारउ,
 गुजजरगोट्टि धम्मभरु ख चउ,
 सोहइ सहचउ सघसमिद्धउ,
 चिरु सामिउ सिरिगोयमुगणहरु,
 कुदकुदआयरियगरिद्धउ,
 तासु पट्टि अणुक्रमेण कुरुकरुउ,
 तासु सिक्खसिक्खिणियअणोयवि,

भवियण जण मण एयणा णदिरु ।
 रविचिउवतमणियरणिवारउ ।
 णियधणुपुण्णामित्तं संचिउ ।
 मुणितवत्तेउ वरिद्धिहरिद्धउ ।
 तहु सतइ अणोयणिज्जियसरु ।
 अंगपुवधरु आयमसिद्धउ ॥
 धम्मकित्ति मुणिवरु मलमुक्कउ ।
 महवयअणुवय वुइ वहु भेववि ।

धत्ता

तद्गु मेहिउवण वेविपुत्त ए चदरवि ।

सिउ गणु पढमिल्लु अयसमही हरणाइंपवि ॥ ५ ॥

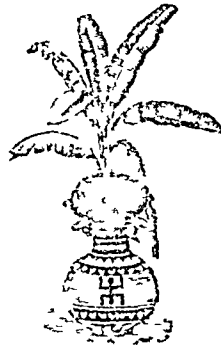
लहु भीषसु पुण्णालये खभुअ,
 सिउगणतिय रूपारुवहरइ,
 भीखमभञ्जपटोगुणजुत्तिय,
 सिउगुणतणय वेविकुलमडण,
 माणभञ्ज पाथुल्ल मणमोहण,
 चदू वंघु मदु चिरु भासिउ,
 तासु भञ्ज पदमागुणसारी,
 वीई मुद्ध कुवरि णामकिय,
 सीलाहरणविहसियदेहिय,
 कुवरिउयरसुव तिरिणउ वण्णइ,
 णारयणत्तय धम्महु कारण,
 दादू साहु पढमसुउ भासिउ,
 जसहरु वीउ भुवणि जस सायरु,
 दादू णारिउ हयसु मणोहरि,
 पढम भञ्ज रुइ सासुय खण ।
 खिउ सिरिणोम अवर सुपहाणी,
 दाणमाण सम्भत्त सुरेवइ,
 अतिहि दाणु अणु दिणु बहु दिउजइ,
 तासु सरीरि पुत्तु उप्पणणउ,
 आसकण्णु णामेण मणोहरु,
 गेहणितासु रुवगुणसारी,
 परियणु अवरु जई वण्णिउजइ,
 एयह मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु,
 दादू साहु जिणोमरि भत्तउ,
 अभयाहारसत्थ पुणु ओसहु,

धम्मवधरा रुहिसिचणअभुअ ।
 दाणपु णणचेलगियमहासइ ॥
 सीलाणिकेयजणय ण पुत्तिय ।
 मीणुवीउ भाउ अहखडण ।
 मुह ससिहर ससिकिरण गिरोहण ।
 जासु सुजसु वुहयण सुपयासिउ ।
 रुवरासि वल्लहसुपिपारी ।
 जा सोहग्ग रुवरइ संकिय ।
 मुण्णवर विणयदाणसुसणोहिय ।
 सुजसंपुंज कव्वह वण्णैकइ ।
 कप्पतरुवजण दुक्खणिवारण ।
 जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ ।
 णयण सोहु तद्गु लहु वउभायरु ।
 णरइ पीइ वेवि कामहु घरि ।
 लांछ पयक्ख अगसुह लक्खण ।
 ससिसुह जिम इदहु इदाणी ।
 रइ सोहग्ग सुजस णदेवइ ।
 चउविह सध विणउ विरइज्जइ ।
 माणससरिह सुवसु मण्णुणणउ ।
 चिरु णदउ जें माहउ णिवधरु ।
 णाम राइ सिरिपइसुपियारी ।
 तउ वीयउ पुराणु विरइज्जइ ।
 वण्णिउ जासु सुयण गुण कित्तणु ।
 पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ ।
 तिविह पत्तपीणियसंतोसहु ।

धत्ता

लेहाविउ पद्दु गुणणिहाणु कल्लोलणिहि ।

संवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनमजोगे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तदाम्नाये पोरवाडगोत्रे साह कुभा भार्या पुरी तत्पुत्र हे तस्य भार्या हिवसिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या चाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौडादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय साह बोथु तस्य भार्या राता तस्यः पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्र लिखापित । बाई पदमसिरि जोग ।



विधन हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

भाट्ट-पुत्र-अवतंस कहि, कुल-अवतंस सुजानि ।
 सोरह वरिष हौ सु जो, अभिनव कदं बखानि ॥
 मार्गसीर्ष दशमी रवौ असित पक्ष सुभ जानि ।
 अक्ष अठारसै वरसि ऊपरि चोबीस मानि ।
 पढन काज लिख प्रेम कर नद किसोर द्विवेद ।
 ज्ञानी लेहु सुधारि कार अक्षर ही को भेद ।

३. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ६ साइज ११x४१। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर ॥ रचना सवत् १८७१.

मंगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा नमिहुं मन वच काय ।
 वरत अठाई की कथा करु प्रथ अनुमारि ॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि-मुनीश्वर जैम, कथा करी हिरदै धरि, प्रेम ।
 गोधो जीवणराम सुजान, वरत करै विधि सु अभिराम ।
 ताकै कथा कथा-या रुही, या कुं बुधजन सोधो सही ।
 रेणी नगर कसबो सुभ ठाम, वनवाडी-वापी अभिराम ।
 पार्श्व जिनालय-सोभै सदा, पूरन करी कथा हम-यदा ।

॥ दोहा ॥

अठारह सै इकैतरया भादव उजली तीज ।
 वार वहस्पतिवार नै सतगुरु कथा कहीज ॥

४. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या ५. पद्य सख्या ११७, रचना सवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनैसुर वंद फिरि, वर्धमान जिनराय ।
 कहुं अठाई की कथा, सुण ज्यौ भवि मन-लाय ।

मुनी भुवनकीर्त्ति गुरु वंदसौहजला रासकरीसीहूरु बडो ।
 तव परसादे सार,
 श्री आदि जीणद गुण व्रणवु चारित्र जोड्ड भवतार ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

रास कीयो मे नीर्मलोए,
 आदपुराण जोई करीए,
 पढे गुणो जे साभलेए,
 मनवाछीत फल ते लहए,
 लखे लखावे रु वडोए,
 तेह ने नवनीध सपजेए,
 जे भवियण विस्तार करए,
 जिनवर गणधर मुनीवर,
 तीर्थकर श्री वृषभ जीन ए,
 जुगल्या धर्मनी वरो यो उ,
 पट् कर्म स्वामी थापी पाए,
 मुगति रमणी प्रगट कीयो ए,
 तेह गुण मे जाणी या ए,
 भवि २ स्वामी सेवसु ए,
 आदि जिनेसर २ तणो मेरा ए,
 एक चित भाव आणीए,
 जिनसासण गुण अणत जाणीए,
 मुनी भुवनकीरति भवतार,

भाव सहित वीसालतो ।
 सुगम कीयो मे गुणमाल तो ।
 तेह ने पुन्य अपारतो ।
 मुगति रमणी वसी होय तो ।
 करे झ न उधार तो ।
 मुगति रमणी होय हार तो ।
 तेह ने पुन्य अपार तो ।
 गुण गुथ्यां मे सार तो ।
 कीयो पर उपगार तो ।
 लोक कियो जयवत तो ।
 धमाधर्म वीचार तो ।
 त्रिभुवन जय २ कारतो ।
 सद गुरु तणो पसावतो ।
 लागु सह गुरु पाय तो ।
 कीयो सार सोझामणो ।
 पढे गुणो जे साभले ।
 श्री सकल कीर्त्ति गुरु प्रणमीने ।
 ब्रह्म जिनदास कहे निमलो ।
 रास कीयो मे सार ।

दोहा

वखाणो जे रु वडा सभा माहि गुणवत ।
 रुचि सहित जे साभले ने ह ने पुन्य महत ।
 समकीत गुण उपजे वरत नीमवली सार ।
 तत्र पदारथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार ॥

आहे नारीय नर जे भाव धरी नित गाइसिंइ एह ।
 इन्द्रादिक पद पामीय शिवपुर जासिंइ तेह ।
 आहे एकाणउ अविका शत पंच सलोक प्रमाण ।
 सूणउ भणिसिंइ लिखसिंइ ते नर अतिहिं सुजाण ।

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त । संवत् १६३४ वर्षे पौष बुदी १०
 बुधवार लिखितमिदं शास्त्र । मालपुरा मध्ये पाडे श्री डूंगा लिखावितं ।

६. आराधना प्रतिबोध ।

रचयिता श्री भट्टारक सकलकीर्त्ति भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ४ पद्य सख्या ५५-३६ नम्बर के
 गुटके से ४६ से ५२ पृष्ठ तक हैं । विषय-आराधना । आराधनासार का संक्षिप्त भाव दिया हुआ है ।

मगलाचरण—

श्री जिनवरवाणी नमेवि गुरु निग्रन्थ पाय प्रणमेवि ।
 कहू आराधना सुनिचार सक्षेपि सारोद्वार ।

अन्तिम—

जे भणई सुणइ नरनारि, ते जाई भवि नेइ पारि ।
 श्री सकलकीर्त्ति कह्यु विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

१०. ऋषभविवाहलो ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ८ साइज ६×५॥ इच्छे । गुटका ५३. नं०
 गुटके के २२७ से २३४ पृष्ठ तक है ।

मगलाचरण—

समर वीसरसतीघोमउ शुभमती करी वरवाणी पसाइ लोए ।
 प्रथम तीर्थकर आवि जिनेश्वर धरणावुं तास विवाहलोए ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

सवत् सौल अठौतरै ए मास आसाढे धनसार सु ।
 ऊजली वीज रली आमरलीए... .. ।
 लक्ष्मीचंद्र पाटे निरमलो ए, अभयचन्द्र मुनिराय ।
 तस पट्टे अभय... रतन कीरति शुभकाय ।
 कुमुदचन्द्रें मन ऊजलोए,.....

१३. कथा कोश संग्रह ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ६७ साइज ६x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में १६-२० अक्षर । कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष सप्तमी व्रत कथा, चादण षष्ठी व्रत कथा, आकश पंचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पंच परमेष्ठी गुण व्रणन का सप्रः है । गुटका नवोन है । मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग २ है । दश लक्षण व्रत कथा का मंगलाचरण इस प्रकार है—

मंगलाचरण—

श्री वीर जिणवर पाय, पाय प्रणामवि सरस्वती ।
स्वामिणीं चलीस्तवु, बुद्धि सार हू वेगि मांगु ॥ १ ॥
वलि गणधर स्वामी नमस्कुरु, श्री सकल कीरति पाय वदतु ।
रास करीस्यू हू निरमलो, ब्रह्म जिणदान भणै मार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—(पंच परमेष्ठी गुण व्रणन)

श्री सकल कीरति पाय प्रणामीने, श्री भुवन कीरति भवतार ।
ब्रह्म जिणदास गुण वरणया, पंच परम गुण सार ॥ १ ॥
पढे गुणे जे साभले, मनि धरी निरमल भाउ ।
मन वञ्चित फलरुवसा, पावै शिवपुर उठा ॥ २ ॥
इति श्री पंच परमेष्ठी गुणवर्णनरास समाप्त ।

१४. चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टीकम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या २० साइज १२x५ ॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में १०-३४ अक्षर । रचना सवत् १७१२. लिपि सवत् १७६३. विषय—अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा ।

मंगलाचरण—

प्रथम वदि पार्श्व जिन्देव, तीनि जगत जाकी करे सेव ।
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणै जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

सतरह सै वारहत्तरै कागुण तेरसि जाणि ।
बो छौ अधिकौ शुद्ध करि, पडित कइ वखाणि ॥ १ ॥
बुद्धि सार टीकम कइ, काल पर्मा हू वास ।

सवत् १८४३ वर्षे क्वारमासे कृष्णपक्षे मितौ क्वार बुदी १४ शुक्रवारे भट्टारक श्री रत्नकीर्त्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतन कर्म वरित्र लिखायो शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये ।

१६. चौदह गुणस्थान चर्चा ।

रचयिता श्री अख्यराज श्रीमाल । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६६. साइज ६।।×५।। इञ्च । लिपि सवत् १८०३.

श्रन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप सक्षेप मात्र कथा । जिनवाणी अनुमारि कथन करि पूरन किया । जौ कहीं भूत चूरु भइ होइ तौ जो पंडित जिनवाणी मे प्रवीन होइ सो सुधारि पढियो ।

॥ दोहा ॥

चौदह गुणस्थानक कथन भाषा सुनि सुख होई ।

अख्यैराज श्रीमाल 'ने करो जया मति जोइः॥

इति श्री गुणस्थान की चर्चा संपूर्ण । ग्रथ कर्ता माह अख्यैराज श्रीमाल शुभ भवतु । लिपि कर्ता साह सहरदास स्वामा चाटसू का । सवत् १८०३ मितौ वैशाख सुदी ७ बुधवार सपूर्ण भयो ।

२०. छद्दशिरोमणि ।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ । भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र संख्या ३०. साइज ६×५ इञ्च । घ संख्या २००. रचना सवत् १८२५ लिपि सवत् १८०६

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोरकी, कृपा चाहि अभिराम ।

शोभनाथ पंडित कियो, छद्द शिरोमणि नाम ॥ १ ॥

× × × × ×

सवत् अठारह सतक ता पर वरष पचौस ।

जेष्ठ मास सुदि सुदिन लडि, भयो ग्रथ यह गीस ॥ २ ॥

सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज ।

इक छित राज छत्र वरि, पृथ्वीस्यच महाराज ॥ ३ ॥

ताके तीछन नेज ते, गारति होत गनीम ।

पीवल नृप माधव तनै, द्वै हे वल की भेम ॥ ४ ॥

ताकौ चारयो चक्रु के, नृपति नवावै सीस ।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥
 पढै सुनें मन लावै कोय, मनवांछित फल पावै सोय ।
 जब लग मेरु सुर सर्स रहे, तब लग खीर समुद जल ब्रह्मै ।
 जल लग तारा गन अरु चदं, जब लग सूर उद्योत करत ।
 जब लग जैन धम अवलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सर्वैया

सवन् सत्रैहसै इक्यावन फागुन व्रजे बुधि वादि आइ,
 अंतिम केवली केरी कथा रचिके जिनदास विचित्र बनाई ।
 सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमनुभाई,
 तथापि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, वरनी परम पवित्र ।
 और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजवृस्वामीचरित्रे भाषा पाडे जिनदासविरचिते कथा संपूर्ण । संवत् १८४३ पौषमासे शुक्ल-
 पक्षे गुरुवासरे शेरगढमध्ये अष्टमी जादू लिखित ।

प्रति न० २. पत्र सख्या ३४ साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि सवत् १७६३

सवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज वृहस्पतिवारे जिहांनावादजैसिहपुरामध्ये श्री
 वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री
 १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजा तदाज्ञानुवर्णी पं० दयारामेन
 जवृस्वामी प्रथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता प० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४. साइज ६×४।। इञ्च । पद्य सख्या १०७
 रचना सवत् १७८१.

मगलाचरण—

ग्यान जिहाज वैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नांदि तरे हूँ ।
 अमर समूह आन अरुनी सौं वसि वसि सीस प्रणाम करे हूँ ॥
 क्रिष्णो भाल कु करम की रेसा दूरि करण की बुधि धरै हूँ ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १५५. साइज ११।।x४ इञ्च ।

संवत् १७८२ का ! भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी का सिष्य दयाराम लिखित । मिति वैशाख सुदी ३

दीतवार के दिन सपुरण करो ।

२४. त्रिभुवननी विनती ।

रचयिता श्री गगादास । भाषा हिन्दी गुजराती । (पद्य) । पत्र संख्या २७ पद्य संख्या ६३ ६ पक्तियों

का एक पद्य माना गया है ।

मंगलाचरण—

गभीरार्णव, त्रिदुना नभ तारा संख्या ।
गहन मही मे वृक्ष जे तृण ते पण लेख्या ॥
दारिद्र भजणा अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या ।
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणधर गुण भाख्या ।
करया कविता घणा ए, ते मिइ किंपि न थाय ।
हितपर दिउ मुक्त सारदा, थोडि बहु बोलाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महापुराण समुद्र थी,	मइ काढ्या मोती ।
खरा करो निकठ करी,	मणि माला मोती ।
सूरत नगर सोहामणउ,	वणिकोत्तम वास ।
नरसिंहपुरा न्यातिमा,	जिन घर्म अभ्यास ।
परवत सुत कविता कहइ,	गगादास गुणवत ।
भणइ भणावए पय करी,	तेहन पुण्य महंत ॥ २ ॥

२५. त्रिलोक दर्पण ।

रचयिता कविवर श्री खड्गसेन । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १५७. साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३१-३३ अक्षर । रचना संवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नम सिद्ध नमृ जिनराय, हुवा और होसी कर भाय ।
सावु सकल जे सम्यक् सार, सरस्वति आदि नमुं सिरधार ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही-लाभपुर नगर में, श्रावण परम सुजाण ।
सब मिलि करि चरचा करै, जाकी जो उनमान ॥

तहा बौठि यह कियो विनोद,
तहा योनि यह कियो विनोद,
पूरण करि पूरव विधि धरी,
जो यह कथा पढ़े धरि कठे,
उधड़े पलक तिमर मिटि जाय,
पंडित रीय नरिंद समान,
सभा मध्य वडा गुणवत,
सभा सिगार हार मुख सर,
बाणी सुणत वृषति नहि होय,
सुर ता सुपढ़ अति गुणवत,
तिन का नाम सुणी तुम ज्ञोय,
पंडित हीरानंद प्रवीण,
मधवी जग जीवन गुण खाण,
रतनपाल ग्याता बुधवत,
अनूराय अनूपम रूप,
दामोदर दसण गुण लीन,
हीरानंद हिरदै परगास,
विषनदास बुधि तोषण सरी,
मोहनदास महा गुण लीन,
कुंदन कनक नारायणदास,
पाडे हिरदै पूजा करै,
हृदय राम भौ जग हितकार,
ए संव ग्याता अति गुणवत,
सब श्रावक अति ही गुणवत,

× × ×

साहि जहा सुलितान महान,
छत्रपति सेवै तसु पाय,
सचतसर विक्रमत्त आदि,
चैत्रशुक्ल पचमी प्रमाण,

× × ×

चागड देश महा विसतारै,

तोन लोक कहै यह मोद ।
तोन लोक कहै यह मोद ॥
रची माल ते बहु विधि संगे ॥
रची माल ते बहु विधि संगे ॥
मुकि श्री लोच तसु कठे ।
मुजि श्री ना तसु कठे ॥
मुजि वेद तसु परभाय ॥
मिसर गिरधर जगत प्रमाण ।
प्रथ वखीण सुरत्तवत ॥
सुणत सबै रज चित्त धार ।
अमृत वचन पीवै सहु कोय ॥
अपणी बुधि अनुसारे लेहत ।
भूरे पुण्य उपजे तहा सोय ॥
चौदह निद्या में लय लीन ।
सकल शास्त्र मय अर्थ सुजाण ॥
हिरदै ग्यान कंला गुणवत ।
वाल पणौ जिम साहै भूप ॥
माधोदास मधुर प्रवीण ।
तिलोकचंद तहा ग्यान विलास ॥
प्रतापमल्ल पूरण मति धरी ।
हसराज जि हिरदै प्रवीण ॥
ग्यान कला आगम परवास ।
हिरदै हरप सेव चित्त धरै ॥
सेवा करै सुजिन गुणधार ।
जिनगुण सुणै महा विक्रसत ॥
सुणै ग्रन्थ पावै विरतंत ॥

× × ×

फेरी चहु चक्क मे आन ।
चकत्ता चक्रवै सुभीहान ॥
सतरह सैं तैरहै सुखस्वाद ।
यह त्रिलोक दरपण सुपुराण ॥

× × ×

नारनोल तहां नगर निवास ।

प्रथम परम मंत्राल जिन चर्चन्तु, दुरित तुरित तजि भाजै हो ।
कोटि विघन नासन श्ररिनदन, लोक सिखरि सुख राजै हो ।
सुमिरि सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ बानी हो ।
गन गधर्व जत्थ मुनि इद्रनि, तीनि भुवन जन मानी हो ।

अति तम पाठ—

ए त्रेपन विधि ऋहु क्रिया भवि पाप समुहनि चूरे हो ।
सोरह से पेसाठ समच्छर कातिग तीज अधियारी हो ।
भट्टारक जग भूषन चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो ।
ब्रह्म गुलाल विचारि वनाई गढ गोपाचल थानै ।
छत्रपती चहु चक्र विराजै साहि सलेम मुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोष ।

रचयिता श्री विश्वनाथसिंह । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७५. साइज १०x६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तिया तथा प्रति पक्ति से ३५-४० अक्षर । रचना संवत् १७८४. लिपि संवत् १८२६.

संग्रहाचरण—

समवसरण लक्ष्मी सहित, वर्धमान जिनराय ।
नमो विबुध वदित चरण, भविजन कूं सुखदाय ॥

प्रशस्ति—

खडेलीवाल वंसविमाल नागरचालं देसाथय ।
रामापुरवास देवनिवासं धर्म प्रकास प्रगटकिय ॥
सगही कल्याणं सवगुणजाण गोत्र पाटणी सुजसलिय ।
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपाय नमै सकति । नज दानादिय ॥ १ ॥
तसु सुन दुय एवं गुरुमुखदेव लहुरो आणंदसिधसुणौ ।
सुखदेव सुनंदन जिनपदवंदन थान मान किसनेस सुणौ ॥
किसन इह कीनी कथा नवीनी निजहित बीनी सुरपद की ।
सुखदायक्रियाभनि यह मनवचननि सुद्धपलैं टुरगति पदकी ॥ २ ॥
माथुरराय वंसत कौ जानै सकल जिहान ।
तसु प्रधान सुत कौ तनुज किसनसिध मतिमान ॥ ३ ॥

अडिल्लछंद

चेत्रविपाकी कमे उदै जव आईया, निजपुर तजि कै सांगानेरि वसाईया ।

जै नर नारी गावसे ए वीनती सुचंग ।
ते मन वंछित पावसे नित्य नित्य मंगल तरंग ॥ ३ ॥

२९. दशलक्षणव्रतकथा ।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इञ्च । पद्य संख्या ५५. लिपि सवत् १८३८.

मगलाचरण—

प्रथम नमन जिन वरनै करूँ सारदा गणधर पद अनुसरूँ ।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु जिन अगम अनुसार ॥

प्रशस्ति—

भट्टारक श्री भूषणधीर सकल शास्त्र पूरण गभीर ।
तसु पद प्रणमो बोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ १ ॥

सवत् १८३८. श्रवाणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्या पट्टणनगरे भट्टारक सुदेंद्रकीर्तिना लिखितं ।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी ।

रचयिता श्री दिलाराम । भाषा हिन्दी पद्य । साइज ६×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे २७-३० अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

मगलाचरण—

परम पुरुष परमात्मा	परम जोति परधान ।
परमेश्वर परब्रह्म प्रभु	पूजौ परम पुरान ॥ १ ॥
सवै काल के सिध सहु	नमौ सदा पद तास ।
जा प्रसाद जग विस्तरौ	यह दिलाराम विलास ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिबर्णन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज वूंदी मन्नासेदहाये,
भये भोज नामी बडे राव वंसी तनै रत्न साचे भये रतन अंसी ।
भये नाथ गौपी न टीके विराजे भये छत्रसाले तिनै राज साजे,
लखै राजधानी सवै शत्रु कपै चहू चक के चकवै सास जंपै ।
भये तास के देवता राव भाऊ सवै देस मै दक्ष नीभौ पुजाऊँ,
लखौ भाग तै पाठ अनुच्छ जाको बढ्यो देश मे राज आर्तक ताको ।

सहस्रकृत समजिन परै
भाषा कछु एक कवि कला
सबै काल के सिधि महु
जा प्रसाद जग विस्तरो
धनि सम यो धनि वा घडी
अनुभव करण सुर पूजिये
बहूत गये मिथ्यात मों
धानां सु दल वीनती

पराकृत गम नाहि ।
रुची ग्रथ या माहि ॥
नमों जौरि पद तास ।
यह दिलाराम विलास ॥
धनि वा वार मिलाय ।
गोगि सधर्मी पाय ॥
अजहू' नाहि अघाय ।
मेरो वेगि बलाई ॥

३१. धनपालरास ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र ६ साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया
तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर ।

मगलाचरण—

वीर जिनवर र'नमु ते साग, तीर्थ'कर चोवीस मो ।
वंछित फन बहु दान दातार, सारद सामिण वीनवुं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार ।
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहें सार ॥ १ ॥
पढे गुणें जो साभलें, मनधरी निरमल भाऊ ।
मनवांछित फलरु बडा, लाभे शिवपुर ठाउ ॥ २ ॥

इति श्री दानफलमहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतवधे धनपालधनमतीरास संपूर्णे । संवत्
१८०८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तियौ रविवासरे पाडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे ।

३२. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या १२४. साइज १२×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण
पद्य सख्या ३०००.

मगलाचरण—

प्रणमुं अरिहतंदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम ।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

सदन सौ निसि अजोध्या कौ गमन कीनौ अजोध्या कै सेठ उह उछिम करावें थो ॥
अपनी बराबरि को करि नाना भांति सेती देकर बडाई निज थान कौ पठायौ थो ।
अैसे हम आसू साह राखे निज बांढ देके कदै मनौहर हम पुनि जोग्य पायौ थौ ॥

॥ दोहा ॥

सातौ पहुँचे शुभग गति बारो सुभग बजाई ।
त्रिधी चद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित्त लाई ॥
हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार ।
दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरदौ घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रचति सारलवाहण आगरै कौ बुधिवंत हिरदौ सरल तिन ज्ञान रस पीयो है ।
जगदत्त मिश्र गौड हिसारको बासी शुभ विद्यावलि जगत मे सरजस लीयो है ॥
गोगुराज वाभण पंडित है नगर माहि जौतिया कौ पाठी सरस्वती वर दीयो है ।
इतने साई भये दोही जिनराज जू की तव मै विचार करि भापा बुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया सम ब्रह्मदालीया भयौ दूसरौ नाव ।
निरलोभी मन कौ सरल दया धर्म शुभ गाव ॥
सो भी हम प्रेरक भयौ दिन मे वारंवार ।
तव हम यह भापा करी लघु बुधि छारि विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धामपुर माहि करी भापा बुधि सारु
धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन धरि वारु ॥
ना कछु कीर्त्ति हेति न कुछु अरति धनु बछन
जया जुक्त मडली रचो पद र रस चदन ॥
पढे सुणै उपजै सुबुधि है कल्याण शुभ सुख धरण ।
मनरसि मनौहर हम कदै सकल संघ मगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पूर्णिमा वार वृहस्पतिवार श्री सवाई जेंपुरमध्ये
ईश्वरीसिंह राज्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण
लिपिकृतम् ।

सहर नगर सुभ थान मे, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥
 श्री काष्ठाये सघनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण ।
 श्री कुत्रसेण कुल केवल दिण्ण, विद्या वचन गुण वारिधि ।
 रतन कीरति तस सीप सुजाण, दिली मंडलाचाये दीपता ।
 आक्षा कारी तस आचाये जाण, अचलकीरति अवगाहि कै ।
 धरम रासौ कीयौ धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर उपगाहु ॥
 पढत सुणत सुख सपदा होइ, सुरग मुर्कत सुख सास्वता ॥ २ ॥

३५. धर्मोपदेश श्रावकाचार । -

रचयिता श्री धर्मदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४६. साइज ६x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे २८-३० अक्षर । रचना सवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है । विषय-आचार धर्म दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शीतलनाहु, शीतलगुन निज अधिक अगाहु ।
 दह भेय जिन भास्यौ सब्ब, वदहु ताहि सयल तजि गव्व ॥

प्रशस्ति—

पद्रहसे अट्टहत्तरि वरिसु, सवच्छरु कुसलह कन सरसु ।
 निर्मल वैसाबी अपतीज, बुधवार गुनियहु जानीज ॥

ता दिन पूरो कियो यहु ग्रंथ,
 मगल करु अरु विघनि हरनु,
 अच्छाससवदछद करि हीन,
 सो मो मद बुधि जानेहु,
 सुध असुध मात्र करि हीन,
 सो सब खमहुं देवि सरसुती,
 वारहसैनी उत्तम जाति,
 जिनवर पय भत्तउ होरिल साहु,
 तासु मनु सद्य जस गेहु,
 त.सु पुत्र जेठो करमसी,
 दया आदि दे वम हि लीन,
 पदम नाम ताकै भो पूत,
 अवर बहुत गुन गदिर समान,

निर्मल धर्म भनौ जो पथ ।
 परम सुख भवियन कहु करणु ।
 किंचितु मात्र मै जुयहु कीन ।
 तातैं वहु जन पिमा करेहु ।
 इहु प्रमाद ज्ञान मे कीन ।
 जान ही मोहि वालक सममती ।
 मूल सघ श्रावग विख्यात ।
 सो जु दान पूज कौ पवाह ।
 धर्म शीलवतु जानेहु ।
 जिनमति सुमति जासु मन वसो ।
 परमाविवेकी पाप बिहीन ।
 कवियनु वैदरु कला सजूतु ।
 महा सुमति अति चतुर सुजानु ।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु,
जिन पूजहु जिनवर धुनहु,
जिन सिद्धात जु कह्यो विचार,
कहै धर्म कवि वेकर जोडि,
मति सारु हम कीनौ एहु,
जह अड्ड तह सुद्ध करहु,
साधु नित नौ भाउ वह नित्त,

पायौ तो दूर करि मानेहु ।
गुरु निग्रथ सत्ये करि मुनहु ।
सो पालहु त्रिभुवन महि सार ।
पडित जन मन लावहु खोडि ।
कपटु मुनि विमनि दया करेहु ।
अपनी सज्जनत विस्तरहु ।
पर उपगारु धरहिं ते चित्त ।

इति घर्मोपदेशश्रावकाचार पं० धर्मदास, विरचित समाप्त । मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्या तिथौ शनिवासरे समाप्तोऽय ग्रन्थो । पं० शत्योदयेन मुनिना लिखितमिति ।

३६. नयचक्र भाषा

भाषाकार श्री हेमराज । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र सख्या २४, माइज ६x४ इञ्च । रचना सन् १७२६ विषय-नैगमादि सात नयो का वरणेन ।

मगलाचरण—

वदौ श्री जिनके वचन,
ताहि सुनत अनुभव तही,
ता कारन नयचक्र की,
अधिक हीन अबन्तोकि के,

स्यादवाद नय मूल ।
है मिथ्यात निरमूल ॥
सरल वर्चनिका कीन ।
करहु सुद्ध परवीन ॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरै,
लवधी रग उवभाय मुनी,
विवुध नारायण दास नै,
जो नयचक्र सटीक ह्ये,
तिने प्रसन्न ह्ये के सही,
तव हमहु उगम कियो,
हेमराज की जीनती,
यहु भाषा नय चक्रकी,
सत्रहसेर छत्रीस की,
रज्जल तिथ दसमी जहा,

जिनप्रभु सूरि सतानि ।
तिनके शिष्य सुजान ॥
यह अरज हम कीन ।
पढे सवे परवीन ।
भली भली यह बात ।
रची वर्चनिका भाव ।
सुनियो सुकवि सुजान ।
रची सुवुधि उनमान ।
संवत् फागुण मास ।
कीनो वचन विलास ।

इति श्री प० नारायणदासोपदेशेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वर्चनिका समाप्त ।

३८. नेमीश्वर चंद्रायण—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८. साइज ६ × ४ इञ्च। पद्य सं १०४। लिपि संवत् १६६०। विषय—नेमिनाथ का जीवन।

मंगलाचरण—

परम चिदानंद मन्यधरी अनि प्रणमी श्री गुरु पाय ।
हरष अण्णदि सु स्तवु श्री नेमीश्वर जिनराय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महीयल महिमिमात्रत वखाणो, श्री मूजसघ गछपात जाणो ।
त्रिजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्ट दायक श्री शुभचन्द्र ॥
तत्पट्ट पकज 'सुर' समान, सुमति कारति सुरी गुणहै निधान ।
ते चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेन्द्रकीर्ति कहि रे रसाल ॥
नरेन्द्रकीरति पाठक कहि अनि नेमिचंद्रायणसार ।
आव सहित भणि सांभलि, ते पावे भव पार ॥

संवत् १६६० वर्षे भाद्रवा सुदी ६ रवौ श्री मूलमंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदचायान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत् गुरु आता मुनि श्री देवकीर्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याण कीर्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिंहजी लिखित ।

३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २२. साइज ७ × ६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १२६. उक्त रचना गुटक मे है। गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों मे है। रचना संवत् १६१४. लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमीसर जिननाथ, चरणं वदे धरि मस्तक हाथ ।
मन अरु वचन काया थुणौ, सोभा जी सावला वर्ण सरीर ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

अडो: मूल सगि मुनि सरस्वति गच्छु, छोटि हो चार कथायनि निभङ्गि ।
अनुत्तकीर्ति गुरु वदितै अहो तास तणो सखी कीयो वखाण ।
राडमल ब्रह्म सो जाणिययो, स्वामी हो पारसनाथ के धानि ॥ १ ॥

पदमनदि की बांनि गंभीर,
भापा पढतै न ह्वै खेद,
सहर आगरो है सुख थान,
धारौ वरन रहै सुख पाइ,
सवत् सतरासै वावीस,
तिथि दशमी पुष्य मगलवार,
नखखंड में है जाकी ध्यान,
राज करै श्री अवरंग साहि;
न भई भीति कछु ताके राज,
निजमति के अनुसारे यह,

ताकौ अर्थ लहै कोइ धीर ।
मूरख जन पुनि जानै भेद ।
परतषि दोसै स्वग विमा ।
तहा पहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ ।
फागुण मासि सुविपन्न जगीस ।
ग्रन्थ समाप्त भयौ जयकार ।
तेजवत दोपै जिन भान ।
जाके नही किसी परवाहि ।
धर्मी भविजन पढन कै काजि ।
भाषा कीनी मन धरि कै नेह ।

॥ छप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गणि दीपै ।

आगम युगति अनेक भेद करि वादी जीप्यै ।

कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भापी ।

पंडित महामति मत बीरदास जु है सापी ।

वाहें बहुविधि सकल पाप संताप हर ।

इहुं प्रथ सतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर ॥

चौपई—

सुजान सिध नदलाल सुनद, जगराय सुत है टेकचद ।

जौ लो सागर ससि दिनकार तो लौं अविचल ए परिवार ॥

सोरठा—

अभय कुसल आनंद पदमनदि पचवीसि की ।

भापा भई निरदद सुनियो भविजन सर्वदा ॥

इति श्री जगतराय विरचिताया पद्मनदिपचविशिकाया भाषा समाप्ता सवत् १८११ वर्षे मिति ॥

४१ पंचेन्द्रिय बोलै

रचयिता कवि घेल्ह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७, साइज ७x७ इञ्च । पद्य संख्या ६, रचना संवत् १५८५, लिपि सवत् १६८८, पाच इन्द्रियों की बात चीत ।

प्रशस्ति—

कवि घेल्ह सुजन गुण ठावो,
तौ बेलि सरस गुण गाया,

जगि प्रगट ठकुरसी नावो ।
चित चतुर मुरिख समझया ।

आपुन जे सित्रपुर गये, भव्यनि पथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध ।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकृत्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३७. साइज १०॥×४॥ इत्र ।

प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर । रचना सवत् १७२२. विषय—जीवन चरित्र ।

मगलाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि जिनेश्वर पाय ।

यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमु तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसद्य मुहूर्तमणि श्री सकल कीर्ति गुरु पायमे ।

भुवनकीर्त्ति तेह निपाटि, बहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥

तास पटावर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण भवतार रे ।

विजयकीर्त्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥

तेह यह कुमुद पूरण समी, शुभचन्द्र भवतार रे ।

न्याय प्रमाण प्रचड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥

तस पट्टोधर प्रगटोया श्री सुमतिकीर्त्ति जयकार रे ।

तस पट्ट धारक भट्टारक, गुणकीर्त्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥

तेह तणि पारि प्रसिद्ध धणी श्रीयवादि भूषण सूरी सत रे ।

रामकीर्त्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावत रे ॥ ५ ॥

तस पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे ।

विद्यावाद विनोदथी जेहि नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥

तस पट कमल कमन वधु, श्री देवेन्द्रकीर्त्ति गच्छ ईशारे ।

प्रद्युम्न प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥

सवत् सत्तर वावोसि सुदि चैत्र तोज बुधवार रे ।

महेश्वर माहि रचना रचि, रहि चंद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥

सूत वासी सद्यपती जैर्माजि सूरजि दातार रे ।

तेह आप्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुथ्यो करि विवेक ।

प्रद्युम्न गुण सूत्रिकरी, सव वन कुसूम अनेक ॥ १० ॥

जौ कहूँ मेरी चूक हूँ,
वरण छद कौ देखि कै,
यहा मिश्र हरिनाभजी,
ताकी सर्गात जो करी,

लीज्यो सत सुधारि ।
गुण औगुण सुविचारि ॥
रहौ सदा सुखरूप ।
पायो काव्य सरूप ॥

सवेर्या—

कोई देवी खेतपाल वीद्यासनिमान्त है,
केई सती पित्र सीतला सो कहै मेरा है ।
कोई कहै सावलौ कवीर पद कोई गाँ,
केई दादू पथी होय परे मोह घेरा है ।
कोई खजाँ परमान कोई पथी नानिग के,
केई कहै महाबाहु महारुद्र चेग है ।
याही वारा पथ मे भरमि रखौ सबै लोक,
कहै जोघ अहो जिन तेरापथी तेरा है ।

× × × × × ×

इति श्री प्रवचनसार सिद्धान्ते जोधराज गोदीका विरचिते त्रि वणन नाम द्वादश प्रभाव
सवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्लवार सवाई जयपुर मे लिख्यौ अमल महाराजाधिराज श्री सवाई
प्रतापसिंहजी का मे पुस्तक जोधराज गोदीका की है सवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखी पुस्तक जीवण
राम गोधा रैणी का को । लिखत कन्होराम बाकलीवाल सपतरामगोधा ।

४६. प्रवचनसार ।

भाषा प्राकृत संस्कृत-हिन्दी) (गद्य) । पत्र संख्या ४४ साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पक्तिय
तथा प्रति पक्ति मे ३८-४० अक्षर । लिपि सवत् १७२७. प्रस्तुत ग्रंथ मे प्राकृत और संस्कृत मूल ही विय
हुआ है । हिन्दी मे प्रत्येक गाथा मे वर्णित विषय का सकेत दिया गया है । इसके अतिरिक्त हिन्दी मे फुटकर
टीकाभी दी हुई है । भाषा परिमार्जित है ।

भाषा का प्रारम्भ—

आगे श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम ही आरम्भ विषे मगलाचरण निमित्त नमस्कार करें है ।
... । आगे आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध असे तीन भावनि की ठीकता करें है ।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रत्न गुणविषे अनन्त अश भेद है । एक परमाणु दूजे परमाणु सौ तव वधे जब दोइ अश
अधिक स्निग्ध अथवा रत्न गुण का परिणाम होइ

सब श्रावक पूजे जिनधर्म, करे भक्ति पावै बहु शम्भे ॥
कर्मक्षय कारणशुभहेत पाश्वनाथ चौपई समेत ।
पडित लाखो लाख समान सेवौ धर्म लहौ सुख थान ॥

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी का शिष्य पाडे दयाराम नरायण का वासी जाति सोनी । भट्टारक श्री
महेन्द्रकीर्त्ति का राजपट विधै दिल्ली का जैसिहपुरा का देहुरा मे पार्श्वनाथ चौपई लिखी ।

४६. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्री भूधरदाम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ६१. साइज १०।।×४।। इञ्च । रचना सवत्
१७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है ।

मंगलाचरण—

मोह महातम दलिनदिन तरलदमी भरतार ।
ते पारस परमेस मुक्त होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गान ।
श्री पारस परमेस कौ पूरन भयौ पुरान ॥
पूरव चरित विलोकि कै भूधर बुधि समान ।
भाषा वध प्रवध यह कियौ आगरै थान ॥

x x x x x

दोहा—

संवत सत्रैसै समै और निवासी लीन ।
सुदि अषाढ तिथ पचमी, ग्रंथ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण । लिखावित साहजी श्री चैनरामजी ठोल्या सवाई माधोपुर
मध्ये । महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराज्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटा का ।

५०. पोसहरास ।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञानभूषण । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य सख्या ११५

मंगलाचरण—

सरसति चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आण ।
वार वरत महि साह वरत पोसहरारे काण ॥ १ ॥
आठमि चउदसि नीम सहित नित पोस लीजे ।
उत्तम मध्यम अवम भेदि त्रिहु विधि जाणी जे ॥ २ ॥

असौ जानि एक ठौर भीनी सब भाषा जोरि
ताको नाम धरयो यो बनारसी विलास है ।

॥ दोहां ॥

सत्रहसैं एकोत्तरें समै चैत सित पाख ।
दुआसौ पूरन भई इह बन रसी भाष ॥ १ ॥

संवत् १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापित पंडित जोंधराज जी वृदावेंती मध्ये
साह शम्भूराम बाकलौवाल आंवाका लिपि कृतं ।

५२. वाशिठिया बोलरो रतवन ।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४: साहज ८५३॥ इच्छ । प्रत्ये
पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे २६-३० अक्षर । रचना संवत् १७८३. विषय-सिद्धान्त

मंगलाचरण—

श्री गुरुवचनलेही करी आंगमें नै अणु'सार ।
बोलै वाशिठियां मार्गनों, द्वार तणो सुविचार ॥
वासिठ बोल कछा जिनै, वन ते जिन चौबीश ।
ते माहैं वाशिठिया बोलत वन पभयीश ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सतरैं त्रयाशिया बरसैं, नगर उदयपुर माहि रे ।
नर नारि समभावरण हेतै एह तवन करयो उछाहि रे ।
तपगच्छ माहि सुर शिरोमणि श्री विजयक्षमा सुहिरायो रे ।
गुणवता जयवता वर तो जस अनैतेज जस वायो रे ।
कान्तिसागर पंडित सुपसाया जसवत सागरराय रे ।

इम घुण्यो जिनवर सयल सुखकर तीर्थकर चोवीस ए ।
वासिठ बोलै अमिय तोलैं जे कछा जगदीस ए ।
जमवत सागर सुजस आगर, जिनेंद्रसागर शिष्य ए ।
नवनिधि होयैं सब नैं घर दिएं इम आसिष ए ॥

इति श्री वाशिठियां बोलैरो रतवन संपूर्ण । मुनि मोहनविजय वाचनार्थ ।

मगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिज्ञानाथ, नमो चरणधारि मस्तकि हाथ ।
लछिन वण्यौ चद्र माता सु, काया उज्ज्वल अधिक उजासु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल सघ शारद शुभ गच्छि, छोडी चार कपाय निरभच्छि ।
अनत कीर्त्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कीयो बखाण ॥

ब्रह्म रायजल थोडि बुधि,
जेनी मति दीने औकास,

जो इह कथा सुणे दे कान,
सौलह सै तेतोसा सार,
स्वाति नक्षत्र सिद्धि शुभजोग,
देस दूढाहड सोभा घणी,
निमल तले नदी बहु फिरै,
चहु दिशि बाण्या भला बजार,
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा,
राजा राजै भगवतदास,
परजा लोग सुखी सुख बस,
प्रावक लोग वसै धनवत,
उपराउ परी वैरन कास,
मगल श्री अरहत जिणि,
मंगल पढइ कइ बखाण,

अखिरपद की न लदै सुधि ।
व्रत पचमी को कायो परकाश ॥
केवल पाइ तहिने फुरै ।
काल लहिबिपहुचै निरवान ।
कातिग सुदी चौदसि सनिवार ।
पंडा ख न व्यापै रोग ।
पुजे तहा आल मण तणी ।
सुख स वमै बहु सांगानेर ।
भरे पटोला मोनी हार ।
सोभै चदवा तोरण घणा ।
राजकवर सेवह बहु तास ।
दुखी दलिद्री पुरवै आस ।
पुजा करइ जयहि अरहंत ।
जिह आहिमिद सुगे सुख वास ॥
मगल अनतकीर्त्ति मुण्ड ।
मगल ब्रह्म राइमल सुजाण ॥

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

अक्षर मात जु भूलौ होय,
अति अघाण मति थोडी भई,
बारवार नवि भणै पसार,
जो नर जीव दया को पाल,

पंडित जन सहु खमिज्यो माहि ।
कथा पचमी व्रत की कही ॥
जामै जीव दया व्रतसार ।
रोग मोगा न व्यापै काल ॥

संवत् १६६० वर्षे भाद्रपदा बुद्धी १ शुक्रवारि पोथी लिखी सा० जता पाटणी दानुकाकी लिखी आगरा
मध्ये साहिभीरहा की हवेली श्री जलाखाकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी ।

खडेलवाल वर वंस में
 अन्नोदक कारत पायकै
 नंदन सोभाचन्द को
 छदं कोस पिंगल तनों
 अन्नोदक के जोग तै
 सुख सौ तहै निवसत भयौ
 तहां मिल्यो करन भली
 नगर करौली सौ जहां
 सकल कला मै निपुन अति
 नथमल के ऊपर सदा
 भगतामर जी की कथ
 बाची तब सुनि के भयो
 सुनि नथमल बचन को
 मूल प्रथ अति कठिन है
 लालचन्द सौ तब कही
 जौ याकी भाषा बनै
 जौ लग रचिये छद को
 जो लौहे सुभ ध्यान की
 निज पर हेत विचार के
 दोऊ मिलि भाषा रची
 सवत अष्टदश सत जानै
 जेठ सुकल दशमी बुधवार
 परमदेव इस जगत मे
 जैवतो वरतौ सदा
 भवजलतारनहार
 दयासिधु जग ताल
 सुखदाई संसार मे
 नथमल साल सुन मात है

गौत विलाला जग विदित ।
 वसै भरतपुर मे सुखित ॥
 नथमल निपट अयान ।
 ध्यान अस नहि जान ॥
 सो हीशपुर आय ।
 कछु इके काल गमाय ॥
 पुन्य तने परभाय ।
 पंडित लाल सु आय ॥
 कविता करत असेस ।
 करत सनेह विशेष ॥
 तिन जिन भवन मंगार ।
 मो मन हरष अपार ॥
 उर मे कियो विचार ।
 पंडित करै उचार ॥
 नथमल हर्षित होय ।
 तो संमकै सब कोय ॥
 अर्थ बरन सुविचार ।
 प्रापति सुख दातार ॥
 नथमल लाल विशेष ।
 रायमल्ल कृत देख ॥
 तापै पुनि उनतीस प्रवान ।
 पूरन कथा करी सुखकार ॥
 आदि रिषभ अवतार ।
 भवजल तारनहार ॥
 कर्मभूविधि दरसाई ।
 भरुल जीवन सुखदाई ॥
 कथिन एक जिन को धरम ।
 देहु भगति अपनी परम ॥

इति श्री भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्र कान्यकुंड कथा संपूर्ण । मिति मांहे सुदी १४ शुक्रवार सवतै
 १८७३ का परी लिखी करीसीदास ।

रावल मालि सुपाट धरि,
विरचिएह सिणगारसि,

कुवर श्री हरिराज ।
तास कतुहल काज ।

५८. मिथ्या टुकड ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी । पद्य सख्या २३. लिपि सवत् १७६२.

मगलाचरण—

आदि जिणोसर भुवि परमेसर सयल दुख त्रिणासणो ।
भुवि कमन दिणोसर मोह तिमर हर तत्त्र पदारथ भासणो ॥ १ ॥
हूँ चिनती करु हवें आपणोय ।
तूँ त्रिभूवन स्वामी सुणि धणीय ॥
जे पाप करया ते कहूँ अनुक्त ।
ते मिथ्या टुकड होउ नमक्त ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी सुगति हिं गामी सिद्धि नयर मडणो ।
भव वधण खीणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय वंदणो ॥ १ ॥

५९. यशोधर वरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र सख्या २५. साइज १०।।X४।
इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १८२६. पडिा रूपचदज
के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

मगलाचरण—

मुनिसुवत चिन मुनिसुवत जी नतवु ते सार ।
तीथकर जे वीसमुं वाद्धित बहु दान दातार ॥
सारदा स्वामिणि वलीस्तवुं, जिमिचुद्धि सार हु वेगी मागुं ।
गणधर स्वामिनमस्करु, वली सफलकीरति गुरु भवतार ॥
तास चरण प्रणमीनें, करे सुरासुर सार ॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणुं जे रास जीवदयानु पीहर ।
पाप मिथ्यात निकदसार, रागमोह विहडणु ॥
गुणहतणु भडार सुणिड, जेनर अनुदिन भरणे
हिय में धरी बहुभात्र, ब्रह्म जिणदास इम परिभरणे
तेहनें शिवपुरे टाम ॥

दिल्ली साँहर विपे भलो
 घम सथान समांनया
 सुन्दर नद खुस्यालए
 भव्य धरौ निज चित्त में,
 संचत सतरासै भलें
 जे पढिसी सुणिसी सदा,
 कातिक पष्टो भावती,
 भव्य जीव सुणि जे पछे,
 जैन धर्म परभाव सौ
 तातै घम सुधारिहै

जेसिहपुर जानु ।
 अति धानन मानू ॥
 रचना ठहरानी ।
 भगवन की वांनी ॥
 अरु और इक्यासी ।
 ते ही सुख पासी ॥
 ससि कै उजियारै ।
 वे ही विसतारै ॥
 सबही सुख होई ।
 तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन् श्रीमन्नृपति विक्रमादित्यराज्यात् सवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्त्तमाने कार्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्या वृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहानावादास्थ जेसिहपुरामध्ये श्री महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाधिराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री मूलसधे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सारस्वती गच्छे कुवकुदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजा तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पंडित श्री रूपचदजी तत् शिष्य पंडित दयारामेण इद पुस्तक हस्तेन लिखित ।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा ।

मूलकर्ता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषाकर्ता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३३. साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २३-२६ अक्षर । रचना सवत् १७२१ लिषि सवत् १८०३

मंगलाचरण—

तीयेकर जिन बीसमौ मन मनसुत्रत बँदि ।
 ता समया की या कथा हिरदें धरि आनद ॥

प्रशस्ति—

शिव नवर खैराड महंत,
 तामें गठ वृंदी सुभ धान,
 महाराज राजा सिरताज,
 राव रतन गुन रतन समान,

हांडोती वर देस कहंत ।
 ईत्रपुरी सम सोभै आन ॥
 पातिसाही धामनवधिपाज ।
 सुरभान ।

धौलहर घाम घर घर मे विचित्र काम,
 नर कामदेव केसे सेवै सुखसर मै ॥
 चापी बाग वारुण बजार वीथी, विद्या वेद विबुध विनोद ।
 बानी बोलै मुखि नरमै, तहा करै राज राव भावस्थध महाराज ॥
 हिंदु धर्म लाज पाति सही आज कर मै ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

श्रावक लोग वसै धर्म वत पुजाकरै जपै अरिहत ।
 तिनकौ सत्रक लोहट साह, करी चौपई धरी सुभ लाह ।
 बस बघेर बाल भोवाल, दुगौरया वरगो भवि साल ।
 धरम धुरंधर धरमौ धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।
 हीरो सुन्दर बड़े सुमान, लघु लोहट बुधि कौनिधान ।
 श्री जिनदेव सगुरकौ दास, कीनौ भाषा ग्रन्थ प्रकास ।
 लघु दारध गण अगण विचार मात छद् विस्तार ।
 सव्व शास्त्र कौ लह्यौ न भेद, तातै बुधि मति करौ न खेद ।

× × × × × ×

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।
 पाख उजाल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥
 सवत सत्रासै इकईस करी चौपई फली जगीस ।
 मन अभिलाप सपूरन भए, जिन गुरु चग्न सीस धरि लए ॥

इति श्री राव जसोवर की चउपई बध कवा सपूर्ण । ग्रन्थ कर्ता श्री पद्मनाभ दत्तनुसारेण साह
 लोहट दुगरयो गोत्रे धर्मा सुत बघेरवाल वासिगढ वृदा राजराव श्री भावसिंहजी विजयराव्ये ।

६२. योगीरासो ।

रर्चायता पाडे श्री जिनदास । भाषा (पद्य) । पत्र संख्या २. साइन ३॥४॥ इच्छ । पृष्ठ पर १२
 पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४६-५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुढ्य जो आदि जु गौतम आदि जतो आदिनार्थी ।
 तास परपरहुवा मुनिवर दिगंबर सहताणी कु व कुदाचारिजगुस्मेग ॥१॥

इति रत्नपाल श्रेष्ठिनो रास सपूर्णम् । संवत् १८२३ वर्षे पोष वृदि १३ सोमवारे श्री मूलस
सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये श्री सुरतवृदिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानंदं
तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्ति जी लिखापितं ।

६४. राजुल पञ्चीसी ।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च । प
सख्या २५.

मंगलाचरण—

प्रथमहि सुमरुं ज्ञादौराय, पुनि सारद हि मत्तावस्यौ जीव वे ।
वंदौ अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वे ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावे, सुनत सब जन गह वरौ ।
राजुल पति श्री नेमि जिन सब संव कौ मंगल करौ ॥

६५. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७, पद्य संख्या ८५

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो धाय ।
रात्रि भोजन कहुं निहाल, साभल ज्यो सहुं वाल गोपाल ॥

अन्तिम पाठ—

भोला काई भ्रमे पडो जीस्यो जू उ महार ।
रात्री भोजन परहरो जेम पावो भवपार ॥ १ ॥
मूल सब मङ्गल मणी सरस्वती गच्छै राय ।
भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय ॥ २ ॥

६६. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता श्री कि नसिंह । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज ६×४ इञ्च । पद्य
सख्या ४१५.

मंगलाचरण—

समोसरण सोभा सहिते जगतपूज्य जिनराजे ।
नम्रौ त्रिविध भद्रदधिर्नको तरण त्रिद्वज जिहज ॥ १ ॥

सुनि के दोलति बेल सु बेंन,
नदौ विरधौ जिन मतसार,
दौलति बेल लहो निज बोध,
मन धरि गायो मारग जैन ।
सुखपावो षड संघ अपार ।
होहु होहु सब को प्रतिबोध ।

संवत् १८०८ कार्तिक मासे शुक्लपक्षे त्रिंशो १४ भौमवासरे उदयपुर मध्ये सेवकालुवालालजी सुल
जी की बहु वाई मोठी तथा राजवाई ने लिखा ।

६८. व्रतकथाकोष ।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११४ साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७८७. लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ बद्ध जिनराय,
धनुष पक्षसै जाकौ काय,
बद्धमान बंदौ जिनदेव,
सप्त हस्त तन हेम समान,
कर्मकलक रहित सुकधाय ॥ १ ॥
वृष लक्षण सोभे अधिकाम ।
प्रियकारिणी मात सुत एव ॥ २ ॥
सिद्धारथ नृप को सुत जान ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिशि की कूट मे जो सु कछौ आवस ।
तिस मंदिर मांही रदै पंडित लिखमीदास ॥ १ ॥

॥ सबैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलस्थंभ भट्टारक कौ पदम्व जाकौ सोहितु है ।
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनी सुमूरति लखेतें मोहितु है ॥
जाही के सुगच्छ माहि पंडितश्रीय जु दास बानी कामधेनु तें सुग्यान दोहि इतु है ।
खिमावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति घोस आगम विचार टोहि इतु है ॥२॥

x x x x x

अैसे लिखमीदाम डिग में कुछ पद्यो सुग्यान ।
पठन कीयो मो बुध्य लौ वै तो ग्यान निदान ॥
तिनिहीं के उपदेम तें भाषा सार बनाम ।
श्रुत सागर ब्रह्मचार कौ सुभ अनुसार सुनाय ॥

॥ चौपई ॥

सांगानेर धकी इकवार,
श्री जिनराज तर्णी बरसव,
में आयौ दिही सुमकारि ।
करिहूँ सुखदा मनवच एव ॥

बलात्कारगणो सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्र कीर्ति आम्नाये खण्डेलवालान्त्रये शेरपुरा की श्राविका लिख मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थ उपदेश वाई धनाई । लिखत पाडे कैसोसाह मान्या सुत सगही पूरा सगुणदत्त देहुरा को पाडे लिखी ।

७१ समयसार नाटक ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११८, साइज १०×५६ इञ्च ।
रचना सवत् १६६३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कहौ है जैसे,
कुदकुटं मुनिमूल उथरता,
समैसार नाटक सुखदानी,
पडित पढे मूढमति वृम्भै,
पाडे राजमल्लजिनधर्मी,
तिह्री गरंथ की टीका कीनी,
इहि विधि बोध वचनिना फैली,
प्रगटी जगत माहि जिनवानी,
नगर आगरे माहि विख्याता,
पच पुरुष अति निपुन प्रवीने,

नाटक भाषा भयौ सु अैसे ।
अमृतचन्द्र टीका के करता ।
टीका सहित संसकृत वानी ।
अलपमती कौ अरथन सूम्भै ।
समैसार नाटक के मर्मी ।
बालाबोध सुगमकरिदीनी ।
समै पाइ अथ्यातम सैली ।
घर घर नाटक कथा वखानी ।
कारन पाइ भये बहु छाता ।
निसिदिन ग्यान कथा रस भीने ।

॥ दोहा ॥

रूपचद पडित प्रथम,
तृतीय भगौतीदास नर,
घरमवास ए पच जन,
परमारथ चरचा करै,
कयहौ नाटक रस सुनहि-
कवहौ विग बनाई कै,
वास हमारा टोडो जानि,
फेर जिहानावाद मन्तारि,
महावीर को मन्दिर जहा,
चित कौ रागरु घरम घरु,
अतुर भाव विरता भए,

दुतीय चतुर्भुज जान ।
कौरपाल गुणधाम ॥
मिलि बैठहि इक ठौर ।
इन्हीं के कथन न और ॥
कवहौ और सिवत ।
कहै वोव वितत ॥
सागनेरि वसे पुनि आनि ।
आप रहै जैस्थं व पुरिसार ॥
सकल पच जन आवे तहा ।
सुमति भगौती पास ।
रूपचद परगास ॥

॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरव, नाटक भाव अनत ।
सोह आगम नाम मै, परमारथ विरतत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धात पूर्णम् ।

७२. समयसारनाटक भाषा ।

भाषाकार श्री रूपचन्द । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या १३७, साइज १२।।×५।। इञ्च । पद्य संख्या ७२४, महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य में अर्थ लिखा गया है । रचना सत्रत् १७००.

मगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ, कौ लग होय वखान ।
रूपचन्द नोहु लखै, अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्हे,
सत्रहसै वीते परिठानु आव रस मै ।
आसू मास आदि घौसु सपूरन ग्रन्थकन्ही,
वारतिक करिकै उदारससिमै ।
जाँ पे यहु भाषा ग्रन्थ सवद सुबोध या कौ,
ठौह विनु सप्रदाय नावै तत्व वस मै ।
यातें ग्यान लाभ जाति सवनि कौ वैन मानि,
त्रात रूप ग्रन्थ लिखये महा शात रस मै ॥ १ ॥

खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मै ।
समसाखमाडि जिनहर्ष जू वैसगी,
कवि शिष्य सुखवद्ध शिरोमनि सधम मै ।
ताके शिष्य दयासिध गणी गुणवत,
मेरे वरम आचारिज विन्यात श्रुत धर मे ।
ताकौ परमाद पाड रूपचन्द आनद सौं,
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मै ॥ २ ॥

सागानेर सुथान मे देश हुडाहडि. सार ।
 ता सम नहि कौ और पुर, देखे सहर हजार ॥
 अमर पूत जिनधर भगत, जोधराज कवि नाम ।
 वासी सागानेर कौ करी कथा सुखधाम ॥
 धर्मदास को पूत लधु जाति लुहाड्यो जोय ।
 नाम कल्याण सु जानिये कवि कौ मामौ सोय ॥
 ताके पढिबे कारनै, कियो ग्रन्थ यह जोध ॥
 नाम समकित कौमुदी, दायक केवल जोध ॥
 इहै समकित कौमुदी, जो नर पढै सुभाय ॥
 सो सुर नर सुख पाय कै अनोकरमि सिव जाय ॥

॥ चौपई ॥

सवत सत्रासै चौवीस फागुन बुदि तेरस शुभ दीस ।
 सुकरवार सो पूरन भई इहै कथा समकित गुन ठई ॥

॥ दोहा ॥

ग्यारासै अठहत्तरि इहै छद चौपई जान ।
 क्यौ कौमुदी ग्रंथ कौ जोध सुमति अनुमान ॥

महाराम के हेतो सौं राखे अपने पास ।

काम खजाना कौ द्यौ नथमल कौ सुखरास ॥

पुनि भाषा रचना विषै धार-यो में उपयोग ।

पै सहाय विन होय नहीं, तवहि मिल्यो इक जोग ॥

कारन विन शुभकाज की सिद्ध न होय लगाव ।

तातै सो कारन सुनौ, बुव जन सुख करनार ॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खान, बीजामत सु गढ़ नभ भान ।

वसवा नाम नगर सुखधाम, मूलवास जानौ अभिराम ॥

अमोदक के जोग प्रसाय, वसुवा तजै भरतपुर आय ।

जिनमन्दिर मे कियो निवास, मूलवास जानौ अभिराम ॥

७५. सिद्धान्तसारदीपक ।

रचयिता श्री नथमन विलाला । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १६६ साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्ति तथा प्रति पंक्ति में ३२-४२ अक्षर । भट्टारक सकलकीर्ति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है ।

सर्वदर्शी सर्वज्ञ महत सकल अर्थे दीपक श्रीमंत ।

गणधर पद वदित जगनाथ, चढौ चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जिहिं विधि भाषा ग्रंथ यह, भयो परम हितकार ।

सो वरतन बुधजन सुनो, करि निज चित्त इक ठार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

नगर आगरो परमपुनीत,

साधमीजन वसै विनीत ।

जहां जेठमल साह सुजान,

गुन गन मंडित परम निधान ॥

ताके तनुज दोय गुनवान,

निजकुल कमल प्रकाशन भान ।

जेठौ सोभा चंद उदार,

लघु सुत गोकुलचंद विचार ॥

वस खण्डेवाल अवदात,

गोत विलाला जग विख्यात ।

अन्नोदक को कारण पाय,

वसे भगतपुर माही आय ।

॥ दोहा ॥

नदन सोभाचंद कौ, नथमल निपट अयान ।

छद्द कोस पिंगल तनीं ज्ञान अस नहीं जान ॥

॥ चौपई ॥

सगही चादूवाड प्रसिद्धि,

केमोदास वरत बहु रिद्धि ।

मयाराम ताकौ सुत सही,

पोतदार जानै सब मही ।

मोदी... महाराज जाकौं सनमान दीहनीं,

फतेचद पृथ्वीराज पुत्र वनमाल के ।

फतेचद जूके पुत्र जसरूप जगन्नाथ,

गौतमानधर में धरैयासुभवाल के ।

ता में जगन्नाथ जूके बुझिनेके हेतु,

हम व्यौरी कैं सुगम कीन्हे वचन दयाल के ।

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे त्रिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यत महात्मा गुमान
नासरोदा मध्ये ।

७६. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२. साइज ६×४ इञ्च । पद्य सं
१०४. रचना संवत् १६६१.

मगलाचरण—

सोभित तप गजराज सोस सिन्दूर पूर छवि,
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि
मगल तरु पल्लव कषाय कंभार हुतासन
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासन
इहि विधि उपमा सहित अरुन वरन सत्ताप हर ।
जिनराय पाय नपजोतिभर नमत बनारसी जोरिकर ॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगल इन्द्र चित्त ।
तिन गरथ भाषा कियो बहुविध छंद कविता ॥
नाम सुक्ति मुक्तावली द्वाविंशति अविकार ।
शत शिलोक परवान सव, इति गरथ विस्तार ॥
सोलास ईक्यानके रितु ग्रीषम वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मित पाप ॥

७७. मीताचरित्र ।

रचयिता कविवर रायचंद । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४४. साइज १२×५। इञ्च । प्रत्येक पृ
पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३०-३३ अक्षर । रत्नना संवत् १७१३. लिपि संवत् १८७८. प्रति पूर्ण है ।

मगलाचरण—

प्रणमो परम पुनीत नर वर्द्धमान जिनवेध ।
लोनालोक प्रकास तस करे समकितो सेव ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

कियो प्रबध रविपेण नै रघु पुराण जिय जांच ।
बदे अरुध ईण मैं कशौ रायचंद उर आण ॥

वादोचन्द्र वाद बहु जीत्या
 महीचन्द्र मुनि जन मन मोहन,
 परवादी नामा नमू' क्वाव्या
 मेरुचन्द्र तस पटे सोहे,
 व्याख्याय वांणी अमीयसमाणी,
 गोर महीचन्द्र मीप जयसागर,
 नरनारि जे भए छे सू ए छे
 हूँ बड वसी रामां संतोपी.
 तेह तणो पूत्र से तस घरे
 तेह तणे आदे सासी हरणे,
 साभल भांगा ता सूख हो सी,
 संवत सतरवत्रीसावरसे
 वृधवारै परिपूर्ण ज चरयुं,
 आदी जिणैसर तणे प्रसादी
 साभलतां गातां ए सहनै,
 महापुराण तणे अणुसारी,
 कवि जिन दोष में देसो कोई,
 मुक्त आलसूने उजय चढयुं,
 तेह प्रसादे ग्रन्थ ए कीषो,
 सीता सील तणो ए महीना,
 भावधार जे गए महीना,

घट सरती गुणमाल जी ॥
 वांणी जेह वीस्तार जी ।
 गर्वन करो भगार जी ॥
 भोहे भवीयण मन्न जी ।
 साभलोए के मन्न जी ॥
 रच्यो सीता हरण नो रास जी ।
 तस घरे जय जय कार जी ॥
 रामादे तेह नी नार जी ।
 जय जय कार जी ॥
 कीधु मन उलास जी ।
 सीता सील विलास जी ॥
 वैसाख सुदी बीज सार जी ।
 सूर तनय रयकार जी ॥
 पद्मावती पसाय जी ।
 मन मां आनद धाये जी ॥
 कीधूं से मनोहार जी ।
 सोषजो तमे सूखकार जी ॥
 सारदा ए मती दाष जी ।
 श्यामदासे जसलीव जी ॥
 गाउ सह नरनार जी ।
 तस घर मगल च्यार जी ॥

॥ दोहा ॥

भावधार जे भए सूर्ये सीता सीलविलास ।
 जयसागर रई उचरे यह चेतस मन नी आस ॥

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-
 वणनं नाम षष्ठमोऽधिकार समाप्तः ।

संवत् १९२५ वर्षे पोषवृद्धी २ शुक्रवासरं गाम श्री देवद्वनगरं पद्मप्रभचैत्यालये श्री मूलसधे सर-
 भतीगच्छे बलात्कारण्ये श्री कुदकुंदाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री रदनचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवचन्द्रजी
 तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत् शिष्य ब्रह्म गोचलजी तल्लघु आता ब्रह्ममेवजी लिखितं स्वहस्त ।

श्री पदमनन्दि पाट हुंवा
 भुवनकीर्त्ति तपमूर्त्ति
 श्री विनय कीर्त्ति पाटि उपज्या
 भव्य कुमुदचंद्रजसो,
 आम्नाय गुरु श्री शुभचद्रती
 अध्यात्म गुरुकर्मसी ब्रह्म,
 अथर शास्त्र कवित गुरु,
 जेण धर्म उपदेश दियो
 ते सहु गुरु हुवा मुक्तणां,
 गुरुगुण नविलोपिये,
 सुम्न हृदय पदम माहि,
 मोह तिमर दूरै हरी,
 सामंतभद्रसूरी कृत,
 आसाधर पंडित कृत,

× × ×
 वानवार देश सोहामणि,
 हाट हार मंदिर मालीया,
 श्री आदिनाथ तीरथ तणों,
 समोसरण कल्याण त्रय आदि,

× × ×
 त्रेपनक्रिया रास जेणें कायो,
 श्री महावीर रास कीयो,
 कर जोडि पद मों कहै,
 निज बुद्धि नैं अनुसारै,
 × × ×
 सवत संख्या जिन भावना,
 मास माहि सुहामणों,
 तिस सरया चारित्र भेदी,
 शुभ नक्षत्र शुभ योगि,

× × ×
 श्रावकाचार तयो श्रावकाचार तयो रास कियो मैं एणा-

सकलकीर्त्ति भव तारतो.
 श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो ।
 भट्टारक श्री शुभचद्रतो ॥
 कुवादी गजमृगेंद्रतो ।

आगम गुरु मुनिचद्र तो ।
 शिष्य गुरु हीर ब्रह्मिद्रतो ॥
 ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो ।
 शास्त्र श्लोक पट भापना ॥
 कर जोडि करु प्रणाम तो ।
 गुरु लोपी पापी नाम तो ॥
 गुरु भानु वाणी किरण तो ।
 ते गुरु तारण तरण तो ॥
 वसुनन्दि श्रावकाचारतो ।
 सकल कीरति कृत सारतो ॥

× × ×
 शाकपुर नयर मभारि तो ।
 प्रजा वासि वर्ण च्यारतो ॥
 सोहै जिन प्रासाद तो ।
 जिनविषु करि आह्लादतो ॥

× × ×
 जेणें कीयो ध्यानामृत रासतो ।
 तेणि कीयो एह भासतो ।
 श्रावका चार कीयो रासतो ।
 साछकारी मित्र जिणदास तो ॥
 × × ×
 संवच्छुर सख्या प्रमाद तो ।
 भावना सुदि मर्याद तो ॥
 रस संख्या शुभ वारतो ।
 कीयो मैं श्रावकाचार तो ॥

× × ×

तासु महिन बुद्धि नहि आन,
 होय अयुद्ध जहाँ पदहीन,
 वार वार जपौं करि जोर,
 वदौ जिन सासन कौ धम्म,
 वदौ गुरु जे गुण के मूर,
 वदौ माता सीह वाहिनी,
 वदौ मुनियन जे गुन धम्म,
 वंदौ सज्जन कुल सुख धाम,
 महिमा सागर महा सुजान,
 जाकै हृदें दया कौ वासं,
 ताकै एक अपूरव रीति,
 सुख में जल पीवै नृणा खाय,
 तिनकी सक सीह मनि धरें,
 मारसवद मुख थै नहि चवै;
 नवौ रिद्धि पूरण भडार,
 नृप अनेक सेवै दरवार,
 सुखी भये जिनसए पाय,
 परनारी परघन अति आहि,
 सत्तराज महि मडल तेन,

कोयौ चौपई वष प्रवान ।
 फेर सवारौ गुणियन चीन ॥
 बुधिजन मोहि देहु मति खोरि ।
 जापमाय नासै अघ कर्म ।
 जिनके होय ग्यान कौ पूर ।
 जातैं सुमति होय अतिवनी ।
 नवरस माहिमा वदतिन कर्न ।
 वदौ धम्म बुद्धि वर नाम ।

जीवन केवहु देयन त्रास ।
 सुरही सौं अति राखै भीति ।
 अपणै मारग आवै जाय ।
 अकरर कै आयस ते डरै ।
 एक छत्र महि मडल तवै ।
 हय गय वाहण अगणै अपार ।
 दुःखी दीदन कौ आधार ।
 विमुख भये दुख तहै अवाय ॥
 तिन तन कोउ सकयन चाहि ।
 सुरपति हू थै अविक्रमतेज ।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई वर्ध परिमल्ल कृत सम्पूर्ण । सवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १०
 भांगसासरे तनुदिने इद पुस्तक लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्ये । तनुदिने इद पुस्तक लिखायत वाई
 तुलसा पठनार्थ ।

८२. श्रीपालरास ।

रचयिता ब्रह्म श्री रावमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४०, माइज ७x६ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य
 सत्या २६७, रचना सवत् १६३०, लिपि संवत् १६८६,

मगलाचरण—

हो भवामी प्रणमो आदि जिणंद, वंदौ अजित होई आनंद ।
 सेभौ वंदौ जुगति स्वौ, हो अभिनंदन ना प्रणमो पाई ॥

श्री सरस्वती गच्छ गण बलात्कारान्वय कुदकुद महान ।
 नद्यम्नाय भव्याचित कमलसु पदमनन्द जिम भान ॥ १ ॥
 तिनके पटि श्री सरलकीर्त्ति सुनि भवि जीव समोद दिवाइ ।
 सुकवि सरल वानी करि महीयल बुधजन मन रजवाइ ॥ २ ॥
 तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तसकीर्त्ति भवनपसरान ।
 ज्ञातातत्त्वपुरान काव्य करता जिन विव प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥
 तिह पर श्री ज्ञान भूपण विराजै परकासन सुभ ग्यान ।
 निज वचनै दिन कर सम उदयै अद्युत मनास भव्यान ॥ ५ ॥
 तिन पट विजय कीर्त्ति जैवतं गुरु अन्यमती परवत समान ।
 स्याद्वाद वजै करि फौडत तिन सिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥
 जिन पुनी पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियौ सुभग बखान ।
 ना कवि मद थै न कीर्त्ति अहभार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥
 निज अघहण कारन ग्रंथ सरकृत ता मुनि सशेष आनि ।
 भाषा करो ढाल चौवन मे लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥
 सुनौ भवी भात्रीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुभचन्द्राचार्ये तिन्ह,	कलयौ सहसकृतसार ।
ते सुनि, लक्ष्मीदास भनि,	भाषा ढाल पियार ॥ ६ ॥
ना मै देखा ग्रथ फौऊ,	व्याकरण छद न जानि ।
तुच्छ मति रह भाषा रची,	बुधजन मत्तीह सवान ॥ १० ॥
आगम चूक पनीसर्कति,	उदीर कै धन जूत क्रपनतनूर ।
तासा मित्रापन अधिक,	प्रति पर सपरस मान ।
कूसलसीव करनी उचित,	ताकी सम नही आनी ॥ ११ ॥
पडित जसरथ सुत सुभग,	तवानद तस नाम ।
ता उपदेम भाषा रची,	भविजन कौ विसराम ॥ १२ ॥
सवत सत्तरासै उपरि	तेतीस जेठ सु पाए ।
पचमो ता दिन पूणै लहि	मगल करी भाष ।
फेरि लिखी गुनचास मै	लक्ष्मीदास निज बोध ।
भूलौ चूकौ सवइ फौउ	बुधजन लीज्यौ सोधि ।

रितु वसंत मास वैशाख,

नौमि सनीसर कृष्णहि पक्ष ।

× × × ; × × ×

स्व मी सुव्रत नाथ जिनद,
न.सै पाप भली मति होइ,

सुमरत होइ सिद्धि आणद ।
नमौ कीत जाँडे कर दोन ॥

८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुलाशचन्द्र । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या २४६, साइज १२×११ इक्ष । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ४०-४२ अक्षर । रचना सवत् १७८०, तापि सवत् १८६०, लिलि सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीर वदौ जिनदेव,
तीन लोक मे मंगल कर,
नेमिसुर वदौ चित. लाय,
पाप विनाशत. हे जिन नाम,

द्वारादिक करिइँ तिनसेव ।
ते वंदौ जिनगाज अरूप ॥ १ ॥
तिहु जग करि पद अधाय ।
सब जिन नाम वदौ गुणधाम ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन,
तहां ब्रह्म जिनदाम जू,
ताही श्री जिनदास नी,
सो अनुसार खुस्याल ले,

सब जीवन सुखदाय ।
करि लीही अधिदा ॥ १ ॥
प्रन्य रन्यौ इह सार ।
रह्यो भविक मुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

मेरी यात सुनो अवे,
क लौ जाति तुस्याल जु,

भव्य जीव मन लाय ।
सुन्दर सुत जिनपाय ॥

॥ चौपई ॥

देरा दुठार जायो सार,
विसनसिध सुत जैनिदाय,
देशतनो महिना अति बनी
जिन मंदिर भत्रि पृथ्ठ करे,
जिन मंदिर करत्र. वै नना,
रव जात्रादि होत बहु ब्रह्म,

तामै धरम तणु अचिकार ।
राजकरै मयकुं सुखदाय ॥
जिन गेहा करि अति ही बनी ।
केडक व्रत ले केडक धरे ।
सुरग विनत्र तनी वर द्यवा ।
पुन्य उपावन भविषन तहां ।

ग्रन्थ तनी भाषा रची,
जसको कारिज ना करयो,

॥ चौपई ॥

असी जानि भविक सुखदाय,
काला जाति खुस्याल सुनाम,
सवत् सतरासै अरु असी,
सुकरवार अति ही वर जोग,
पहर डोढ दिन वाकी रह्यौ,
कसर देखि पडित जन कौय,
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नाहि,
यातै दोष न दीजौ कोय,
जिनवर चरित सुवर्णतैं,
जे भवि सुमरै भाव सौं,
हरिवश महत्शास्त्र
नाम्ना खुस्यालचद्रेण

जिन सेवक अनुसार ।
करयो भविक उपगार ॥ १२ ॥

पढिजे सुनिजै मनवचकाय ।
भाषा रची परम सुख वाम ॥ १३ ॥
सुदी वैशाख तोज वर लसी ।
सार नख्यतग कौ संजोग ॥ १४ ॥
भाषा पूरण करि सुख लह्यौ ।
सुन कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ॥
सार विचार नहीं मुक्त माहि ।
अल्प वणौ गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥
उपजै पुन्य अपार ।
ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥
तस्य भाषा विनिर्मित ।
भव्याना खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

सवत् १८६० का भाद्रमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ न लिखते वैष्णव चेतनदास नासरोदा नगर
मन्ये शुभ भवतु ।

८७. हरिवशपुराण ।

रचयिता श्री नेमीचन्द्र । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७७. साइज १२x५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या
१३०५ रचना सवत् १७६६. तिपि सवत् १७६३. प्रति पूर्ण है । इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है ।

मगलाचरण—

श्री भगवान जी वीनउ, अरहत देव निरदोष अटारतौ ।
झीयालीस गुण शोभता, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतौ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस हु टाइड सोभितौ नाना
द्वजपट्टिझी बोपमा जसी
षट् दिशि सरवर वापिना
निरमज पाखी न्यौ भरया,

त्रिवि वृच्छ भला मुसार तौ ।
मन वाञ्छित फल का दत्तारतौ ॥ १ ॥
नवी कुवा अर कुड अपार तौ ।
रुमल उपरि भ्रम करे गुंजार तौ ॥ २ ॥

सरसत्ति गळ महा सोभिता,
 कुदकुंद भट्टारक भणौं,
 सूत्र सिधात ल्याया तवै,
 तां पाळै क्रमि क्रमि भया,
 पंच महाप्रत पालवै,
 भट्टारक सब उपरै,
 कीरति चहुं दिसि विस्तरी,
 प्रमत्त मै जीतै नहीं,
 खिमा खडग स्यौं जीतियां,
 ताकौ सिप नेमचद जी,
 सेठी गोत वदमावत्यां,

कुदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥
 जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।
 प्रगट वात जाणै सब एव तौ ॥ १७ ॥
 भट्टारक गुणधाम ।
 आचारै अभिराम ॥ १८ ॥
 जग कीरति जग जोति अपारतौ ।
 पाच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥
 चहुं दिसि मै सब ताकी आणतौ ।
 चौराणवै पट नाचक भाणतौ ॥ २० ॥
 लघु भ्राता तसु भगडु जाणितौ ।
 खडेलवाल तसु वै सब खाणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नेमचद कै सिख भला,
 पंडित चतुर विवेक सब,
 लिखसीदास दोदराज जी,
 ज्या दीयो उपदेस नै,
 देव गुरु शास्त्रप्रसाद थी,
 रच्यौ रास श्री नेम कौ,
 आचार्य ब्रह्म वाई मवै,
 नेमचद विनती करे,
 सतरासै गुणहत्तरै,
 रास रच्यौ श्री नेमि कौ,
 दोय सवेया दीपता,
 दोइ सै माठि दोहा कया,
 एकरहार दम टाल की,
 वार्ता ठाम पेंतीस मैं,
 गाथा दोहा मोरठा,
 वार्ता उपरि जाणि र्यौं,

हू गरमी रुपचद ।
 सील तणा सब कद ॥ २२ ॥
 पंडित सब मनकं सिर मोरतौ ।
 रासौ रच्यौ विविध स्यौं दोरतौ ॥ २३ ॥
 सरसति माता तणौ पसावतौ ।
 नेमिचंद मनि धरकरि भावतौ ॥ २४ ॥
 पंडित मवयन स्यौं मनहारितौ ।
 कवियन सत्रही लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥
 सुदि आसोज दसै रवि जाणतौ ।
 बुवि सारु मैं कीयो वसाणतौ ॥ २६ ॥
 सोरठा कहियै तथा पचीस तौ ।
 एकादास कड सैर जगीमतौ ॥ २७ ॥
 गाथा कही सत्रै शुभ शुद्ध तौ ।
 कहे अविहार द्युत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥
 सबमाल कया तेरासै आठतौ ।
 सत्र प्रथ उरईस सेंबाल आठतौ ॥ २८ ॥

परिशिष्ट

१. पउमचरिय ।

रचयिता महाकवि स्वयंभु त्रिभुवनस्वयंभु । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३७५. साइज ११×४। इअ
प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर । लिपि सवत् १५४१ बैशाख सुदी १५ ।

प्रारम्भिक अंश—

(१)

एमह एव कमल-कौमल-मणहर	—	वर-ब्रह्म-कति-सोद्विहं ।
उसहस पायकमल		ससुरासुरवांदय सिरसां ॥ १ ॥
चउमुहमुहम्मि सद्दो		दती सह च मणहरो अत्थो ।
विण्ण वि सयभुक्कवे		फि कोरइ कइयणो सेसो ॥ २ ॥
चउमुहएवस सद्दो		सयभुएवस मणहर जीहा ।
भदस य गोग्गइण		अज्जवि कइणो ए पावंते ॥ ३ ॥
जलकीलाए सयभु		चउमुहएव च गोग्गहकहाए ।
भद च मच्छवेहे		अज्जवि कइणो ए पावंति ॥ ४ ॥
तावच्चि य सच्छंदो		भमइ अववभस-मच्च मायगो ।
जाव ए सयभु-वायरण-		अकुसो पडइ ॥ ५ ॥
सच्छद्द-वियउ-दाढो		छदालकार-एहर-टुप्पिच्छो ।
वायरण-केसरड्ढो		सयभु पचाणणो जयउ ॥ ६ ॥
दोहर-समास-णालं		सद्ददल अत्थकेसरगविया ।
बुइ-महुयर-पीयरस		सयभु-कवुप्पलं जयउ ॥ ७ ॥

(२)

उड्डमाण-मुइ-कुदर विण्णगय,	रामकहाणए एह कमागय ।
अस्सरवास-जलोहमणोहर,	सुयलकार-उदमच्छोहर ।
ओह-समास पवाहावन्किय,	सक्कय-पायय पुट्टिणालकिय ।
देसीभामा-उभय-तडुजल,	कविटुक्करवणसदसिजायल ।
अत्थवहल-कन्नोलाणिट्टय,	आमोसय-सम तूहपरिट्टिय ।

तिहुयणसयंभु एवर एक्को कइरायचक्रिगुण्णो ।
 पउमचरियस्स चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥
 कइरायस्स विजयसेसियस्सवित्थारिओ जभो भुवणे ।
 तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥
 तिहुयणसयंभुधवलस्स को गुणो वणिणउ जए तरइ ।
 चालेण वि जेण सयंभुक्वभारो समुव्ववूढो ॥
 वायरणदढक्खधो आगमअ गोपमाणेवियडपओ ।
 तिहुयणसयंभुधवलो जिणतित्ये वहउ कव्वभर ।
 चउमुइसयंभुत्रापण चाणियत्थं अबक्खमाणेण ।
 तिहुयणसयंभुरइय पंचामचरिय महच्छरिय ॥
 सव्वे वि सुयापजर सुयव्वप ढअक्खराऽसिक्खति ।
 कइरायस्स सुओ पुणसुयव्वसुइगव्वसंभूओ ॥
 तिहुअणसयंभु जइ एइो हतुणदणो सिरिसयंभुदेवस्स ।
 ऋवं कुलं कवित्तं तो पच्छको समुद्धरइ ॥
 जइ ए हुउ च्छदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुलहुतणउ ।
 तो पट्टडियाऋवं सिरिपचमि को समारेउ ॥
 मव्वो वि जणो गिण्हइणियतायविट्ठत्तइव्वसत्ताण ।
 तिहुयणसयंभुणा पुणुगहिंयं वसु ऋत्तदव्वसत्ताणा ॥
 तिहुयणसयंभुमेक्क मोत्तूण सयंभुक्वमयरहरो ।
 को तरइ गंतुमतं मञ्जेणिस्सेसमीसाण ॥
 इय चारुपोमचरियं सयंभुएवेण रइयसमत्त ।
 तिहुयणसयंभुणा त समाणिय परिसमत्तमिण ॥
 चेष्टितमयण चरित करण चारित्रमित्यमोयशब्बापेदथा ।
 या रामोयणमित्युक्तं तेन चेष्टित रामस्यबोधपति ॥
 शृणोति जन तभ्यायुवृद्धि मीयते पुण्यं वा ।
 श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरपि ण करोति वैरमुपसमेति ॥
 मो वरसुयंमिभूवइ रायतणयकथपामचरिय अबसेस ।
 सपुण्ण वदइवलहुउअपुण्ण गोदंढनयणसुयणतविरइय ॥
 वउद पढमतणयस्स वच्छद्व दारं तिहुयंणसयंभुणारइयं ॥
 मइयं वदइयणागसिरिपालपहुइ भवयणासमूइस्स ।

धत्ता

परिणामाणि हलेसलढणु,
 कलिऋदल अट्टवि गुणगरुव,
 पउण्दिपमुहगुणजइणवित्त,
 मा चारु चायसुहडत्तणेण,
 वभेण भुन्नणु काश्रो ण भुवु,
 परुसेण परुपरा मेहयात्त,
 कृण्णेण कणयकोडिडि कयत्थ,
 चाएणात्रिदुत्थिय कयविरामु,
 तप्पखयरक्खणे गरुडदो अभागु,
 दिएणउ सिवेण सप्पहोपससु,
 जेणहु दवीइणा अट्टिदिएण,

सदवदरत्ता णट्टिय ।
 मड मुएविकसुसाठय ॥३॥
 महुतोकि कित्तिणउ किवरत्त ।
 अह हवइ सरस सुइत्तणेण
 गुयकणखलेदिएणउ दियहसवु ।
 खात्तयहरोवि दिएणयहरित्ति ।
 उयत्तित्तजित्त विप्पाण सत्थ ।
 हारचट्टु चदमाणहियणामु ।
 जीमूयवाहूणेणावि अगु ।
 दह स्वखणमसरोरमसु ।
 को पावउ तियुयणे तहो पइएण ।

धत्ता

तहो चारुणाय उल्लणहवत्तिय,
 अज्जजिजणजणियाणदभरे,
 णिक्कलक्कित्तियाण जुत्तवीरवित्तियाए,
 ऊभुकुभयणणसु सु सारणो सुअोणिसुंभु,
 जुवुज ववभुतारु णीलुमारुदकुमारु,
 दोणु भीममो असंगु दुद्वरो मलिगुतुंगु,
 अज्जणो णिया रजूरु आसयामु आसपूरु,
 आइवे अदिण्णापिद्ध मालसणु पचहुट्टि,
 मउली तदेव सुच्चु सूरवीरुणिव्वचु,
 कुट्टु जट्टु डिडएउ चडयणु खदएउ,
 साहमीउ सार्दमल्लु भीमणउ भाइमल्लु,
 मिचलो मडामइवु पुंघु सोमल्लघु उवु,
 मिचइ उउवइउ उज्जमत्तविणउ,
 आरुणोउ आरुणु पु पट्टाउ ओविहत्थु,
 सुदउसु वीरउ उरुउउओसु अ मराउ,

कित्तिरमणिभिभयकरि ।
 भणइ भुवण भवणतरे ॥ ४ ॥
 देवुदाणवाहमल्लु रावणो जगेक्कमल्लु ।
 इंदई महिददक्खु अक्खओ गव म्हु वक्खु ।
 लक्खणो विवक्खतासु रामचट्टु सप्पयासु ।
 सावुहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भीममल्लु ।
 कीणु कसि कुसणामु दुट्टरिट्टकालपासु ।
 उप्पओ तल्लप्पहणि सुएणखए, रोपहारि ।
 वकिवीरि उभिभयकु संकुकेसरी णियकु ।
 वासणउ मोरएउ केउवोसुसावलेउ ।
 इट्टु सखलाट्टु गुल्लु देवईउ देवतुल्लु ।
 रोमसोमरोमजंघु रिच्छकहिताडिजघु ।
 चडइट्ट इट्टमसु सुट्टिउ मणिट्टु रंमु ।
 वोसलोविसालवत्थु इत्थिवच्छु सुइयत्थु ।
 मालिवाइणो रसिल्लु कुतली सुकुंतलिल्लु ।

शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

१४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
१.	उत्तरपुराण [पुष्पदंत]	१३६१ ज्येष्ठ सुदी ६ गुरुवार	
२.	क्रियाकलाप [अज्ञात]	१३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुकवार	

१५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

३.	आदिपुराण [पुष्पदंत]	१४६१ भाद्रपदा सुदी ६ बुधवार	
४.	पार्श्वनाथचरित्र [पद्मकीर्ति]	१४६४ भाद्रपदा सुदी २ शनिवार	११८६
५.	पट्टमोपदेशरत्नमाला [अमरकीर्ति]	१४७६ अषाढ सुदी ५ बु वार	१२७४

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

६.	आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१५८७ मर्गमिर सुदी २ सोमवार	
७.	उत्तरपुराण सटीक [प्रभाचन्द्राचार्य]	१५७७ अषाढ सुदी २ रविवार	१०८०
८.	धन्यकुमारचरित्र [सफलकीर्ति]	१५३३ पौष सुदी ३ गुरुवार	
९.	धर्मपरीक्षा [अमितिगति]	१५६६ पौषसुदी ६ गुरुवार	१०५०
१०.	धर्मसम्राट्श्रावणचार [मेधावी]	१५४० कार्तिक सुदी ५ गुरु	१५४१
११.	प्रतिष्ठापाठ [आशावर]	१५६० वैशाख सुदी १५ शनि.	१०८५
१२.	प्रश्नचनसारप्रामृतवृत्ति [त्र० रत्नदेव]	१५७७ अषाढ सुदी ३	
१३.	"	१५४३ भाद्रपदा सुदी ६	
१४.	राजवाचिक [भट्टाकलकंदेव]	१५८० अषाढ सुदी १३	
१५.	श्रावणचारसार [पद्मनन्दि सुनि]	१५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार	
१६.	सम्यक्त्व कीर्तुदी [अज्ञात]	१५८० फाल्गुण सुदी १४	

४४.	रत्नकरडशास्त्र	[श्रीचन्द]	१५८२	शक १४४७	११२०
४५.	वद्ध मान चरित्र	[जयमित्रइल]	१५६३	ज्येष्ठ सुदी ५ वृहस्पतिवार	
४६.	" "	" "	१५४५	वैशाख सुदी २ रविवार	
४७.	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्त्ति]	१५६२	कार्तिक बुदी ५ शनिवार	
४८.	" "	" "	१५५८	चैत्र सुदी १० सोमवार	
४९.	" "	" "	१५५३	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
५०.	पट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्दाचार्य]	१५८२	माघ बुदा ४	
५१.	" "	" "	१५६४	माघ सुदा २ बुधवार	
५२.	श्रीपालचरित्र	[तरसेन]	१५१२	चैत्र बुदी १२ मंगलवार	
५३.	" "	" "	१५८४	शक १४४६ भाद्रवा बुदी ८ रविवार	
५४.	" "	" "	१५७६	मंगसिर सुदी २ बुधवार	
५५.	सकलविधिविधानकाव्य	[नयनन्दि]	१५८०	चैत्र बुदी ४ गुरुवार	
५६.	सुदर्शनचरित्र	[नयनन्दि]	१५६७	माघ बुदी २ बुधवार	११००
५७.	" "	" "	१५०४	मंगसिर सुदी ६ गुरुवार	
५८.	सुलोचनाचरित्र	[गणिवेवसेन]	१५७७	पौष बुदी ६ सोमवार	
५९.	सुकुमाल चरित्र	[श्रीधर]	१५४६	ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार	१२०८
६०.	हरिपेण चरित्र	[अज्ञात]	१५८३	आसोज सुदी १० शनिवार	

१७ वीं शताब्दी

संस्कृत

६१.	जन्मूधामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१६६३		
६२.	जयकुमारपुराण	[ब्रह्म कामराज]	१६६१	भाद्रवा सुदी ३ शुक्रवार	
६३.	जीवधरचरित्र	[शुभचन्द्र]	१६३६	अषाढ सुदी १३ सोमवार	१५६६
६४.	दुर्गपदप्रबोध	[श्री ब्रह्मभगणि]	१६८१	कार्तिक सुदा ७	
६५.	वसपरीक्षा	[आमतिगति]	१६६६	कार्तिक सुदा ३ शुक्रवार	
६६.	नेमिनाथपुराण	[न० नेमिदत्त]	१६४३	शक १५०८ फाल्गुन बुदी ८ सोमवार	
६७.	" "	" "	१६७४	फाल्गुन बुदी ५ शुक्रवार	
६८.	पद्मपुराण	[वर्मकीर्त्ति]	१६७०		
६९.	भक्तानरत्नोन्नति	[गुणमुठर]	१६५४	कार्तिक सुदा १४	

१५०.	सम्यग्त्वकौमुदी कथा [जोगराज गोदोका]	१७६३	ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार	१७२४
१५१.	नीपालचरित्र [परिमल]	१७६४	पौष सुदी १० मंगलवार	
१५२	हर्षिवशपुराण [नेमीचन्द्र]	१७६३		१७६६

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

१५३	आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१८०३	माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार
१५४	आदिनाथपुराण [सकलकीर्ति]	१८३३	भाद्रवा शुक्लपक्ष
१५५	उपदेशरत्नमाला [मरुलभूषण]	१८२६	मगसिर सुदी २ बृहस्पतिवार
१५६.	करमण्डुचारित्र [शुभचन्द्र]	१८६१	
१५७.	ज्ञानसूर्योदय नाटक [प्राद्विचन्द्र]	१८३५	अषाढ सुदी १३ सोमवार
१५८.	दुर्गपदप्रवाष [वल्लभर्गाण]	१८१२	पौष सुदी १० रविवार
१५९.	पाडवपुराण [शुभचन्द्र]	१८३१	वेशाख सुदी ६ रविवार
१६०	पुराणसार संग्रह [सकलकीर्ति]	१८२२	कार्तिक बुदा ८ सोमवार
१६१.	" "	१८२४	मगसिर सुदी ८ शनिवार
१६२.	भोजप्रबन्ध [रत्नमन्दिरर्गाण]	१८०५	चैत सुदी ११
१६३	महीपालचरित्र [चारित्रसुन्दरर्गाण]	१८२५	ज्येष्ठ कृष्ण
१६४	मुनिसुव्रतपुराण [रायकृष्णदास]	१८५०	पौष सुदी ५ सोमवार
१६५	वरागचारित्र [वर्धमानदेव]	१८७३	आसोज बुदी ५ बुधवार
१६६.	वर्द्धम'नपुराण [सकलकीर्ति]	१८०४	माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार
१६७	सिद्धान्तमारसंग्रह [नरेन्द्रसेन]	१८०३	
१६८	मिन्दूरप्रकरण [सोमप्रभसूर]	१८२६	भाद्रवा सुदी २ बृहस्पतिवार
१६९	ह रवशपुराण [त्र० जिनदाम]	१८२७	ज्येष्ठ बुदी ५ सोमवार
१७०	श्रावकाच'र [लक्ष्मीचन्द्र]	१८२१	फगुण बुदी ५ रविवार

हिन्दी

१७१.	प्रादिपुराण [त्रय जिनदाम]	१८५६	मगसिर सुदी ३	
१७२.	ज्योतिषोपनिषद् [शोभानाथ]	१८२६	फागुण सुदी १० शनिवार	
१७३.	जन्मदामिनीचरित्र [पाडे जिनदाम]	१८५३	पौष शुक्ला बृहस्पतिवार	१६५२

ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

ग्राम व नगर का नाम	शासक का नाम	समय	पृष्ठ तथा पक्ति	विशेष
अदेहद्वारपल्लानगर	X	संवत् १५६७	२४x१२	
अजमेर	राव श्री जगमल	" १५८६	१४६x११	
"	X	१५६५	१३८x११	
अकबरनगर [वगाल]	महाराजा मानसिंह	१६६२	५०x१५	महाराजा मानसिंह वगाल के राज्यपाल थे
आगरा	अकबर	१६२२	६७x७	
"	"	१६४२	२१३x१२	
"	X	१७८१	२१४x५	
"	औरंगजेब [अवरगसाह]	१७२२	२३४x८	
"	X	१७७१	२४१x१५	
"	X	१६६०	२४४x२६	
"	X	१७६३	२५६x१२	
आमेर [अवावती]	सवाई जयसिंह	१७७७	७x७	
"	राजाधिराज भारमल	१६१६	७७x२	
"	"	१६११	१०४x२१	दूसरा नाम आग्रगढ है
"	"	१६१६	१२६x१५	
"	" पृथ्वीसिंह	१८२५	२१२x२३	
आल्हाबादपुर	X	१६११	१२८x१६	
बदयपुर	महाराणा जगतसिंह	१७६८	२१६x२१	
"	X	X	२५५x२७	
"	X	१८०८	२५५x४	
चरौली	X	१८२६	२४६x८	
घाताह	X	१७१०	२०८x२८	
हुमनेह [हुमनामेर]	X	१६०४	८१x१०	
कानपुर	नरसिंह	१८८१	३५x१६	

जिहानाबाद [आगरा]	×	१७६३	२१४×१५	जैसिहपुरा का नामोल्लेख हुआ है।
जयसिहपुरा [दिल्ली]	×	१७७४	२०३×४	
" "	×	१७६३	२०६×५	
" [आगरा]	मुहम्मदसाह	१८०१	२५०×१०	महाराजा ईश्वररीषिह का शासन भी लिखा है
जैसिहपुरा [देहली]	×	१७८१	२५०×१	
मिल्लाय	महाराजा कुशलसिह	१७८५	७७×१२	
टोक	×	१८२५	४७×५	
"	×	१५७६	१७७×१०	
"	×	१८०३	२१५×२७	
ढासा	×	१७५७	२×८	
तत्तकगढ [टोडारायसिह]	महाराजा जगन्नाथ	१६६४	८६×२४	यह गढ जयपुर प्रांत में स्थित है।
"	राजाधिराज राव श्रीरामचन्द्र	१६१२	११३×४	
"	"	"	१६०×१६	
"	सलीम [जहागीर]	१६१०	१६३×१३	
देवपुरी	×	१८२६	२१३×१०	
देहली	×	११८६	१२६×१३	कवि ने 'दिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है।
"	औरगजेव	१७३४	२३६×२६	
दौलतपुर	चावर	१५८४	१७५×२४	
धामपुर	×	"	२२५×६	
नयनपुर	गयासुदीन	१५३३	१६×१७	
नरसिहपुरा	×	×	२१५×१८	सुरत प्रांत में स्थित है
नागपुर	फिरोजशा	१५४१	२३×५	
"	महाराजा त्रिजयसिह	१८२४	४१×२७	
"	×	१५७७	६६×२६	
"	×	१५६७	१३०×२	
नारनोल	×	१६८५	२१८×०८	
नेरसादपत्तन	जालानदीन	१५१८	१३८×१२	

रामपुर	x	१७८४	२२०x१६	
"	x	१७२७	२३६x१	
"	x	x	२२५x६	
राणापुर	हेमकरण	१७६४	८८x२२	
रावरवत्तन	राजाधिराजद्व'गरसिंह	१५१२	१७६x२	
रेणी	x	१८७१	२०२x१६	
रोहनक	अकबर	१६१६	१५६x१५	
"	सिम्बर लोदी	१५७६	८०x१६	
"	अकबर	१६५६	११६x२४	
जवाण		१७५१	८२x१६	पचवारा प्रान्त मे स्थित है
लाभपुर	x	१७१३	२१६x२८	
लालसोऽ	महाराजा गतापसिंह	१८११	८x११	
बहादुरपुर	हुमायुं	१५६४	५६x१५	मेवात मे स्थित है ।
भारापता	गयासुहीन	१५५६	१६५x५	
बुरहानपुर	x	१७३२	२२७x१६	खानदेश मे स्थित है
बंगट	x	x	२६x३	
बृंदावन	रावराजा त्रिप्रणुमिह	१८३७	१६x१६	
"	सूर्यमल	१६०३	६६x६	चौहान वंशजों का राज्य था ।
"	x	१८२१	२४२x६	
बोरगट	x	१८४३	२१२x२	
बोरपुर	महाराजा जगन्नाथ	१६६५	४०x३	
"	x	१५३	२५८x१	
ओपातक	इन्द्रहीन	१५८२	१४६x१०	
ओजानपुर	कण्ठरन्द्र	११२०	१६६x२५	
नराजपुरी	x	१६६६	३०x२७	
नहारनपुर	नाभर	१५८७	१३७x२	
नमानपुर	महाराजा नामसिंह	१६६२	७६x२१	
नगरपत	x	१६६८	५७x१५	बागट देश मे स्थित है
नमूल	राय श्री सुरजन	१६३६	१५x४	

आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

अकलक	१४, ५४, १६४, १६५, २८७	कुमारसेन	१८५
अख्यराज	२१२	कुमुदचन्द्र	२०६, २०७, २२१, २४३
अचलकीर्ति	२०७, २२८	कुशलचन्द्र	२१०
अजित (ब्रह्म)	६८	कुसुमभद्र	१६८
अनतकीर्ति	१८, ३५, २३२, २३६, २४, २६६	कुसललाभगणि	२४७
अभयकीर्ति	८६	केशवदास	२५७
अभयचन्द्र	२०६	केशवसेन	६१
अमरप्रभसूरि	४३	केसर	६६
अमरकीर्ति	१७१, १७३	कौरपाल	२६६
अमरेन्द्रकीर्ति	४१	खडगसेन	२१६
अमृतचन्द्र	१३२, २३७, २५७	खुशालचन्द्र	२५६
असिनगणि	१४२	खेता	४६
आशा १२	२४, ३३, ४४, २७०	गगदेव	१८८
इन्द्रभूति	६०, ११६	गगादास	२१६
उद्वरमेन	१०७, १४६	गाल्हा	१३८
एन्यायकीर्ति	२३०	गुणभीति	८५, १०५, १२५, १२६, १३७, १४६
एतनाहाति	२०२		१५६, १७३, १६०, १६२, २३६
एमतिलक	६४	गुणचन्द्र	४२, ५७, १५५, १५६
एरयाणसागर	४३, ६१	गुणभद्र	१, २६, ६७, ११६, १६५
हृदयशम	४०	गुणभद्रसूरि	८५, १३७, १४६, १५८, १६२, १६३
हान्तिनागर	२१२	गुणाकरसूरि	६४
हामर १	१०, १३	गुणसेन	६६
दिशानिधि	२२०, २५४	गुणसुन्दर	४२
कुल' सुर' १	१३२	गुणरगगणि	२४७
कुल' सुर' २	१६, २०८	गुणज्ञाभगणि	८५
कुल' सुर' ३	१७३	चन्द्रकीर्ति	१५, २८, ३०, ३१, ३४, ४१, ४३, ४६,

देवनागरी	१८३, १६०, १६२	नेमिचन्द्र	२०, १४
दक्षतराम	२५५	नेमीचन्द्र	३, १७, ६२, ६७, १२६, २७८
धनपाल	१३८, १४२, १४६, १४८	नेत्रानन्दि	१३८
धनराज	७	नेमिदत्त (ब्रह्म)	२६, २७, ५६, ८७, ६८
धर्मचन्द्र	२, १५, ३६, ४१, ५३, ५५, ७३, ८८, ६५, ६६, ६६, १०४, ११३, १२५, १२६, १२७, १२८, १३१, १३२, १३८, १४८, १४९, १६२, १६६, १७०, १७४, १७५, १७८, १८०, १८६, १९०, २००	पद्मनाथ	१३, ७६, ८२, १३८, १६८, १८७, १८८, २०१, २३४
धर्मतीति	२०, २१, ३१, ३२, ३३, ८५, १०८, १६२, १६६	पद्मकीर्ति	२७, १२७, १२८
धर्मदाम	१०, २२८	पद्मानन्द (मुनि)	५७
धर्मराजगण	६३	पद्मानाभ	२५०
धर्मप्रणय	११६	पद्मप्रभसूरि	६५
धर्मप्रवर	१७३	पद्मसन	७३, १४२
धर्मराज	३०, ११६, १२६, १३०, १४६, १८३, १८८	परिमल	२७१
धर्मराज	१३६	प्रचण्डकीर्ति	८५
धर्मराज	१८८	प्रभाचन्द्र	२, १५, १६, २०, २८, ५४, ५५, ६३, ६७, ७२, ७३, ७६, ८५, ८७, ८८, ८९, ९४, ९६, ९८, ९९, १०४, १०८, ११३, १२५, १२६, १२७, १२८, १३१, १३२, १३८, १४६, १४७, १४८, १४९, १५४, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १७०, १७३, १७४, १७५, १७७, १७८, १८०, १८६, १९०, २००, २६५, २६७
धर्मराज	२३४	प्रयागदाम	४४
धर्मराज	१३६	पुष्पदत्त	८५, ९०, ९२, १०८, ११०, ११२, १४२, १५४, १६२, १६५, २८७
धर्मराज	१८८	पूरणचन्द्र	४७
धर्मराज	२३४	पूर्यभद्र	१६२, १६३
धर्मराज	१३६, १८७	वनारमीदाम	२०७, २४१, २६६
धर्मराज	६७	वल्गभगणि	१८
धर्मराज	७३	भगवतीदाम	१५४, १५६
धर्मराज	१००, १०१, १०६	भद्रनाथ	६०, १८७
धर्मराज	५, २५, ३५, १५५, २३२		
धर्मराज	६३		

लारू	१०१	विजयसेन	१७३, १८८, २१०
ल ड्यरू	१३	त्रिपुण्ड्र	१८५, १८८
लाभनेरगण	६३	विजयप्रभसूरि	२१०
लोहार्य	७४, ६०, १५६, १८८	विनोदीलाल	२५४
वज्रसूरि	१३६	वीर	१००, २५४
वज्रमन	६५	वीरसेन	२०, ६६, ६०, १६५, १६१
वसुनन्दि	२४, ४०, ६३, २७०	वीरनदि	१६५
ब्रह्म गुलान	२२०, २२७	वीरचन्द्र	२६७
ब्रह्म जिनदास	६, १०, ७१, २०३, २०८, २२४, २६३	वेगो	१०४
ब्रह्मरायमन	२३२, २३६, २४३, २४५, २६६, २७०	वृषभदास	३४
वादिचन्द्र	१५, १६, २४५, २६८	वर्धमानदेव	५४
वादिभूषण	११, १३	शक्तकीर्त्ति	८७
वादीभसिंह	४०	शिवगुप्त	७४
वामाधर	५८, १४२, १४४, १४५	शुभचन्द्र	१, २, १५, २०, २१, २३, २८, ३६, ५४, ५५, ६३, ७२, ७३, ७६, ७७, ८६, ६४, ६६, ६८, ६९, १०८, ११३, १२६, १२७, १२८, १३१, १३८, १४६, १४७, १४८, १४९, १५४, १६२, १६३, १६४, १६७, १६६, १७०, १७५, १७५, १७७, १७८, १८०, १८८, १९०, १९५, २००, २०१, २३२, २३६, २५७, २७०
विजयमागर	१	शोभानाथ	२१२
विजयनदि	६, १४, १८, ३४, ३५, ६७, ७०, १६५	श्रुतकीर्त्ति	१२०, ११५, १६५, १६५
विजयनाथ	२७, ३५, ३८, ३६, ६२, ६८, २०७	श्रुतमागर	१३
विमलसन	३०, ११६, ११६, १३७, १४६, १८३	श्रीशर	१२०, १५०, १५३, १६५, १८३
विजयभूषण	४३	श्रीवरसेन	७३,
विजयेन्द्रसूरि	४६	श्रीचन्द्र	१६४, १६५
विजयसिंह	६७	शेनकीर्त्ति	४१, ४८, ५७, ५८, ११६, १४६,
विजयभूषण	१	शेनेन्द्रकीर्त्ति	११८, २७१
विजयसिंह	१७	शेनसूरि	८६
विमलकीर्त्ति	२३, ३०, ४१, १८३		
विजयसेन	३७		
वर्धमान	२, २५		
वर्धमान	१७०, १७१, १७६		
वर्धमानकीर्त्ति	४, २४, ३५, ११५, २३७		
वर्धमान	६३		

कुल-वंश-जाति आदि की सूची

अग्रवाल-६२, ६७, ११७, १२२, १३०, १५७, १७३, २०२	वैद	३६
गोयल ६०, ८२, ८५, १३५	भौना	२८
गग ११६, १३७, १४६, १५६, १६२	रात्रका	१७०
वासल ६७	लुहाड्या	८७
सिघल ८२, २३३	साह	४, १५, १६, ६३, ६६, १३८, १६३, १
इश्वाकु १०५, १०६, ११४	सठा	४, १६०, २८०
कायस्थ २५०	सोनी	४
कामच ६२, १११	सिंगाणो	४४, ७७
खण्डेलवाल—	सावडा	११३
अजमेरा ४, २८, ५५, ८४, ६४, १२७, १३८, १६३, १७०	गुजर	१३५
काला ८६, २०२, २५६	गोलश्रु गार	७०
कासलावाल ५५, ७३, ६६, २११	चालुम्य	१६१
गगवाल २०, ६६, १५४	चन्द्राटपि गोत्र	६५
गोदीका २३७, २३८, २६४	जैसवाल	६५, १०१, १०५, ११३
गोधा ७२, १२६, १३२, २०२, २३८	तोमर	१७६, १८२
चौधरी १२८	धक्कड वंश	१४७
चादवाड ७६	परमार	४५
छामडा ४, १२६, १६२	पुरवाड	१३८, १८०, १६३, १६६, २६०
टोंग्या ५६, ८८, १७७	पद्मावतीपुरवाल	११८, १८२
नायक ८६	बारहसेनी	२२८
पाटणी २, ४, ४१, ४८, ५३, १४८, २२३	माथुर	१५०
पाठ्या ४, १६६	यादव	१३६
पाठाट्या ६६, १०८	राठौड	१७५
पाटोरी १७५	लमेचू	५८, १०७
पापडीवाल २१६	व्याघ्रवाल	१७, ३४, ६८, १४७
पौवाच ५६ १७४, १७५, २३८	वाढपस	१४६
पु.पु. १७०, १७१, १७२	वोक	६३
पु.पु. ५५, १७५, २३२	श्रीमाल	२१२
पु.पु. ६३	हुचड	१३, ४३, ५७, २४५

